[पिलानी राजस्थानी ग्रन्थमाला का प्रथम ग्रन्थ]

राजस्थानी वार्ता

[राजस्थानी भाषा में लिखित प्राचीन कहानियों का सं

सम्पादक—
सूर्यकरण पारीक, एम० ए०
वाइस-प्रिंसिपल
बिड़ला कालिज, पिलानी।

[श्री बिड़ला कालिज, पिलानी के संरक्षण में प्रकाशि

प्रकाशक—
नवयुग-साहित्य-मन्दिर,
पोस्ट बक्स नं० ७८
दिल्ली।

१६३४

प्रकाशक—
नवयुग-साहित्य-मन्दिर,
पोस्ट बक्स ७८,
दिल्ली

मुद्रक—
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस
दिल्ली

समर्पण

जिनको पूर्व-राजपूत-संस्कृति और गौरव का गर्व है;
जिनकी रुचि और प्रेरणा से ये कहानियाँ लिखी गई हैं;
जो युद्धवीरता, दानवीरता, प्रतिज्ञावीरता, स्वातंत्र्य-
प्रियता, सत्यशीलता, सहिष्णुता, स्वावलंबन-
प्रियता आदि गुणों से परिपूर्ण आदर्श
राजपूत-सभ्यता के प्रति निस्सीम श्रद्धा
का भाव रखते हैं; और जो वर्तमान
काल में उन ओजस्वी गुणों को
भारतीय चरित्र में समन्वित
करने के इच्छुक हैं,
उन
सात्विकशील, उदारमना, सौजन्यसागर, दानवीर,
राजस्थानरत्न,
श्री० सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला
की सेवा में तुच्छ भेंट समर्पित

—सूर्यकरण पारीक

न-सूची

	पृष्ठ

राजस्थानी कहानियों का सम्पादन करने के लिए गतवर्ष मुझे श्री० सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला की ओर से प्रेरणा हुई थी। यद्यपि लगभग पिछले दस वर्षों से राजस्थानी के प्राचीन साहित्य का अनुशीलन करते रहने से मुझे यह धारणा अवश्य होरही थी कि निकट भविष्य में कभी इन कहानियों का आस्वादन पठित जनता को कराने का अवसर मिलेगा, परन्तु यह इच्छा इस रूप में इतनी शीघ्र कार्यान्वित हो सकेगी, ऐसी मुझे आशा न थी। इसका श्रेय उदारमना श्री बिड़लाजी को ही है। श्री बिड़लाजी के सौजन्यपूर्ण हृदय में मैंने प्राचीन राजपूत सभ्यता के प्रति निस्सीम श्रद्धा और सच्चे उत्साह को पाया और यह जान कर आशातीत प्रसन्नता हुई कि ऐसे २ उत्साही एवं लब्धप्रतिष्ठ महाजनों का ध्यान यदि भारतीय इतिहास और साहित्य के इस चिर-उपेक्षित अंग की ओर प्रेरित होता रहा, तो न केवल राजस्थानी और हिन्दी साहित्य का ही उपकार होगा वरन् भारतीय संस्कृति और सभ्यता का एक गौरवपूर्ण पक्ष जनता के समक्ष अपने उज्ज्वलरूप में शीघ्र ही उपस्थित किया जा सकेगा।

सुसंगठित और स्थायीरूप में राजस्थानी साहित्य के पुनरुद्धार, प्रकाशन और संग्रह के लिए श्री बिड़लाजीने इसी वर्ष एक विशेष आयोजना स्थापित की है, जिसको कार्यरूप में परिणत करने के लिए आपने पर्याप्त धन प्रदान कर अपने साहित्य-प्रेम और सात्विकशील उदारता का परिचय दिया है। इस आयोजना के अनुसार श्री बिड़ला कॉलेज, पिलानी की अवधानता में "पिलानी राजस्थानी ग्रंथमाला" प्रकाशित की जायगी। साथ ही पुरानी हस्तलिखित पुस्तकें, जो

इस छोटी-सी पुस्तक के प्राक्कथन के रूप में राजस्थानी सभ्यता और पूर्वसंस्कृति पर लम्बा निबन्ध लिख डालना अयुक्तिसंगत होगा। प्रस्तुत कहानियों का संकलन करते और लिखते समय यदा-कदा दो एक विशेष बातें हमारे ध्यान में आईं, जिनका उल्लेख कर देना यहाँ अनुचित न होगा। संक्षेप में वे बातें ये हैं—

(१) राजपूत सभ्यता और पूर्वसंस्कृति का एक प्रमुख रूप इन कहानियों और इसी प्रकार की अन्य असंख्य आख्यायिकाओं में देखने को मिलता है।

(२) राजस्थान में कहानी कहने और लिखने की एक उत्कृष्ट और अद्वितीय कलात्मक शैली प्राचीन काल से प्रचलित रही है, जो हिन्दी की अपेक्षाकृत अर्वाचीन-कालीन कहानी-कला से सर्वथा भिन्नरूप है।

(३) इन कहानियों में आंशिकरूप में प्रख्यात राजपूत कुलों का इतिहास रहता है। अतएव ऐसी कहानियों की खोज करके प्रकाशन करने से न केवल राजस्थानी और हिन्दी के मनोरंजक साहित्य की श्रीवृद्धि होने की ही सम्भावना की जा सकती है, वरन् बहुत सी इतिहास-सामग्री भी हस्तगत हो सकती है।

पहली बात पर विचार करने पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या वास्तव में राजपूत सभ्यता और संस्कृति का कोई अपना निजी रूप और अस्तित्व है, जिसकी खोज करने से भारतीय इतिहास और साहित्य को लाभ पहुँच सके। यह एक जटिल प्रश्न है, जिसका — राजस्थानी साहित्य और इतिहास की वर्त्तमान तिमिराच्छन्न दशा में उत्तर देना न तो पूर्णतया संभव ही है और यदि आंशिक रूप में दिया भी जाय तो लोग उसके तथ्य को स्वीकार करने को तैयार न होंगे। हाँ, इस समय इतना कह देना पर्याप्त होगा कि राजस्थानी जीवन-चर्या, विशिष्ट व्यवहार, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यक्तिगत सैद्धान्तिकता में बहुत

अलौकिक वीरता अवश्य दिखला जाता है, परन्तु आधुनिक सभ्यता के नीतिज्ञ उस धूम्रकेतु की सी चमत्कारिणी परन्तु क्षणस्थायी वीरता को मूर्खता अथवा अपरिणामदर्शी दुस्साहस ही कहेंगे। राजपूत वीर पिस जाता है, अपने अस्तित्व को मिटा देता है, परन्तु अपने सैद्धान्तिक सत्य को जीते जी रक्षा करने की भरसक चेष्टा करता है। यह एक विलक्षणता उसके चरित्र में पाई जाती है जो संसार की बहुत कम शूरवीर जातियों में मिलती है।

(३) कठोर क्लिष्टताओं से घिरे हुए स्वावलंबनपूर्ण जीवन से राजपूत को विशेष प्रीति होती है, क्योंकि यह गुणउसे अपनी प्राणों से प्रिय स्वाधीनता की रक्षा करने के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। मुगल साम्राज्य के स्थापित होने से पहले के राजस्थानी इतिहास पर दृष्टि डालो जाय तो इस बात के असंख्य उदाहरण मिलेंगे कि किस प्रकार स्वाधीनता-प्रिय इस जाति ने उत्तरी और मध्यभारत को उर्वरा भूमि को छोड़कर जलहीन मरुस्थल में स्वाधीनतापूर्वक अपने छोटे२ राज्य स्थापित किये थे। वीरमदे सोनगरा, महाराणा प्रताप इत्यादि वीरों के आख्यान इसी स्वातंत्र्यप्रियता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

(४) इसके अतिरिक्त पहाड़ के समान अचल संयमशीलता, सहिष्णुता और अटल धैर्य्य, अनुपम निर्भीकता, वैर-प्रतिशोध की तीव्र भावना, आत्मगौरव की अविरत रक्षा, प्रणत-पालन का विरद, दानवीरता और आदर्श शूरवीरता के अनेक ऐसे गुण हैं जो राजपूत चरित्र के विशेष लक्षण कहे जा सकते हैं और जो किसी न किसी रूप में इन कहानियों में व्यक्त हुए हैं। इन सब में भी आदर्श ख्याति प्राप्त करने की कामना की ओर राजपूत की सारी शक्तियों का झुकाव अधिक देखा जाता है। अमर कीर्त्ति प्राप्त करने की लालसा से न जाने कितने अवसरों पर राजपूतों के हाथ से

ऐसे कार्य करवा दिये हैं जिनकी ऐहिक सम्भावना पर विश्वास करना कठिन हो जाता है। राजपूत में स्पर्धा का गुण भी विशेष मात्रा में होता है। मेवाड़ के इतिहास में शक्तावतों और चूंडावतों का शूरवीरता का आदर्श स्थापित करने की दौड़ में पहले नम्बर आने की चेष्टा करना, एक ही वृत्तान्त नहीं है वरन् हजारों ऐसे प्रमाणों से राजस्थान का इतिहास भरा पड़ा है। राजपूत आदर्श-त्याग करने में अपनी बराबरी नहीं रखता। मेवाड़ के भीष्म राव चूँडाजी, कुंवर भीमसिंह, राठौड़ वीर दुर्गादास— ये तो कुछ एक प्रातः स्मरणीय नाम हैं। सारांश, राजपूत वीरता को भले ही कोई साम्राज्यवादी नीतिज्ञ दुस्साहस अथवा शक्ति का अपव्यय कहकर ...ारे, परन्तु संसार का मस्तक तो श्रद्धा की भावना से सदा ऐसे ही ...रों की स्मृति में झुकता रहा है और रहेगा। आजीवन युद्ध करने के ...ह हृदय में अदमनीय लालसा रखना, सिर कट जाने पर भी युद्ध ...जाना, निरस्त्र होकर शेरों से मल्ल-युद्ध करना और आत्मगौरव की ...न से प्रेरित होकर अपने हाथ से अपना मस्तक काट कर देना, ये ...व कपोल-कल्पनाएँ नहीं वरन् वास्तविक ऐतिहासिक तथ्य हैं, ...कर दिखाना संसार भर में यदि किसी जाति के लिए संभव है ...ै राजपूत जाति।

...ाम और ओजस्वी गुणों के साथ ही राजपूत चरित्र की पूर्णता ...एक कोमल और स्निग्ध भाग भी है जिसमें स्वर्गीय सौन्दर्य ...खने को मिलती है। वही रणभट राजपूत अप्रतिम प्रेमी, ...त्तम शासक और उच्चकोटि का कोविद, विद्वान और कवि भी ...ा है। महाराणा अमरसिंह, महाराणा राजसिंह, महाराजा ...सवाई जयसिंह, राठौड़ महाराज पृथ्वीराज—ये कुछ

परन्तु विधि-विधान का वैचित्र्य ऐसा है कि पूर्ण-चन्द्र में भी कलंक होता ही है। पूर्णता संसार की वस्तु नहीं है। कालांतर में राजपूत-चरित्र की देदीप्यमान गुणावली में भी कलंकस्वरूप कुछ दुर्गुण ऐसे घुस गये जिन्होंने घुन की तरह उसे अंदर ही अंदर खा डाला। मिथ्या गौरव और पारस्परिक फूट ने प्रायः सभी प्रतिष्ठित राजकुलों का ह्रास कर दिया है; एक जयचंद की ही कौनसी बात है। प्रत्येक कुल में समय समय पर पारस्परिक वैमनस्य से ऐसी परिस्थितियाँ पैदा होगई हैं कि बाध्य होकर उत्तम से उत्तम वीर को दुष्प्रवृत्ति और ईर्षा का दास होकर अपने हाथ से अपने ही कुल-गौरव पर कुठाराघात करना पड़ा है। १२ वर्ष तक वीरता के साथ एक साम्राज्य की शक्ति के सामने जालौर गढ़ की रक्षाकर चुकने पर, उस अभूतपूर्व विजय का मज़ा एक क्षुद्रातिक्षुद्र नहीं सी व्यंग्योक्ति के कारण किरकिरा होजाता है। गढ़ का वीर रक्षक दहिया सरदार ही सोनगरा कुल का भक्षक होजाता है।

दुर्व्यसनों ने भी राजपूत चरित्र का कम ह्रास नहीं किया है। जो मदिरा युद्धस्थल में उत्तेजित होने के लिए योद्धाओं द्वारा पान की जाती थी, वही शान्ति के समय में अच्छे २ राजपूत सरदारों के नाश का प्रमुख कारण हो गई। गोले, बारूद और तलवार की चोट से न परास्त होने वाली वीर जाति मदिरा के प्रवाह में बह गई। मदिरा ही क्यों, उसके साथ दुनिया भर के सब मादक पदार्थ, अवसर हो या अनवसर, सेवन किये जाने लगे। युद्ध को छोड़, विवाह-शादी में अफीम, तिजारा, कसूँभा (गला हुआ पेय अफीम) की नदियाँ बहने लगी और जब इन ज़हरों से काम न चला तो विषैले साँपों से कटवा कर ज़हर का आनन्द लिया जाने लगा। होते होते मामला यहाँ तक पहुँचा कि जहाँ धर्मवीरता, युद्धवीरता, दानवीरता और प्रतिज्ञापालिता के लिए वीरों के गौरवपूर्ण आख्यान

स्मरण किये जाते थे वहाँ मदिरावीर, अफीमवीर ट
कवियों के मुख पर शोभा देने लगी। "अमल की नो
बड़ी लम्बी, भावपूर्ण कविता मैंने एक राजस्थानी कवि
मुख से सुनी थी, जिसमें मारवाड़ के एक प्रतिष्ठित स
इसी बात में की गई थी कि किस प्रकार एक अफीम-वी
वे मणों-भर अफीम खा गये। इतनी उच्च कोटि को हो
द परिणाम होगा, किसी को स्वप्न में भी खाना न थ
र्घिविधान की बड़ी विषमता है!!

बहु-विवाह की प्रथा ने भी इस वीर जाति का अपकार
माना कि उस कठिन काल में क्षत्रिय कुलललनाओं के
रक्षा करने के लिए कभी कभी किसी समर्थ राजपूत राजा को
अधिक ब्याह करने पड़ते थे और दूसरा यह भी कारण हो सकत
कन्या के पिता की ओर से प्रस्तावरूप में नारियल आजाने पर अ
धनी कोई भी क्षत्रिय उसे अस्वीकार नहीं कर सकता था, परन्तु ये
तो केवल अपवाद मात्र हैं। जानबूझ कर विषय-भोग की कामन
पचासों स्त्रियों से रातदिन घिरे रहना, कहाँ की शूरवीरता है। परमा
की दी हुई सत्प्रयोज्य शक्ति का ऐसा दुरुपयोग भी इस जाति के ह्रास
एक कारण रहा है। अस्तु।

(२) अपने प्रकृत विषय, राजस्थानी कहानी पर भी दो शब्द कह
ना उचित होगा। हिन्दीसाहित्य के वर्त्तमान काल में कहानी-कला
बड़ा विकास हो रहा है और कहानी की लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ती
है। हिन्दी में कहानी की शुरुआत बंगला की गल्पों के अनुकरण
परन्तु राजस्थानी का कहानी-साहित्य उसकी हिन्दी
में बहुत प्राचीन

चारणों और भाट कवियों का काम रहा है। इसके रूप की व्यापकता को देखते हुए कहना पड़ता है कि राजस्थानी का अधिकांश गद्य-साहित्य, यहां तक कि ऐतिहासिक सामग्री भी कहानी के ही रूप में प्रकट हुए हैं। राजस्थान के इतिहास ग्रंथ "ख्यात" कहानियों के संग्रह मात्र हैं।

राजस्थानी कहानियां तीन प्रमुख रूपों में मिलती हैं— (१) केवल गद्यमय रूप में (२) गद्य-पद्य-मिश्रित रूप में और (३) केवल पद्यरूप में। इस जमाने में भी यदि खोज की जाय तो हजारों-ग्रन्थ "वातों" के मिल सकते हैं, जिनमें उपरोक्त तीनों रूपों में कहानियाँ मिलेंगी।। गद्यात्मक कहानियों को 'वात' कहते हैं और पद्यात्मक कहानियों को 'गीत'। दूसरा रूप सदा से लोकप्रिय रहा है और हमारी समझ में वही राजस्थानी कहानी का सर्वोत्तम रूप है। 'कदवाट' की कहानी इन तीनों रूपों में हमें पृथक् २ हस्तलिखित पोथियों में देखने को मिली। इतना तो राजस्थानी कहानियों के रूपात्मक अंग के संबंध में हुवा।

विषय भी कहानियों के अनेक मिलते हैं। प्रमुख विषय तो वीरता ही है, जिस पर अनुमानतः सौ में से पचास कहानियां लिखी मिलती हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त प्रेम, भक्ति, स्वामिभक्ति, प्रजापालन, गोरक्षा, पातिव्रतधर्म और नीति के अनेक अंगों पर भी स्वच्छन्द रूप से कहानियाँ लिखी गई हैं। अपने पहले प्रयास में हमने केवल वीरता के मुख्य विषय को लेकर सात प्रख्यात ऐतिहासिक कहानियों का संकलन किया है। यदि ये राजस्थानी और हिन्दी जनता को रुचिकर हुई तो इतर विषयों, यथा धर्म, नीति आदि पर भी संकलन उपस्थित करेंगे।

सब से विचित्र बात जो राजस्थानी कहानी में देख पड़ती है वह है उसकी शैली की विलक्षण वैयक्तिकता। राजस्थानी कहानी की शैली राजस्थानी ही की है, उसकी समता दूसरी भाषाओं में ढूंढना निरर्थक है।

इस भावना को हम तब तक समझ नहीं सकते जब
स्वयं उस मौलिक रूप को देख न लें। यह गूँगे का गु
है। परन्तु तो भी उस शैली की कुछ विशेषताओं का यहाँ

कहानी का पहला आवश्यक गुण है उसका मनोरंजक
होना। जब तक यह नहीं होता तब तक उसमें हृदय-ग्राहि
आता, जिसके बिना उसका कहानीपना असार्थक रहता है
"वातों" की शैली मनोरंजकता के लिए अद्वितीय है। मनोरंज
प्रसादगुण कूट-कूट कर उनमें भरा रहता है। कहानी कहने
वाले राजस्थानी कवियों को सरस्वती की विशेष कृपा से
अभ्यास और प्रतिभा प्राप्त थी कि सरल से सरल भाषा में उन
स्वाभाविक और लोचभरे भावों को भर देते थे। एक शब्द
वृथा प्रयोग नहीं होने पाता था। भरती के शब्द और भावों को
ढूँढ़ना आकाश-कुसुम की तरह निरर्थक था। इतनी सूत्राकार सूक्ष्म
ए भी कहानी की गति में वह मतवालापन, वह स्फूर्ति औ
जीवता रहती थी कि उसकी समता का उदाहरण ढूँढ़ना कठि
रभंगी और भावुकताद्योतक चमत्कारों की वो राजस्थानी '
तरंगिणी है जिसमें असंख्य भाव-लहरियाँ किलोल और कलरव कर
हुई अपने उद्दिष्ट पथ की ओर प्रवाहित होती रहती है। बीच बीच
अलंकृत भाषा की निराली छटा देखते ही बनती है। दृश्यों की प्रभावो
त्पादकता बढ़ाने के लिए अथवा विशेष वस्तुओं और परिस्थितियों की
पूरी जानकारी कराने के लिए कहानी-लेखक ऐसी मनोरंजक सूक्ष्मता के
साथ उसके अंग प्रत्यंग उधेड़ कर दिखलाता है कि आँखों के सामने
सजीव रूप में उस वस्तु अथवा दृश्य का जीता-जागता चित्र अपने रंग
बिरंगे वैचित्र्य के साथ नाचने लगता है।

देवरै भालरां बाजै छः । जोगेसर संखनाद पूरै छः ।

जैसा कि ऊपर कह आये हैं 'वातों' के रूप में राज
इतिहास लिखा गया है, अतएव इन 'वातों' में ऐति
बहुतायत से मिलती हैं। ख्यात की 'वातों' में और म
बातों में एक स्पष्ट अंतर यह होता है कि इनमें कल्पना की
रहती है । ख्यात की वातों में जहाँ तक होसका है
वंशावलियों के क्रम से प्रत्येक व्यक्ति और वंश के जीवन क
बातों का यथार्थ वर्णन किया है । कहानी की बातों में
ऐतिहासिक कार्य को लेकर और उसमें कल्पना की पुट देक
सामग्री उपस्थित की गई है। अतएव यद्यपि इन कहानियों की
बातें ऐतिहासिक हैं, परन्तु कहानी के समस्त रूप को ऐतिहा
मान लेना भारी भूल होगी। कहानी एक कला है और उसक
उद्देश्य है मनोरंजक रूप में किसी प्रमुख व्यक्ति अथवा घटना के
में आख्यान लिखकर सहृदय जनता का हृदय आकर्षित करना। संस
सभी साहित्यों में जहाँ भी देखा जाय, क्या कहानी, क्या उपन्
नाटक, काव्य—सभी में कल्पनात्मक प्रसंगों द्वारा वास्तविक तथ्यो
एक नवीन रागात्मक रूप दे दिया जाता है। यही बात इन कहानियो
भी समझनी चाहिए। इस दृष्टि से यदि देखा जाय तो जगदेव पँवार
'वात' में यद्यपि जगदेव और सिद्धराव सोलंकी ऐतिहासिक व्यक्ति है
और इतिहास से उनका एकत्रित होना सिद्ध भी होता है और एक जगह
लिखा भी है—"जगदेव पँवार सिद्धराव सोलंखीरो चाकर। कंकाली
देवी ने आपरो सीस दियौ।"—परन्तु तो भी जगदेव का भैरव के गण
को द्वन्द्व-युद्ध में परास्त करना तथा दो बार शीश-दान करने
होना अतिशयोक्तिपूर्ण कल्पना

पर एक ही बार स्वामी की सेवामें शीशदान किया हो। इसी प्रकार वीरमदेव की कहानी में शाहजादी से उसका प्रेम, युद्ध के कारणरूप में बताया जाना और उस प्रेम की पुष्टि के लिए काशी-करौत वाली पूर्वजन्म की अन्तर्कथा का निर्माण,—ये बातें कवि-कल्पना की करामातें हैं। हाँ, ऐतिहासिक दृष्टि से इतना सत्य है कि जालौर के स्वामी सोनगरा राजपूत, राव कान्हड़दे और उसके पुत्र वीरमदेव ने बड़ी वीरता-पूर्वक बादशाह की सेना के विरुद्ध गढ़ की रक्षा की थी। इसी प्रकार अन्य कहानियों में यद्यपि आधारभूत इतिवृत्त (Fact) ऐतिहासिक ही है परन्तु कल्पनाओं का प्रचुर परिमाण में नीर-क्षीर की तरह संमिश्रण होने से यह नहीं कहा जा सकता है कि यहाँ तक तो शुद्ध इतिहास है और इतना अंश काल्पनिक है। कहानी के लिए ऐसा वैज्ञानिक विश्लेषण करने की आवश्यकता भी नहीं है। कहानी तभी तक कहानी रहती है जब तक वह हमारा मनोरंजन करती है, हमें उच्छ्वसित करती है, हमारे हृदय में नई नई भावनाएँ और स्फूर्त्तियों को जागृत करके हमें सजीवित करती है। जब हम कहानी में ऐतिहासिक तथ्य को ढूँढ़ने लग जांयगे उस समय स्वर्ग की छाया की तरह वह विचित्रता विलीन हो जायगी। तथापि इन कहानियों के सम्बन्ध में इतिहास ग्रंथों तथा इतर प्रमाणों से जो कुछ सूचना हमको उपलब्ध हुई है, उसे पाठकों के सुभीते के लिए हमने टिप्पणियों में देदी है।

वर्त्तमान संकलन में आई हुई कहानियाँ लगभग १५० से २०० वर्ष पुरानी हस्तलिखित पोथियों में से चुनकर ली गई हैं। प्रायः सभी कहानियाँ प्राचीन हैं और परम्परा द्वारा राजस्थान में ख्यातिप्राप्त हैं। पोथियों में लिपिबद्ध होने के समय से अनुमानतः १०० वर्ष पुरानी तो ये कहानियाँ अवश्य होनी चाहिएँ। इस अनुमान से इन कहानियों का निर्माण-काल कम से कम २५० वर्ष पूर्व समझना चाहिए।

यद्यपि राजस्थान के भिन्न भिन्न प्रान्तों की बोलचाल
सदा से थोड़ा-बहुत भेद चला आया है और अब भी है,
(जोधपुर) प्रान्त की भाषा गद्य-रचना के लिए आदर्श
मानी जाती रही है। इसका कारण उसका स्वाभाविक
पूर्ण शैली और व्यापक शब्द-शक्ति है। इसी जोधपुरी भाष
की अधिकांश कहानियाँ लिखी हुई हैं।

मूल-पुस्तकों से कहानियों की प्रतिलिपि बनाते समय
सका है, केवल सुधार करने की दृष्टि से भाषा का रूपान्
गया है। जहाँ जहाँ पोथी-लेखक की ग़लती से लिखने की
गई हैं, उनको स्थान स्थान पर ठीक कर दिया गया है।

कहानियों के चुनाव और हस्तलिखित पोथियों की
अपने अभिन्न सहृद्वर श्री० ठाकुर रामसिंह एम० ए० तथा श्री
स्वामी एम० ए० की बहुमूल्य सम्मति और सहायता मिल
मैं उनका आभारी हूँ।

जैसा कि इस वक्तव्य के प्रारंभ में कह चुका
श्री बिड़लाजी की प्रेरणा से इस उद्देश्य को दृष्टि में रख कर
कि राजस्थानी जनता को अपने गौरवपूर्ण साहित्य का अनु
का मौक़ा मिले और हिन्दी जनता को प्राचीन राजस्थानी
आन्तरिक रूप से कुछ जानकारी हो जाय। अतएव इस
आंशिक रूप में भी यदि मैं इस उद्देश्य को पूर्ण करने में स
अपने आप को कृतकृत्य समझूँगा।

पिलाणी, }
१ जनवरी १९३५ }

सूर्यकरण

जगदेव पँवार

मालवौ देस मांहे धार नगरी। तठै पँवार उदयादित राज करै, नै तिणरे राणियां दो। तिण मांहे पटराणी वाघेली। तिणरे कंवर रिणधवल हुवौ। नै दूजी राणी सोलंखणी, तिका दुहागण[1]। तिणरै कँवररो नाम जगदेव दीधो। सांवलै रंग, पिण ज्योतिधारी, नै रिणधवल राजरो धणी। यों करतां बरस १२ मांहे जगदेव हुवौ। तठै राजा उदयादित कामदारांनै कह्यो, सोलंखणीरै बेटो छै कै नहीं। तदै राजा कह्यौ संसार मांहे बेटा समान काई वस्त नहीं। तठै कामदार बोल्या छै, पिण हजूर दरबार कदेई आवै नहीं। तद राजा खवास[2] मेल्हि जगदेवनै तेड़ायो[3]। तदै जगदेव दरबार आयो, तिको वो साटुक[4] रो वागो पहिरणे छै, रुपीया १) री पाघ माथै छै, कानां हाथा मांहे कड़ा, सु इसे सलूकसूं[5] मुजरो कियो। राजा छातीसूं लगाय मिलियो, कनै बैसाणियो नै पोसाप देखिनै कह्यो, बेटा इसा कपड़ा क्यूं। तदै कंवर कह्यो, म्हांरी तपस्या मांहे खोट छै, महाराजरै घरै जनम पायो, पिण महाराजरै माल देस मांहे मोर[6] थोड़ो घलायो, तिणसूं माजीनै गांव

---

१ दुर्भाग्यवाली, जिस स्त्रीको उसके पतिने छोड़ रक्खा हो। २ भांड़, चाकर। ३ बुलवाया। ४ एक मोटा सस्ता कपड़ा। ५ ढंग। ६ आग।

१ आप दीधो छे। जिणरो हासल माफक[1] हीं ज आवे छे। नै माँई जीरें (सौतेली मा के) हाथ राजरो काम छे। जिणसूं गांव नावें। मोटी, हासल छोटो दीधो छै और रांणि परणें दासदासी नै रोजगार रथ नै बहलिया में समाचार छै, और सगला एकै गांवरे हासलमें जिमे छे। तरें कपड़ा रो हासल[2] सारू छै। राजा इसो सांभलिनै कह्यौ, रुपया २) हमेसा थांरे, रुपयो १) थांरे धालीरो नै रुपया १७) हाथ-खरचनै दीयां जावो। राजा कामदारांनै कह्यौ, हमेसां रुपया २) दीयां जाज्यो। तरें जगदेव अरज कीधी, महाराज तो बगसीस कीधी नै मैं पाई, पिण श्री मांईजी[3] घणी मया[4] फुरमावे छै, जिमे नहीं। ज्युं लिखियो[5] छै त्युं होसी। तरें राजा खजानची खनैसूं थैली १ मंगाय दीधी नै कह्यौ, कपड़ा पोसाख आछी बणावो नै गाढ़ा सलूक माहे रहो। तद कंवरनें सीख दीधी। कंवर आपरी मांनै आणि थैली दीधी नै सगली हकीकत कही। तिसै केइक बाघेलीरा आदमी बैठा था, देखै था, बात सुणै था। त्यां जाय नै कह्यौ, आज जगदेवसूं महाराजा घणी मया कीधी नै रोजीनै रुपया २) दिराया नै थैली १ दीधी। आ बात सुण पगांरी झाल माथै गई[6]। तरें रांणी खोजांनै[7] मेल्हि राजानै मांहे बुलायो, मुजरो कियो, सिंहासण विराजिया। तरें रांणी आंख्यां लाल करि कह्यौ, आज दुहागणरा बेटानै फासूं दीधो। तरें राजा

---

१ ठीक ठीक ही, अर्थात् थोड़ा। २ पैदा। ३ सौतेली माताजी। ४ कृपा। ५ विधाता द्वारा भाग्य में लिखा है। ६ पगां री झाल माथे गई (मुहा०)=क्रोध की ज्वाला पैरों से सिरतक दौड़ गई, अत्यन्त क्रुद्ध। ७ दूतों को।

कह्यौ, सोळ् खणी देहागण छै, पिण बैठो तो न छै। रिणधवळ् तो पाटवी टीकायत छै, पिण जगदेव माहरी निजर आछो आयो, सखरो[१] रजपूत होसी। तरै वाघेली कह्यो, ऊ दई-मारयो कालियो डील मांहि छै, जिणरै करमांमांहि[२] काळा अख्यर छै, थैंली डरी मंगावो। तरै राजा कह्यौ, ओ तो गुनो म्हांनै बगसो। अबै थांनै पूछि नै क्यूं देस्यां।

तिसै मांडवगढ (मांडू) राजा, तिणरी चाकरी उदियादित करै छे। त्यांरा कागद बुलावणरा उतावळ्रा आया। तरै राजा तो उलग[३] नै चढ्या, कंवर दोनूं लारै राख्या। अबै जगदेवरी ऊठि[४] बुलावणरी खबरी[५] दीधी। तिणसूं लोक माहे बास[६] फूटी, नै दरबार तो रिणधवळ् करै। जगदेव तो घर माहे रहास[७] छै तठै हीज रहै। तिसै बरस २ बीता। तठै गौड़ देसरो गंभीर राजा गोड़। तिण रा नाळे र[८] जगदेवनै आयो। हाथी १ घोड़ा ६ सोना रूपासूं मढिया नाळे र देनै प्रोहित कामदार धार मेल्हिया। तिके धार आया। तद सगळांनै खबर हुई, गोड़ांरा नाळे र आया। तदि डेरो दिरायो वलरो[९] चारारो जावतो करायो। अबै प्रोहित व्यास कांमदार मिलि पूछियो, नाळे र वंदावो[१०]। तरै गोड़ांरो प्रोहित बोलियो, म्हांनै माहरै राजा जगदेव कंवरनै नाळे र देणो कह्यो छै। तिको कंवर जगदेवने पाट बैसाणो ज्यूं तिलक करां अर नाळे र द्यां। तरै इतरो सांभलि

१ अच्छा। २ कर्म में, भाग्य में। ३ विदेश में सेवार्थ। ४ की ओर। ५ मनाही। ६ खबर फैल गई। ७ रहवास, रहने का स्थान। ८ विवाह के प्रस्ताव स्वरूप नारियल। ९ भोजन। १० स्वीकार करो, ग्रहण करो।

अबोला[1] रह्या । परा ऊठया[2] । मांहे वाघेलीरो डर घणो । सबला[3] जाय वाघेलीनें कह्यौ, नालेर तो जगदेवनें कहे छै । तरै वाघेली बोली नैं रीस कीधी नै कह्यो दई-मारयांका कान फूटा, म्हारा बेटानै नालेर आया छैं, जावो उण दई-मारयांनै कहे तोही रिणधवलनै हरि भांति करि दिरावज्यो जी, नहीं तर थांहरी सो चाकरी करूंली । तरै प्रोहित कामदारां गोड़ प्रोहित कामदारांने कै रुपया देनै राजी कीधा नैं कह्यो, जगदेव तो दुहागणरो छै, जिणरी मां पटराणी निजरे नालेर शो। तरैं पईसांरा मारया रिणधवलनै नालेर बंदाया, तिलक कीयो । नोयन थानी । तरैं प्रोहित कह्यौ,एक बेला जगदेव म्हांनै ओरन्धा देखालो । तरै वाघेलीसूं मालुम करी । जगदेवनें ल्याया । प्रोहित मंत्री दीठो तरै माथां धूणीयो[4] ज्योतिधारी कलाधारी उजोतवंत[5] दीसै छै, पिण तेज है जिणसूं हीज है । अनै सोख मांगी । तरै सिरपाव दे नै विदा कीया । तिके आपरे गोडावाटी आया । राजा गंभीरसूं मिलिया । नालेर रिणधवल नै दीधो । रामरो धणी छै पिण ज्योति कांति छः, तिनो जगदेवरी होड न करै । गौहणो पीसाण नहीं तो पिण रिणधवल सूरज आगे चंद्रमा दीसै ज्यूं दीसे थो । पिण लिवसूं[6] ओर नहीं । तरै राजा कह्यो, रुता चूका, दीधो बिणदीधो[7] हुवे नहीं नै दूजो बात कांई नहीं । तरै जोसी तेड़िनै लगन लिखाय धार मेलियो नै दूजो कामदारांनै कागद दीधो, तिणरे लिख्यो, जगदेवजीने आंन सांथे ल्यावज्यो नै उण

---

१ चुपचाप । २ उठ खड़े हुए । ३ सभी । ४ धुना, सिर हिलाया । ५ आत्मस्वरूपवान । ६ रिवाज के बेल । ७ दिया हुआ बिना दिया हुआ नहीं हो सकता ।

विगर आया तो साहो होसी नहीं। आदमी लगन लेनै धार आया।
कागद कामदारांरै हाथ दीधा। कागद वांचि मांहि बाघेलीनै मेल्या।
तरै बाघेली कह्यो दई-मारया कालियानै ही ले जावो। जांनरी
तयारी कीधी। तरै जगदेवनै कहायो, कंवरजी जाननै तयारी
कीज्यो। जगदेव कहायो, गैणो, पोसाख, घोड़ो, राजारो लाजमा नहीं
नै पालो[1] तो इसे लवेस[2] (लिबास) चालणी आवै नहीं। तरै कोठार
मांहिसूं कड़ा, मोती कंठी, दुगदुगी[3] जनेऊ, मोतियांरी माला
दे मेल्या नै चाकर घणा ही छै। इसी भांति जलूस करि बीजारा तो
क्यू कहणो नहीं, असवार हजार २ सूं चढ़िया, तिका चालतां-चालतां
टोडै टूंक महिलाण[4] हुवा।

टूंक चावड़ो राव राज नै कंवर बीज नांमै राज करै छै।
तिको राजाराज तो आख्यां संजम[5] छै, पिण हीयारा नेत्र
खुल्या छै। आख्यां देखतांसूं घणो सूझै[6]। तिणरे बेटी एक नाम
वीरमती बडकंवार[7] छै। तिणरो साहो करणनै सगो सोमता था।
तिसैं जान आई। तिसैं राजा राजजी कंवर बीजनै कह्यो, जगदेव
कंवर छै तिको निपट सखरो। बीज हुकम प्रमांण कियो, देस रजपूत
छै, तिणनै काल्हे फेरा दिरावस्यां। जान मांहे कंवर बीजजी जुहार
करणनै आया नै कह्यो, विहाणै[8] गोठ आरोगनै चढिज्यो। घणा हठ-
सूं गोठ मानी। कोट आय जोसी तेड़िनै लगन बूझियो। तरै प्रभाते

१ पैदल। २ लिबास, पहनावा। ३ गहना विशेष। ४ पड़ाव,
ठहराव। ५ अंधा। ६ चर्मचक्षुओं की अपेक्षा आन्तरिक चक्षु से अधिक
दिखाई देता था। ७ ज्येष्ठ पुत्री। ८ सवेरे।

गोधूलकरो लगन छै। सगली सजाई कीधी। बीजे दिन वीरमती-
ने पीठी[1] कराई, लेहटियो विनायक[2] थाप्यो। तीजे पोर गोठ जीमण-
नें आया। आथमण[3] सूधा जीम्या ने चलू भरने उठे तिसे लगन वेला
हुई ने प्रोहित कामदारांने कह्यो, कंवर जगदेवजीने म्हारी बेटी
धी। तरै नालेर घोड़ा ४ सूं मलायो[4]। ने कह्यो तोरण बांदि[5]
वरी पधारो। कामदारां ही दीठो वडो काम हुवो। कोई थेट गोडरि
ां झांटो[6] उठलो, आरे करि[7] तोरण बांदि चंवरी मांय सिधाया।
ूलकियांरा फेरा लीया। भात हुवा[8]। हाथी १, घोड़ा २५, दोवड़ी
[9] दीधी, दासी ६ दीधी। प्रभात हुवां सीख मांगी। साई-बंध्यो
[10]। तरै चावड़ी तो पीहर हीज रही। कह्यो, पाछा फिरतां
ले जावस्यां ने जांन चढ़ी। तिका गोड़ांरि जगदेव परएयारी
हुई। राजा गंभीर जगदेवनै देखि प्रोहित विठागरां[11]
ी वेराजी हुवो, पिण लेख-बंधी बात। अब गोड़ भात
दोवड़ी तात दीधो, घोड़ा २५ हाथी १ दीधो, दासी ११ दीनी।
ज दीनी। तिके टोडे आया। जरै चावड़ीने रथमें बैसाण
ी। नगर आयां बाघेलीनै जगदेव परणियारी खबर हुई
इ घणो दुख पायो। ते कह्यो, इण दईमारया कालियाने
वजी बेटी दे, तिको कासूं देखने दे छे। पछे सामेलो[11]

न। २ गणपतिकी मूर्त्ति। ३ संध्या तक। ४ पकड़ाया।
निकी प्रथा करके। ६ झगड़ा खड़ा होता। ७ ऐसा जानकर।
। ९ दुहरे दहेज। १० लग्नके अनुसार काम। ११ धोखे-
गवानी, स्वागत, सामनेसे लेना।

कीधो। तठै गोड़ नैं चावड़ी सासुवांरै पगे लागी। देवतांरी जात[1] कीधी। मास पछै गोड़-चावड़ा आया। आपरी बेटीनैं ले गया। पीहर गई तदै दायजो दीधो थो, जितरो चावड़ी रै साथै मिलियो थो, तिको जगदेव राख्यो।

हिवै वरस १८ मांहे जगदेव हुवो। भठै राजा उदयादित्त चलगासूं[2] पधारिया। कँवर रिणधवल मोटी असवारी कर साम्हो गयो। पगे लागो। मूंता[3] सेठ पगे लागा। तिणां मांहे सिगलांरा मोला[4]-मुजरा लीया, पिण जगदेव मुजरै नायो। तिसैं घणा उछाह होतां राजा सिंहासण दरीखानै[5] विराजिया नैं मुहतासूं फुरमायो, जगदेव कँवर कठै छै। तरै कह्यो, सोलंखणीजीरैं हजूर होसी। तद खवास मेलि तेड़ायो। तरै जगदेव सादी पोसाख पहिरियां पगे लागो। तरै राजा उठि छातीसूं भिड़ि मिलियो, माथै हाथ दीया, निपट नैड़ो बैसाणियो नैं राजा पूछियो, कँवर, उणहीज पोसाख छो। तरै कँवर अरज कीधी, महाराजा, आप असवार हुवां पछै रोजीनारो थाली नैं हाथ-खरचरो रुपया दोय फुरमाया चढिया[6] था, तिके मांहे जी कबूलिया नहीं, तिणरै हुकम बिनां सांनसमो न दीया। आपसूं मालूम हीज छै। हासल पैदास बिनां ख्वाजमा कुंकर[7] हुवै। जदि राजा कह्यो, मोती कंठसरी,[8] दुगदुगी, जनेऊ, हथ-सांकलां, सिरपेच, कड़ीयां री तरवार, ढाल, कटारो, खंजर, तरगस, बांण, सर्व

---

१ देवयात्रा। २ परदेश की सेवा। ३ मुहता, मन्त्री। ४ मिलना-भेंटना, अभिवादन-स्वागत। ५ दरबार में। ६ चढ़े हुए थे, बाकी थे। ७ क्योंकर। ८ कंठमाला।

पगसीया। तद जगदेव मुजरो करि-करि लीधा। पिण दोनूं हाथ जोड़ि अर्ज कीवी. महाराजा, आप इनायत कीयी तिके पाया, पिण माईजं म्हांसू घणी महरवानी फुरमावे छै ने आप वाघेलीजीरै महल पधारिया तरै सगली टूमां (गहणो) मंगवाणी पड़सी, तिणसूं म्हारी रहवास ले गयां पछै मेलस्यूं नहीं, तिणसूं अे खालसै रैहणरो हुकम हुवै। तरै राजा कह्यौ. वाघेली कहै पिण म्हारे तो रिणधवल ने थे सारिखा कंवर छो। ने वलै तोनै कुं सरसो[1] गिणती मांहे गिणूं छूं। मैं म्हारो माल दीयो छै ने थारी असवारीरै वास्ते म्हारी असवारी-रो खासो[2] घोड़ो दीधो। तरै कंवर मुजरो कीधो ने राजा सीख दीधी ने कह्यो, सामरे दरबार वेगा आवज्यो। इसौ कहि सीख दीवी। घोड़ो खालसारी पायगारी[3] जायगा राख्यो। सोलंखणीसूं मुजरो कियो। इनायत वस्तां थी तिको देखाई। तरै मा कह्यौ, बेटा, वाघेली आगे रह्यां हीज भरोसो। तिसै खोजां[4] नाजरां[5] दोड़ि वाघेलीसू कह्यो, आज महाराजा खनै थो जितरो सगलो जगदेवने दीधो और असवारी रो पाटवी घोड़ौ बगसियो। इतरो सुणनसमो हिया मांहि लाय[6] लागी ने कह्यौ, महाराजा जनाने पधारीजे, रसोड़ो तयार हुवो छै, ने महारानी वाघेलीजी दांतण कियां बिना विराजिया छे। पहिली महाराजारी सवारीरो दरसण कर आरोगं था ने आज धन दिन धन घड़ी पोहर महाराज पधारीया तिको दीदार[7] करि दांतण फाड़सी। इतरो राजा सांभलि दरबार वहोड़ि[8] मांहे पधारिया।

---

१ सदृश। २ खास। ३ पायगाह, घोड़ों का अस्तबल। ४ दूतों ने। ५ नपुंसक कंचुकियों ने। ६ ज्वाला, अग्नि। ७ दर्शन। ८ समाप्त करके।

जरो करि निछरावल हुई। सिंघासण विराजिया। तिसै वाघेली
ह्यो—उवारी सूरति ऊपरां घोली जावो[1], पुखता हुवा[2], तिणसूं
हणांरो मोह छोडियो, पिण देसोत[3] कदेही पुखता नहीं। राजा
ह्यो—गहणा तो था, पिण कंवर जगदेवनै अडोलो[4] दीठो जद
हणा बगसिया। इनरो सुणतसमो राणी बोली, ऊंण कालूया
ई-मारयाकै यूंहीज चण आई छै, गैहणा तो दोवड़ा[5] था, जांन
वड़तां कोठारसूं दिया था। सरव गैहणा तोडे चावड़ां पिण
दीधा। सो महाराजा बिणनैं समुधा[6] दीधा नै म्हारा बेटानै एक
ही रीझ[7] दीधी नहीं, तिको आधा गहणा मंगवाय रिणधवलनैं
बगसो। तरै राजा कह्यो, रीझ गरीब दे तिकोई मंगावै नहीं, तो
पृथ्वीरा धणी राजा। और कंवर दोनूं सारीखा छै, मंगावणी नावै।
तरै राणी कह्यो कड़ियांरी तरवार, पाटवी घोड़ो बडा कंवर पाटवी
रारै, तिकै मंगायां दोलण फाड़स्यूं। राजा दीठो, बैरांरा हठ
भूंडा[8]। तदि नाजरनें मेलि कहायो, बेटा, हनै निपट सखरी चीजी
देस्यूं, तरवार दोधी तिका उरी मेलज्यो[9] नै मांनैं चैन चाहै तो इण
वारो हठ मना करिज्यो। नाजर आयर कंवर सूं अरज कीधी।
जरै जगदेव तामस[10] रायनैं दोधी। जगदेव कह्यो, जो लड़ां-भिड़ां
तो कपूत कहावां छां, नै मूंछा आई। रजपूतरा बेटा छां। कठैंक

---

१ न्यौछावर होती हूँ। २ विधन्ध, प्रतिष्ठित होने पर। ३ देशपति, राजा। ४ आभूषण रहित। ५ दुहरे। ६ उसको सभी। ७ प्रसन्नता से दिया हुआ पुरस्कार। ८ औरतों का हठ बुरा होता है। ९ वापिस भेज देना। १० क्रोध करके।

जाय मालरी कमावणी[1]। यूं कहौ छै—

दूहा

चंगां माणसां[2] पर रहां ए तीन अवगुण होय।
करजा काढ़ै, रिण[3] करै, नांम न जांणै कोय ॥
जोबन दाम[4] न भेळीया[5] ज्यां परंभो जाय।
गमीया[6] दैही दीहड़ा[7] मिनख-जमारै[8] माय ॥

तिणसूं म्हारो हुकम हो तो हूं काम परखास्यां[9]। पायगासूं घोड़ो मंगायो खजानासूं आपरोम मोहरां थैली दो मोहरांरी लीवी। नै हथियार बांधि मांसूं मुजरो करि गांम मांहे ज चढ़िया। तिकै पसरे मोहे आया, बाग मांहे डेरो दीयो। घोड़ो ऊभो चोकड़ो[10] चाबे छै। कंवर चमेली बिड़ी[11] मांहे ओणपोम बिछाय बैठा छै। टाळ ढाळी आगे दे झोला[12] दे छै। सहिर मांहे, जाणे छै, दिन आथमिया[13] जास्यां। पछे दिन दो चार रहि आघा सिधावस्यां[14]। तिसे पातसाही बीरमनी सहेल्यांरा साथसूं चकडोल[15] बैसने आप रो बाग छै जठे आई। परणीयांनै बरस ७ हुआ छै। तिको बाग मांहे बंगलो छै जठे बिछायत हुई। आप बैठी छै। बाग मांहे माळी धुरा-धुर[16] मरद राखियो न छै। पोळिया खोजा पोळी बैठा छै। तिसे

---

१ जीविकोपार्जन करना। २ चंगे, स्वस्थ पुरुष के। ३ ऋण, कर्जा। ४ द्रव्य, धन। ५ इकट्ठा किया। ६ बिताये। ७ दिन। ८ जीवन। ९ कर्म-परीक्षा करूँ। १० घोड़े के मुँह में लगाम की कड़ियाँ। ११ चमेली के वृक्ष-कुंज में। १२ झूल रही है। १३ अस्त होने पर। १४ चला जाऊँगा। १५ पालकी। १६ तक भी।

सी फूल लेती-लेती असवार दीठो। घोड़ो रुपया हजार दो-तीन रे
लरो दीसे छ। पिलांणरी साजत ऊंची दीठी। तरै छानैछै[1] विड़ी
हि दीठा, भाइजीरे बररी सबी[2] दीसे छै। नाकरी डांडी[3],
ांख्यां, निलाड़[4] डील रोमछर[5] देखि सही कंवरजी ही छै। तरै
ड़ुन आय कह्यो, बाईजी, बधाई पावूं, बाईजी सिलामत उगणीस
स्वा[6] तो श्री श्रीमहाराज कुंवरजी छै। तरै चावड़ी कह्यो, पर-
रसरा मुंह देखूं नहीं। पिण तूं डाही[7] समझावार छै, तिणसूं आवं
ूं। वीड़ारी उट[8] देनै देखै तो कंवरजी ही छै। तदि चावड़ी जाय
ुजरो करि हाथ जोड़नै कह्या, धन दिन धन घड़ी धन वेला, भलांही
ी सूरजजी उगो, आज श्री प्रीतमजी रो दरसण पायो, श्री कंवर
ती पधारिया। पिण साथ कठै। इकेला हीज पधारिया, तिणरो
विचार कासूं। तरै कंवर सगली हकीकत कही नै हूं चाकरी करण-
ै नीकलियो छूं। कोई मोटो राजा, तिणरी उलग[9] करण सारू
नेकलियो छूं। थे कठेही बात प्रगट करो मती। तिसै दासी दोड़ि
दरबार जाय बधाई दीधी, जंवाई पधार्‌या छै। सैंदाना[10] सरू हुवा,
बधाई बांटी, बधावा बांटण लागा। कंवर पाला हीज आय मिलिया।
चावड़ी दरबार आई। कंवर बीज जगदेवनै ले दरबार पधारिया।
राजाजीसूं जुहार कीयो। दिन पांच रहि सीख मांगी। तरै राजा कह्यो
ओ दरबार रावलो[11] हीज छै, अठै उठै एकही ज विचार छै। राज

---

१ छिप छुप कर। २ आकृति, मूर्त्ति। ३ नाक की डंडी। ४ ललाट।
५ शरीर की रोमावलि। ६ बीस में से उन्नीसवां अंश, सचमुच। ७ चतुर।
८ ओट। ९ सेवा। १० स्वागत के बाद्य। ११ आपका ही।

स्यो तो कोस ३० ऊपरां छै, डूंगर दोला[1] फिरनै मिथारस्यो।
जगदेवजी कह्यो, इतरी अँवलाई[2] खाओ सो घोड़ासूं वैर नैं छै।
कह्यो, पाथरी राह नाहरी-नाहर विचे रहै छै, तिणां गांव ५–७
ड़ कीधा छै। के देवंसी नाहर छै, नगारा ढोल देनै राजा सिकार
, नाहर-नाहरीरो एक रूं वढीयो नहीं[3]। तिणरा डरसू
ग बंद हुवो छै। तिणनै बरस ८–९ हुया छै। घास ऊभना दोय
रह्या छै। बड़ी झंगी[4] मच गई छै, तिणसूं मारग कोस २२ री
लाई खायनै लोक जाये छै। तिसूं निरभै राह पधारोजै।
देवजी कंवर बीजजीसूं जुहार करि सीख देनै पाथरे मारग
ड़िया[5]। हठ तो बीजजी घणो ही कीधो, पिण पाथरे राह चाल्या
कह्यो, गंडक-गंडकड़ीरा[6] डरतां अंवलाई न्यावणी आवे नहीं।
ं थेहूं[7] सजोड़े[8] निरभै थकां घोड़ा खड़ियां जाये छै। तरै
वड़ीनै कह्यो, डावी जीमणी[9] घास मांहे निजर राखनां जावो।
करतां कोस ६ पोंहच्या। आगे मारगरै सैं-विचै[10] नाहरी बैठी छै।
छै पांवडा १०० ऊपरां नाहर बैठ्यो छै, तिको चावड़ीयै निजर
यो। तरै कह्यो, महाराज कंवरजी,सावज[11] बैठ्यो छै। तरै जगदेवजी
ुम[12] काढि चिलै आंणी[13] नै कह्यो, नाहरी, तूं रांडरी जात छै,

---

१ पर्वत के चारों ओर। २ घूम, चक्कर। ३ रोम, एक बाल भी
का न हुआ। ४ बड़ी जंगी, बहुत बड़ी बीहड़। ५ चले। ६ कुत्ता—
तिया। ७ दोनों। ८ सपत्नीक। ९ दांये, बांये। १० ठीक बीच में।
१ जंगली जानवर, सिंह (श्वापद)। १२ गज, नाला। १३ चिल्ले पर
ढ़ाया, बार करने के ढंग से सम्हाला।

वढतां सगला साथसूं राम-राम करि रोजगार-रूणरो तासीर
वढियो[१] जोइजै, पिण पाछा आवणरी कांई आस न छै। चढिया
रता २ जायै छै। आगे नाहररी नाहर पड़िया दीठा, मूवा। ल्हेसां दोनूं
ही घरी लीधी। राजी होय लारां दोड़िया। असवारां जाय जगदेवजी
नूं मुजरो कीधो। चावड़ी उळख्या,[२] घररा राजपूत दीठा। पाछे
मेलिया। तिके समाचार कह्या नै रजपूतां कह्यो, महाराजकंवरजी
पृथ्वीरो गायांरो घरम लीधो। कालरा वरसा[३] किणीं राजा
ठाकुरां सूं मूवा नहीं। इसौ पृथ्वीरो दुख राज बिना कुण काटै।
इतरौ सुणनसमो रजपूतांने सीख दीधी नै कंवर दिन आथमियै
सहिर मांहे आय खाणां-दाणांरी कीधी नै टको १ देयनै घोडां रै
खुररो करायो। रातव दाणो दिरायो। हाटां मांहे डेरो कीयो।
रुपिया ४ लागा। यों मजलांरा मजलां चालतां २ पाटण आया।
सहसलिंग[४] तलाव सिद्धराव जैसिंघदेजी करायो छै, तिणरी पाल
ऊपरां मोटा थड़ छै, तिण हेठे घोड़ासूं उतरिया। घोड़ांने टहलाया,
लोयलियां छांटिया, पाणी दिखाइयो। घोडा कायजै[५] हुवा ऊभा छै,
चोफड़ो चाबै छै। कुं तोसो[६] थो तिको काढि दोनूं ही सिरावणी[७]

---

१ रोजगार और नमकहलाली के कार्य में चढ़े। २ पहचाना। ३ काल (यमराज) के बरसाये (पैदा किये हुए)। ४ सहस्रलिंग महादेव का मंदिर और उससे लगा हुवा उसी नाम का तालाव, जयसिंह देव सोलंकी के इतिहास में उसके बनाये हुए मन्दिर और तालाव का विवरण है, देखो नैणसी मूंता का सोलंकियों का इतिहास। ५ एक साथ ओडे हुए दो घोडे। ६ संबल, परिश्रम निवारणार्थ यात्रा में खाद्यपदार्थ। ७ कलेवा।

कीधी। तिमै जगदेवजी कह्यो—धावड़ीजी, राजि घोड़ां लियां अठै विराजिया रहिज्यो, हूं नगर माहि जाय काई हवेली भाड़े ले र्हो राजने ले आवस्यां, नै येदू जणा साथे फिरना हूंय-डूंबणी[1] ज्यूं फिरना रूड़ा[2] न दीसां। मरै धावड़ी कह्यो—पधारोजै। नरै जगदेव मरवार पधारो छेनै नगर मांहे हवेली भाड़े पूछे छै। अं तो सैहर मांहि सिधाया छै नै धावड़ी मलावडीज छै।

इनरै अठै सिधराव जैसिघदेवरो माहिलवाड़ियो[3] डूंगरसी कोटवाल पाटणरो छै। तिणरो बेटो एक लालकंवर। तिको मोटियार छै। परण्यो तो छै, पिण मोट्यार. पाटणरै कोटवालरो बेटो नै माहिलवाड़ियो छै। तठै पाटण मांहे पातरांरा[4] पांचसै घर छै। तिण माहें एक जांबवंती पात्र छै। तिणरै सागरद[5] महेली घणी छै। छोकरी छोकरा घणा छै। मालरी धणियाणी[6] छै। तिणरै कोटवाल रो बेटो आवै। तिणरो सागरदसूं रमै[7]। एकै दिन कह्यो, जा काई निपट फूटरी[8] चतुर गुणवंती बालक-वरसां[9] मांहि इसी क मिलावै तो खवास[10] करूं, नै तोनै निवाजूं[11]। जांबोनी मुजरो आरे कीधी। आपरे चाकरांनैं पिण कहि राखियो छै। जांबवंतं सहेली पिण पाटण माहें देखती चोपती[12] फिरै छै। आछी अस जोवती[13] फिरै छै। तिण समीयै जांबोतीरी छोकरी पाणीरो घड़

---

१ डाडी-डाढिन की तरह। २ भले। ३ राज्य महल का नौकर। ४ वेश्याओं का। ५ नौकर, शिष्य, शागिर्द। ६ स्वामिनी। ७ रमण करता है। ८ सुन्दर। ९ बाल्यावस्था में। १० मरज़ीदान, स्नेहपात्री। ११ प्रसन्न होऊं। १२ भालती, खोजती। १३ खोजती हुई।

ऐनै दोपारां[1] सहस-लिंग तलाव आई। आगे चावड़ी मुकनों मूंढो ऊपरांसूं परो करि बैठी छै। आदमी फिरतो कोई दीठो नहीं, तद मूंढो उघाड़ जलरो तमासो देखै छै, वले, कमठाणों[2] देखै छै। तठे गोली[3] पिण उणरै कने चोवनी फिरै छै। तद चावड़ी दीठो, इन्द्ररी अपछरा, हजार चन्द्रमांरी सोभा दीसती देखनै हैरान हुई। घड़ो लियां चावड़ी कनै आई। मुजरो कीयो। पूछियो, बाईजी कठा सूं आया नै घोड़ांरा असवार सिध पधारिया छै। तरै चावड़ी कह्यो, हूं उदियादीत राजा पंवाररा छोटा बेटारी परणी छूं। वले गोली पूछियो जेठ छै। कह्यो, रिणधवल। तरै गोली कह्यो, बाईजी, कंवरजी रो नाम कासूं। चावड़ी कह्यो, गैली, धररा धणीरो नाम कदेई कोई कह्यो छै। गोली कह्यो, कै श्री करतारारो नांम कहीजै कै भरतार रो नांम कहीजै। आप तो देसोत छो। तरै चावड़ी कह्यो, कंवर जग-देवजी। वले गोली बोली, आपरो पीहर कठै छै। चावड़ी कह्यो, टोडै राजा राजरी बेटी, बीजरी बहिन, चावड़ा छै। नरै गोली कह्यो, कंवरजी मांहे पधारिया छै, नै घोड़ांरी रखवाल रखावज्यो। तरै चावड़ी कह्यो, उण काल पहाड़रा घोड़ा सामो जोवे कोई नहीं। वले गोली कह्यो, मोटा राजारा कंवर एकेला कुं निकलिया। नरै चावड़ी कह्यो, माईसूं रीसाय नै निकलिया छै। तारली[4] बात सगली कही गोलीनै और गोली सगली बात ले मुजरो करि[5] पाणी भर घरे आई। जावतीनै कह्यो, कदेई कंवरजीसूं मुजरो करो। इकेली बैठी

१ दोपहर के समय। २ भवन-निर्माण, कारीगरी। ३ दासी। ४ पिछली। ५ प्रणाम करके।

घोड़ा दोय लियां बैठी छे। धू रे मंडले,[१] वैर[२] जात न दीठी। कहता जिसी छै। और जात, जेठ, सुसरो, धणी, पीहर सगळा बताया। तरै जांओती कपड़ा आछा पहिर पल्लादार गुजराती गैहणा पहिर्या, रथ जूतर्यो[३] जल्दसदार। मांहि बैठी चिक पड़दा दे नै। छोकरी आपरी पराई २०/३० पासनी लीधी। चाकर पंचहथियार साथे लीधा। एक माळजादो[४] खोसरो[५] थो, तिको पोजो वणाइ घोड़े चढ़ि लीधो। तिका धावड़ी बैठी थी तठै चाली चाली आई। परंध[६] आडी खंचाई नै जांओती कह्यो, बहू, ऊभा हुवौ मिलां। हूं थाहरी भूवा-सासू छूं। मोने इण पड़ारण[७], थांसु वात करि गई थी, तिके मोनें कह्यो। तरे हूं महाराज सूं मालूम करि रथ जोताई ने आई छूं। थांने भतीज जगदेव परणियां टोहे, जरे हूं नाईं[८] थी। तिणसूं थे ऊलख्यो नहीं नै नैणो रिणधवल री मा मेल्यो थो। भतीज जगदेव कठै सिधाया नै थे मोटे घररा छो अर मोटे घर आया। आ वेसगरी आयगा आपणी नहीं। तरे धावड़ी देख भरममें आई, कदेही कंवरजी सिधरार री सगाई री वात कही नहीं नै रामारा राजा सगा होसी, यों जाण कपड़ो गैहणो तरे[९] देखि पगे लागी। आसीस दीधी नै कह्यो, बहू रथ विराजो, भतीज अठै आयो रहसी। नफर[१०] एक अठै ऊभो राखिस्यां तिको दरबार हूं आवसी। रांणी नै कह्यो। घोड़ा नफरां

१ भू व मंडल में, पृथ्वीतल पर। २ को। ३ उलझाया। ४ मात-जाया, कामी, दुश्चरित्र पुरुष। ५ वैरागिओं का पुत्र। ६ कनात, तम्बू। ७ राज्य महल की ड्योढ़ी, प्रतिहारिन नौकरानियाँ। ८ नहीं आई। ९ इस। १० नफर, नौकर।

नें सुंपणा मांड्या। तरै चावड़ी थेली दोनूं ही उरी लोयी। रथ बैठाय ने रथ खड़ियो। तिसै खोजांने पडारण साथे कहाड़ियो[1], आदमी अठै एक ऊभो राखो, जगदेव आवै जरै साथे लेने वेगो आवे। यों करि ने घरै आई। घर मांय पोलीदार[2] छे जठै मांय आयो रथ छोड्यो ने जाप्रोंती उतरी, चावड़ी उतरी। तिसै मांहिसूं सागरद थी तिका बडो पोसाख कीधां सामी आई। वर्णा[3] मुजरो कीधो, कै पगे लागो, केई सहेली खवास[4] हुई खमा-खमा[5] करती आगै चाली। मांहे गई तरै ऊभो[6] मालियो निपट बेथाह[7] छात बंधी छै। चावनी कली[8] ऊपरा सोनेरी चित्राम जाली काच जड़िया छै, जाणे साचै[9] हीरा जड़िया दीसै। तिसीहीज बिछायत ऊपरां गाव-तकिया[10], बगल-तकिया, गींदवा[11] बादेला[12] पास्वा[13] मसंद[14] ऊपरै पड़िया छै। तिण मालिये लेने बैसाणी। तरै थेली दोय मंगाय ने राखी। गरम पांणी दिराया ने तिसै एकै छोकरीने कह्यो, जा श्री महाराजा सूं मालूम करि, म्हांरो सागी भतीज जगदेव अठै पधारियो छै, महाराजा घणी गोर करावज्यो जी। आवै छै तरै पगे लागसी जी। सजोड़े छै। चावड़ी म्हारै महिल छै। छोकरी मुजरो करि घड़ी दोयने आय कह्यो, महाराजा घणा खुस्याल हुवा ने फुरमायो छै, आवत-समो भूवा सूं

---

१ कहलवाया। २ दरबान, द्वारपाल। ३ कइयों ने। ४ नौकरानी का रूप बनाकर आई। ५ 'खमा खमा' ये शब्द प्रथा द्वारा राजा के अभिवादन में मारवाड़ में बोले जाते हैं। ६ ऊँचा महल। ७ अर्थ संदिग्ध है। ८ दीवार पर की हुई कर्याई। ९ सचमुच। १० गाल रखने के तकिये। ११-१२-१३ नाना प्रकार के तकिये जो सौकमपूर्ण घरों में मिलते हैं। १४ मसनद, गद्दा।

पछै पनै लगावज्यो । एक वार म्हासूँ मिलावज्यो । तितरै जीमण तयार हुवो । तरै जावोंती कह्यो, बहू, संपाड़ा[1] करो, ज्यां[2] जीमां। घावड़ी कह्यो, मोनै पतिव्रता धर्मरो पण छै, कंवरजी आरोगिया पछै आरोगणरी वात । तिकै तो अजेस[3] पधारिया नै छै । तिसै एकै छोकरी आय कह्यो, बहूजी साहब, राजरो भतीज जगदेव गुजरो कीयो छै । नै महाराजा कनै पधार विराजिया छै । महाराजारै रसोड़ै थाल पधारियो थो । तरै जावोंती कह्यो, जा उतावली जगदेव अजाय[4] तो होय जिसो, महाराजा साथै आरोगिया छै कै नहीं तो महाराजा सूँ अरज करि तेड़ ल्याव, भूवा भतीजो भेलाही जीमस्यां। जिसै इणरै ही थाल ल्याया । तरै जावोंती कह्यो ये कू (कूरे ?) पराहां[5] जगदेव भतीज आयां पैहलां हुवा जूठण (?) नूं वेसूं। आरोगियां ही खबर आवै जरां पछै जीमवारो वात । तिसै छोकरी आय आई । बहूजी साहब, महाराजरै साथै सांपड़िया नै बडै थाल दोनूं सिरदार जीमतां देख आई हूं, पिण रावलो भतीजो होय तिगो होज रूप रंग मांहि सांवला छै । जावोंती कह्यो, आ तो म्हारा घरो रा'न[6] छै, भाई उदियादीत पिण रंग मांहि सांवला छै, पिण म्हारा पर जिसो रूप कठैही न छै । इसी भांति वातां करि वावड़ीरो मन

---

१ स्नान । २ जिसमें । ३ अब तक । ४ मैं आ, तुरत आ । ५ यद्यपि इस वाक्य को भाषा, लिपिकार की गलती से समझ में नहीं आती, परन्तु आशय इस प्रकार समझ में आता है—अब जावंतनी ने कहा, कै आने से पहले अब को दूर (?) या जूठण बैठा मैं ये बड़े (?) परसूंगी । ६ घराने की विशेषता ।

परघलायो[१] । थाल दीधो, बहू आरोगी । तरै क्यूँ जीमी क्यूँ न जीमी, थाल छोकरी उठाय लियो । अबै बातां पूछणी मांडी । तीजो पहर आयो । चावड़ी कह्यौ, कंवरजी मांहे भूवाजीसूँ मुजरो करणने पधारीया नहीं । तरै जाबोती कह्यौ, जा ए छोकरी, भतीजने तेड़ ल्याव[२] । जाबोती बहूने बातां लगाई । तिको जगदेव बिना तो बातां अलूणी[३] लागै छै । तरै छोकरी घड़ी-दोय पछै आय कह्यौ, महाराजा उठण दे नहीं । कह्यौ, राति पोहर एक गियां पोढणनै आवसी, तरै भूवासूँ मिलि लेसी । इनरो सांभल रीस कीधो, महाराजा सूं अरज करि, परभाते घणी बातां करिसी, पिण अबार मिलण रो हुकम हुवै । छोकरी भले[४] घड़ी-दोय नें आई । आगे कह्यो स्यूंहीज कह्यौ ।

तिसै दिन मंदिर पधारियो[५] ने लालकंवर नै कहायो, आज म्हारो मुजरो छै । रात पोर एक गियां वेगा पधारिज्यो, आपणे बस छै । खवास चाहो तो खवास राखज्यो, नहीं तो हूँ सागरदां में राखस्यूं । अबै लालकंवर अमलांरा जमाव[६] मांडिया, गलियो गुलसरो[७] छूटो अमल कियो । पछै बत्तीसो कसूंभो मिश्री माहें कढाय पीधो । मुफर[८] माजुम लीधो । पछै दारू रुपया ६० सेर लाभै तिको अधेला भर ल्यै तो चार पांच सेररो पीवा कै थाका रहै[९], तिणरो प्यालो पईसा च्याररो लीधो । पछै पोसाख

---

१ पिघलाया । २ बुला ला । ३ नीरस । ४ फिर । ५ दिन अपने घर गया, सूर्य अपने मन्दिर (अंस्ताचल, अस्ताचल) को गया, सूर्यास्त हुआ । ६ अफीम जमाना (खाना) शुरु किया । ७ गुलछर्रे । ८ मुख के स्वाद के निमित्त किसी पेय पर खाने का पदार्थ । ९ चार पांच सेर शराब पीने के बराबर मस्त रहे ।

गहणो पहिरियां, सूंघो[1] चोवो अतर ल्याय कस्तूरीरो कंठो बणाइ सेलरा धेगा दे[2] तोडूंक्तो-तोडूंक्तो[3] आयो। बतक[4] एक सेर दारू सूं भरी रुपया ६० सेर वालो। तिको ले पान फूल मिष्टान लेने आयो। तिसै गोल्यां बोली, बहूजी, वधाई देज्यो कंवरजी पधारिया। चावड़ी जाण्यो पधारिया तो परा। तिसै मालियेरै बारनै आयो ज्यूं निजर और दीसै। तितरे छोकरी दारूरो बतक पांन मिष्टान मसंद ऊपरां मेल्हि पाछी हीज फिरी। जाती कीवाड़ जड़ि बाहररी सांकली दीधी। चावड़ी देखै तो दूजो। तरै मन मांहै जाणियो कोइक तो दगो दीसै छै नै हूँ अस्त्रीरी जात, औ मरदरी जात नै अमलां मांहै असुर[5] दीसै छै। इण आगै म्हारो धर्म राखणो छै, तो कपटसूं करणो। यूं जाणि नै ऊभी हुई नै कह्यो, कंवरजी आघा पधारो, ढोलियै विराजो, इण अस्त्री कह्यौ। तरै लाल कह्यो, चावड़ीजी राजि विराजो। रूप देखि नै गोलो रीझ गयो। इण पिण नैणांरा बाणां बीध नाख्यौ, पांणी ज्यूं हो गयो। लाल कंवर कह्यो, म्हारी आंपोनी चाकरी कीधी। चावड़ीजी, कै मालजादी छै। मैं यनै कह्यो गुणवंतो रूपवंत चतुर बालक थारै मिलावे तो स्याबास थापूं। हीज थे छो। मोनै हुकम करस्यो सो करस्यूं। तरै चावड़ी म्हारी साली मालजादी मोसूं घणो दगो कीन्हो नै मोनै ढ़ाई[6]। तरे चावड़ी बतक प्यालो हाथमें लीधां थोटो, अमलां

...न्धित द्रव्य। २ टेक देता हुआ, सहारा लेता हुआ। ३ गांठ ...ता हुआ, नाद करता हुआ। ४ बतख, शराब पीने की ...त्र के समान। ६ बड़ी आपत्ति में डाला।

मांहे आंधो दीसै छै। तरै प्यालो दारूसूं धकधक छलियो[1] नै आधो हाथ कियो। कंवरजी, आधो हाथ करि म्हारो हाथरो प्यालो लीजै। तरै लाल कह्यो, जो पईसा दस भर नै धीजो पांच अथवा सात सेर दारू अमलां पोंचै छै, तिको अजे निपट थाक होज छूं नै प्यालो निपट करड़ो छै नै थानां करणी छै। चावड़ी कह्यो बातांरी किसी फिकर छै, पहिली वार म्हारो हाथ ठेलो[2] मति, थूं जिको ल्यो। मोनैं ही बातांरो कोडि[3] छै। इसरो कह्यो, तरै प्यालो लीधो। तरै धूजते हाथ लालकंवर प्यालो भरि नै चावड़ीनै दीधो। चावड़ी घूंघटो करि कंचू[4] मांहे ढोल[5] दीधो नै खंखारो कीधो, थूकियो। तिसै दूजो प्यालो चावड़ी वलै भरियो। जाणियो गोलो अजे सपगा[6] छै। दारू आयो तो खरो[7] पिण लोटपोट न हुवो। तितरे चावड़ी प्यालो आधो कीधो। तिको गोलानैं दारू आयो। वलै प्यालो मूंढै लागयो। तरै दूजो प्यालो ऐलसमैं ढोलिया ऊपरो पाधरा पग करि दांत निड़ाय[8] नै पड़ियो। चावड़ी उणनैं अमलां मांहे बेखबर देखि, तरै उणरो ही तलवार काढि गलो कीधो[9]। हाथ जुदा जुदा काटिया पगांरा जांघांरा जुदा २ तसला कीधा। करनैं चांदणी[10] मांहे घड़ देनै बांधियो। ऊपरो पिलंग-पोस वींटीयो[11]। जिण ऊपर जाजम छोटी थी, तिका वींटी। गांठ गाढी सैंठी[12] बांधी। जिण झरोखे नीचै राज

---

१ लबालब भर दिया। २ रोको। ३ चाव। ४ कंचुकी, कांचली अंगिया। ५ गिरा दिया। ६ सविधान, होश सहित। ७ शराब का नशा आया तो सही। ८ निकाल कर। ९ गलो कीधो (मुहा०) = गला काट डाला, मारडाला। १० बिछाने की जाजम। ११ लपेट दिया। १२ जोरदार।

मारग निकले छै। निको रात आधीरो समीयो थो, तिसै चोकीदार चोरो देखा आय निकलिया। आगे गाठड़ी दीठी। देखिने जाणियो किण एक साहूकाररी हाट फाड़ी,[१] निको चोर म्हांरा डरसूं गांठड़ा नाखि न्हाठा। म्हांरो मुजरो होसी। उपाड़ै[२] तो भार घणो। माहे[३] कह्यो, कै तो बादलो पारचो[४] कै नीलक घणोसो माल दीसै छै। खोलो मती। दिन ऊगां दरबार बाहर पालण[५] नै आसी, तिणसूं बांधी ज राखो नै कोटवाली चोतरै[६] मेलो। तरै राजी थका गांठड़ी मेली। दिन ऊगां मुजरो होसी। अबै चावड़ी गाढी सेंठी मरणरूपी होय बैठी छै।

हिवै जगदेवजी हवेली भाड़ै लेनै पाछा घोड़ांरी ठौड़ आवै तो चावड़ी, घोड़ा दीसै नहीं नै रथरा खोज दीसै। तरै जाणियो चावड़ी नै कोइ भोलाय[७] नै लेगयो। तरै दरबार जाय कहूं। तरै दरबार आया। आगै ठावा लायक सहाणी[८] घोड़ांरी पायगा बिचै बैठा छै। तिणसूं राम २ कीधी। तरै सहाणी लायक ठावो बणायतो डील देखि उठि मिलियो। पूछियो किठासूं आया नै आगै किसै गांव पधारस्यो। तरै जगदेवजी कह्यो, भठातांई सेवा करण ने सेर बाजरीने आयो छूं, पंवार रजपूत छूं। तरै साहणी कह्यो, जो घोड़ांरी जाबता[९], रातब, उड़दावो[१०], घासरो जाबतो करावो तो

---

१ दूकान तोड़ी, दूकान तोड़ कर चोरी की। २ उठावें। ३ मन ही मन। ४ कीमती चांदी की भारी अथवा अन्य बहुमूल्य पात्र। ५ फरियाद करने, कूक मचाने। ६ चौकी पर। ७ छल कपट करके। ८ घोड़ों का रक्षक। ९ बन्दोबस्त। १० सेवा।

अपे[1] मेला रहां। रुपिया ३०) रो महीनो लियां जावो नें म्हारे रसोवड़े जीमो। जगदेवरो जीव तो थिर नहीं, पिण जाएयो राजरो सहाणी हजूरी छै। तिसै सहाणी कह्यो, थानें महाराज रे कदमां लगावस्यां[2]। तिसै थाल परुसियो सहाणी रै आयो। कह्यो, जगदेवजी, अरोगो। निको धान भावे तो नहीं; पिण उण देखतां अरोगिया। थाल परो ले गया। रात पड़ियां पायगा माहें होज ढोलियै उपरें आडा-तेडा[3] हुवा।

तिसै दिन ऊगतै कोटवाल कचैड़ी आय बैठो। तदि चाकरां पहिलायतां[4] मुजरो कियो, गांठड़ी दिखाई ने कह्यो, आपरै परतापसूं म्हांरि लोह कोई पचीयो[5] नहीं, धाड़ी-री-धाड़ी[6] चोरां री थी, पिण म्हे रावला रिजक[7] ऊपरां रांमजीरो नाम लेनै हाक करी, चोरां ऊपरि रास्या,[8] तिसै[9] चोर गांठड़ी नाखि न्हास गया। कोटवाल राजी हुवो, कह्यो, देखो गांठड़ी मांहे कासूं छै। जदै पयादां[10] उतावलां मुजरायतां[11] खोलणी मांडी। जठै तीजो वट[12] खोलै तिठै लोही लागो दीठो। सगला चमक्या[13] ने पोटणो उघाड़े तो मांटी-मारयो[14] निजर पड़ियो। तिसै कोटवाल उलल्यो ने कह्यो, रे म्हावाला

---

१ अपन, हम दोनों। २ राज्यकुटुम्ब में नौकरी लगा देंगे। ३ आड़ा टेढ़ा, थोड़ा आराम। ४ कृपापात्रों ने। ५ म्हारे लोह......नहीं = हमारा लोहा किसी को बरदास्त नहीं हुआ। ६ धाड़ की धाड़, डकैतों की बड़ी सेना। ७ नौकरी। ८ चोरों के ऊपर पड़े। ९ जिससे। १० पायकों ने, पैदल सिपाहियों ने। ११ कृपाभिलाषियों ने। १२ परत। १३ चकराये। १४ हतभाग्य।

लालड़ो[1] दीसै छै, रे दौड़ो खबर करो। चाकरां कह्या, कंवरजी तो महलां मांहे पोढिया छै। तरै मांहे खवास ने पूछियो। तरै कह्यो, रात पोर एक गयां आवोतो पात्ररै घरे सिधाया था। तरै आदमी बोल्या, पात्रने पूछियो। तरै पात्र बोली, मालिये मांहे घणै सुख मांहे छै। पयादां कह्यो, म्हार बुलावे छै, परा जगाय। तरै दासी ऊँची जाय किवाड़ांरी छेकड़[2] मांहि मूंढो घालिने कह्यो, धावड़ीजी कँवरजीने जगाय उरा मेलो। तरै धावड़ी भूंजनो[3] बोली, मालजादी रांडां, थारे बापने जरै ही मारि गांठड़ो बांधि झरोखेरै मारग नाख दीधो। मो धावड़ो सूं इसो घज[4] करो, जो कदेही कँवरजीनै खबर हुई तो थांरो नाम कहिसो कठै लजादियांरा घर था, थां मांहि घणी कुपीच[5] होसी, थांरो यानास नारायण गमै,[6] मो कने गोलाने मेल्यो। इतरी बात सुणत [illegible] रांडांरा जीव उडि गया। चाकरां सुणियो, तरै दौड़ जायने कह्यो, जांवोती काई धावड़ी रजपूताणी घज करि आंणीथी। तिण लालजीनै मारिया। तरै कोटवाल उकल्ने काल़जे[7] आदमी सो दोय ले ने पात्ररै घरै आयो। मालियै चढिया। आगै बारणे रा किवाड़ सैंठा[8] दीठा नै बारी एक पसवाड़ा[9] री भीती माहे थी, तिण कांनी निसरणी देनैं मालियै माहि आवणनैं मूंढो आयो घालियो। तरै धावड़ी झटका री दीनी, तिको मालियै माहैं माथो पड़ियो नै घड़ पाछो सूदावाणो[10] पट दे[11] री धरती पड़ियो। यों आदमी ४-५ मारिया। अबै किण ही

---

१ लाल कुंवर। २ छिद्र, दरार। ३ जलती भुनती हुई। ४ छल, कपट करके। ५ यातना। ६ खोवे। ७ व्याकुल चित्त से। ८ जड़े हुए, [illegible]के हुए। ९ पास को। १० सीधा होकर। ११ धमके के साथ।

री आंगवण[1] हुवै नहीं। हलचलो[2] हुवो। तिको सिद्धराव जैसिंघ नै खबर हुई, काई चावड़ीसूं मालजादो दगो कियो थो, तिको राते सालनै मारियो, अवारू[3] पाँच आदमी मारिया, मालिया रा किवाड़ जड़ बैठी छै। राजा कह्यो, कोई उणनै कहो मती, म्हें पधारां छां। तिसै राजा पाला[4] लेनै आप घोड़े असवार होय चाल्या। तरै सहाणी लूंब[5] झाली। तरै जगदेव पिण बात सुण राजी हुवो। तरै दूजै कांनी लूंब जगदेव झाली। राजा जगदेव नै देखै छै, इणनै म्हें कदेई दीठो। यों राजा विचारतो बार बार जोवतो पातरै घरै गयो। सहर रो लोक साथे हुवो। मालियै ऊँचा महाराजा, सहाणी नै जगदेव तीन आदमी चढिया। तिठै राजा बोल्यो, बेटी चावड़ी, थारो पीहर किसै नगर नै किणरी बेटी छै, नै थारो सासरो किसै नगर छै, सुसरा रो नाम खांप कासूं छै। तरै चावड़ी जाणियो कोई मोटो लायक दीसै छै, इण आगे कह्यो चाहीजे। तरै कह्यो, बापजी, पीहर तो नगर टोडै छै। राजा राजरी धीव[6] छूं, बीजकँवररी बहिन छूं, सासरो धार नगररो धणी, जाति पंवार, राजा उदियादीत रै लोहड़ा[7] बेटारी अंतेउर[8] छूं और पाछली सगली मांड़नै[9] बात कही। मोनें छल करनै मालजादी रांडां ल्याई। पछै म्हारो धरम खोलणनें[10] गोलो आयो। तरै गोला नै मारियो, नै बापजी, रजपूतरी बेटी छूं, घणां नै मारिनै

---

१ आगमन, आगे बढ़ने की हिम्मत। २ हलचल। ३ अभी। ४ पैदल सिपाही। ५ शाही घोड़े की सजावट के लटकते हुए इधर उधर के रेशमी फुन्दे। ६ पुत्री। ७ छोटे। ८ बी, पत्नी। ९ ब्यौरेवार। १० भ्रष्ट करने को।

घाम आविस्यूं। जीव ऊपरां खेल्यां ऊभी छूं। नै कँवरजी तो नगर मांहें छे। नरै जगदेव राजा आगै होय बारणे आय बोल्यो, चावड़ी जो किवाड़ खोलो, थें घणो अचैन[1] पायो। तरै साद[2] पिछांण किवाड़ खोल्यो। जगदेवजीसूं मुजरो कियो। तरै राजा जाणियो, जगदेव औ होज। तरै राजा कह्यो, तूं म्हारे धर्म री पुत्री छै। चाकरां नै हुक्म कीधो, थे पालखी १ दासी १० सिनाव ल्यावो नै खालसारी हवेली दरबारसूं नेड़ी हुवै, तिण मांहें डेरो दिरावो। तिसै कोटवाल कह्यो, म्हारी धररी गमाणहार[3] नै कासूं फुरमावो छो। राजा कह्यो, तोनें सहर इसा कुकरम करणनें भोळायो[4] छो? इतरो कहि कोटवालीसूं दूर कीधो नै मालजादी तितरी[5] थांणे पकड़ मंगाई, कान नाक काटि माथो मुंडाय पाटड़ा पाड़ि[6] गधे चाढि सहर भद्दर[7] कीनी। घर लूंट लीना। अबै चावड़ीनै सुखपाल[8] बैसाण दासी पापतीं हुवां हवेली माहें उतारिया। राजाजी साथै छै गरढो[9] एक खोजो, नाम मियां मुस्ताक, दोढियां राख्यो। बरस दिन रो धान चोपड़[10] री आदमियां माफक सामों[11] राख्यो। पुरनो एक पोळियो राख्यो। मांयसूं सुवागो[12] मंगाय दियो। पछै राजा जगदेव, सै[13] साथे करि दरबार आया। बैठा बातां करी। राजा निपट राजी हुवो। उठे होज जीम्या। रात पोहर एक गई। तरै आया। मारो सिर

---

१ दुःख। २ शब्द, ध्वनि। ३ नष्ट करने वाली। ४ सौंपा था। ५ जितनी थी उतनी। ६ केशपाश उखाड़ कर। ७ लांछित। ८ पालकी। ९ पराक्रमी। १० घी इत्यादि, स्निग्ध पदार्थ। ११ सामान। १२ सुहाग सम्बन्धी मङ्गल समाग्री, जो सुहागिन स्त्री को भेंट की जाती है। १३ सभी।

पाव मोत्यांरी माळा, घोड़ो, फड़ा मोती देनें सीख दीनी। डेरें हवेली आया। चावड़ी सूं मिलिया। मोतियांरी माळा चावड़ीनें बगसी नें कह्यो, म्हाराजा सूं राज मिलिया, नहीतर दिन १० तथा २० में किणीक नें कहिनें मुजरो गुदरावतो[1], तरें मिलणो होतो। यों वातां करतां रात्र गई। चावड़ी पतिव्रता, तिका निरणी[2] रही। तरें रात पाछिली पोहर एक रही जरें रसोड़ो कीधो। रात घड़ी चार रही तरें जगदेवजीनें जगाया। सेतिपानें[3] गया। हाथ पग ऊजिला करि, कुरला करि दांतण कीनों। सारां[4] हीज थकां थाळ परुस दास्यां लाई। कंवर कह्यो, इसरो उतावलो वेगो थाळ क्यूं। चावड़ी कह्यो, आपने दरबार राजाजी तेड़ावसी,[5] थांसूं राजाजी बात कीधी छै, तिको थां बिना घड़ी एक रहसी नहीं, नें मोनें व्रत छै, आप आरोग पधारो पछै म्हारो जीमणो होसी। तरें जगदेवजी सांच जाणि भेळाही[6] आरोगिया[7]। तिसें घोड़ो ले चोपदार आय आवाज कीधी। तरें जगदेवजी सीख मांगी, घोड़ें असवार होय हजूर गया। राजा उठि आदर दीधो। वातां करी। कह्यो, चाकरी करस्यो। जगदेवजी कह्यो, सेर वाजरीनें हीज आयो छूं। तरें राजा कह्यो, पटो लेस्यो कै कोरो वरतन (वेतन) लेस्यो। जगदेवजी कह्यो, कोरी वरतन लेस्यूं। हजार एक जीमणी भुजारा, नें हजार एक वामी भुजारा। हजार दोय रुपिया देसी निकेरी चाकरी करस्युं। विखमी अवढी[8] जाइगारी चाकरी करस्युं। तरें राजा

१ मालूम करवाता। २ भूखी, उपवासी। ३ पाखाने। ४ तारे। ५ बुलावेंगे। ६ एक साथ ही। ७ जीमे, भोजन किया। ८ विषम और टेढ़ी जगह की सेवा।

खानसामाने तेड़ि कह्यो, रुपिया हजार दोय हमेसा जगदेवजीने कोठार सूं दंग्यो। मास एक रुपिया हजार साठ दीयां आज्यो ने सिरपाव दीयो। रोजगाररो परवानो करि हाथ दीयो। कहे, रीफ दे सोख दीधी।

अबे पाटण रावड़ा बड़ा उमराव कुस राखे छे[1]। एकै ढोलरा दो हजार रुपिया दीजे छे तिको इकलो किसो लाख घोड़ांरी फौजां भोमसी, यों धाजा करै। राजा तो जगदेव आवे तरै घणो कुरब[2] करै। फन्हे साम्हो थैमाणे, रीफ बिना सोख न दे। यों बरस एक नें जगदेवजीरें कंवर हुवो। तिणरो नाम जगधवल दीयो। बरस तीन रे आंतरे बलै कंवर हुवो। तिणरो नाम वीरधवल दीयो। घणां लाड-कोड कीजे छे। राजारी रीफां लीजे छे। पिण जगदेव काला गहिलारो दातार[3] छे। रुपिया हजार एक रो दान हमेसा करै। दातार-गुरु नाम पट्टन[4] कहै। इसी भांति रहतां बडो बेटो बरस पांच में हुवो ने बरस दो मांहे छोटो बेटो हुवो। एक दिन भादवारी मेंह अंधारी रात मच[5] ने रही छे। छरमर छरमर मेंह बरस ने रह्यो छै। बिजली भलभलाट[6] करने रही छै। इणी समै तिको रात आधी रो समो छै। तिको राजारै कान सुर पड़यो। ऊगूण दिसी

१ द्वेष भाव रखते हैं। २ आदर। ३ काला गहिलारो दातार (मुहा० =आपत्ति (काला) के समय (गहिला) मार्ग का दिखाने। ४ छत्तों वर्ण, समाज को सभी जातियां, हिन्दू जातियां+विधर्मी जातियां। ५ झुक रहो है।

नें जणो[१] चार गावै छै नें केईक न्यारी अलगी रोवै छै। राजा सुण नें कह्यौ, जगदेव, थांरे कांन इण मेह मांहे कोई सुर और ही सुणो छो। जगदेवजी कह्यौ, महाराजा केईक बायां[२] गावै छै नें केईक रोवै छै। तिको सुणूं छूं। तरै राजा कह्यौ, इणारी खबर ल्यावो, कुं गावै छै, नें कुं रोवै छै। प्रभाते म्हांसू मालूम करज्यो। इतरो हुक्म सुण जगदेव मुजरो करि ढाल माथा ऊपर मेलि नें चालियो। खड्ग हाथ मांहे ले नें चलाया। तरै राजा जांणियो इसी अंधेरी रात मांहे जायै के न जायै, यूं जाणि नें राजा पिण छानो[३] थको लारे हुवौ। तिसै चौकी पोहरे उमराव था, त्यनि कह्यौ, चोकी किण किण री छै। जिकै उमराव था तिणरा नाम ले ले नें कह्यौ। तरै राजा कह्यौ, देरां ऊगूण दिसि नें कोई गावै छै, कोई रोवै छै, तिणरो विवरो[४] ल्यावो। तरै किणीक उमराव कह्यौ, दिनरा दो हजार रुपया पावै छै, तिणनें कहो, हिवरूं[५] तो ऊ[६] जासी। इतरा बरस हुवा फांसू[७] रुपिया ठोके[८] छै। इतरो राजा सुणियो। तिसै उमरावां कह्यौ, महाराजा, खबर आण नें कहां छां। मांहोमांहे ढोलियै सूता हीज कह्यो, फलाणा[९]जी फलाणाजी उठो जावो। इतरो कहि ढालांरा खड्भड़ाट[१०] करि पाछा पोढ रह्या। नें राजा तो उणांनें कही नें जगदेवरे लारां हीज हुवौ। हिवां जगदेव उणांरा सबदरै अणुसारै[११] चाल्यो जाय छै। राजा पिण छानो छानो लारे छै। पोळ खुलाय बारै निकळियो। तरै राजा पोळियां

१ स्त्रियां। २ कन्याएँ। ३ छिप कर। ४ विवरण, ब्यौरा। ५ अभी। ६ यह। ७ मुफ्त का। ८ खाता है। ९ अमुक जी। १० खलबली। ११ पीछे, के अनुसार।

नै कह्यो, हूं जगदेव रो खवास छूं मोनैं ही जाण थो। तरै राजा पिण
पारै आयो। आगै जगदेव रोवै छै त्यां नैड़ै[1] गयो। तरै बोली,
आवो जगदेव। कह्यो, थे किवारूं आधी रातरी रोवो छो, सो थांनैं
कांइ दुःख छै। तरै एवै बोली, पाटणरी जोगणियां[2] छां, नि
प्रभात सवा पोर दिन चढ़नैं सिधराव जैसिंहरी मृत्यु छै, नि
रुदन करां छां। म्हांरी सेवा पूजा घणी करतो, सो अबै दुःख करां
तिणसूं रोवां छां। राजा पिण सुणै छै। तरै जगदेव बोलियो, उ
गीत कुं गावै छै। जोगणी कह्यो, तु उणांनै ही पूछ आव।
जगदेव उणां कनै गयो. ज्यूं उणां पिण कह्यो, आवो आवो जगदेव
तठै राजा पिण ऊभो नैड़ो[4] सुणै छै। जगदेव पगे लागि
कह्यो, आप खंभायची[5] राग माहें सोलो[6] गावो छो, बधा
छो। सो थे कुण छो नै किसी बधाई खुस्याली मांहे गावो छो
जरै कह्यो, म्हे दिल्ली री जोगणियां छां, जिकै राजा जैसिंह
लेणनै आई छां। तिणसूं बधावा[7] गीत गावां छां। जगदेव कह्यो
कुंकर मरसी। तरै जोगणी बोली, प्रभाते दिन सवा पोर चढ़िय
राजा सेवा सारू[8] संपाड़ो करसी, पीताम्बर पहर[9] बाजोट ऊपरै ऊभो
रहसी। तरै कडुंमांहि[10] तर[11] देस्यां नै बाजोट उलाल[12] देस्यां। इण
भांति देह छोडसी। तरै जगदेव कह्यो, आजरी वेला माहें सिद्धराव

---

१ के पास। २ योगिनियां, दिशा अथवा प्रान्त की अधिष्ठातृ देवियां।
३ वे। ४ नजदीक। ५ राग विशेष, खम्माच। ६ बधाई का गीत विशेष।
७ बधाई के मङ्गल गीत। ८ पूजा के निमित्त। ९ पाट, लकड़ी का तख्ता
१० कटि में। ११ तरी, सन्निपात। १२ उलट देंगी।

जैसिंघ सो राजा बीजो कोई नहीं। किनी दान पुण्य धर्म कीधां कष्ट टलै[१]। तेरे जोगणियां बोली, जो राजारा जोड़रो माथो आपरा हाथ सूं उतार म्हांने चाढै तो सिधराव की ऊमर वधै। जगदेव कह्यो, जो म्हारो माथो ल्यो नें सिधरावरी ऊमर वधारो तो म्हारो माथो तयार छै। तरै जोगणियां बोली, तूं राजासूं चढ़तो[१] छै, जो थारो माथो हाथसूं उतारि कमल-पूजा[२] करै नै म्हांनै चाढै तो राजा री ऊमर वधै। तरै जगदेव कह्यो, घड़ी २ वा ३ राज अठै विराजि रहज्यो, म्हारे घरे चावड़ी छै, तिणांसूं सीख मांग नें आऊं, इतरै विराजिया रहज्यो। तरै जोगणियां बोली वैर (स्त्री) मांटी[३] नै मारण येई[४] सीख थांकर देसी, पण भलां, तू वेगो आवज्यो, म्हे वाट जोवां छां। इतरी वात करि, जगदेव पाछो घिरियो। सिधराव जाण्यो देखां पाछो आवे कै नावे, चावड़ी किण वाणी बोले। राजा पिण लारै हुवो। तिकै जगदेव घरे आया, पोळ माहें वैठा, माळिये चढ़िया, चावड़ीसूं मिळिया। सिधराव जैसिंघ वातां सुणै छै। तिसा सळवा[५] वैठा छै। जगदेव कह्यो, चावड़ीजी, एक वात इसो छै। तरै पेट[६] सूं मांडि नैं वात कही। तिको थानें पूछण नैं आयो छूं। चावड़ी बोली, धन दिन धन रात आजरा दिन नै महाराजारो रोजगार लावां छां सो भर देस्यां, माथा ऊपरै ही रोजगार पटो खेत दीसै छै। आप मोटी विचारी, रजपूतीरी वट छै[७] माथो पेट टूटनै ही मरै, तो धणियांरै सिर लटकै,[८] नै सिधराव जीवतो रहै नै राज करै तो पछै माथो

---

१ अधिक, बढ़ा चढ़ा हुआ। २ मस्तक-पूजा। ३ पति। ४ मारने के निमित्त। ५ चैन से, छुप में। ६ टेठ, शुरु से। ७ मत, प्रतिज्ञा है। ८ काम आदे।

किसैं काम आवसी। पिण एक अरज छै। राज पिछै हूं पिण जीवती रहूं नहीं नै दो तीन पोररो औवात[1] देखूँ नहीं। पिण माथो देस्यूं। तरै जगदेव कह्यो टावरांरो किसो सूल[2] होसी। तरै चावड़ी बोली, टावर आपां भेला रहसी। इतरो सुण नै जगदेव कह्यो, तो परा उठो, जेजरी[3] वेला नहीं। एक बड़ो कंवर जगदेव कांख मांहे लीनो नै एक चावड़ी लीनो नै मालियासूं उतरिया। सिधराव देखै नै माथो धूणै छै, धन्य २ रजपूत नै रजपूताणी नैं। अै चारूं आगे चलिया जाय छै नै पाछै राजा छै। अै पाधरा जोगणियां कनै आया। राजा ऊभो सुणै छै। चारूं जणां नै देख जोगणियां बोली जगदेव थारो माथो चाढि। तरै जगदेव कह्यो, माता, म्हारा माथा बदलै सिधरावने किती उमर वगसो छो। तरै जोगणी बोली, बारै बरस राज वलै करसी। जगदेव वलै कह्यो तो म्हारो अरधी चावड़ी नै दोय कंवर प्यारा बारै २ बरस हुआ। अै पिण मो जिसा छै, तिणसूं सिधरावनै बरस अड़तालीस बगसो। अै हूं चारूं सीस चाढसूं। जोगणियां इणरो साहस देखि नै वर दीधो। भलां २ कह्यो। तरै चावड़ी बड़ा बेटानै झाली[4] नै ऊभो राखियो। जगदेव खड्ग काढि नै पुत्ररो सीस छेदियो। नै बीजा कंवरनैं स्यावे, तिसै जोगणियां कह्यो, इणरो सत साहस देखि नै राज बरस ४८ रो दीधो नै थारा महिल[5], बेटा बगसिया। अमी रो छांटो नाखियो। बड़ो कंवर उठि ऊभो हुवो। जोगणियां हस २ बोली, बरस ४८ रे

१ अहिवात, वियोग, दुहाग। २ हाल, दशा। ३ देरी को। ४ पकड़ कर। ५ महिला, स्त्री।

राजरो वर दे नै सीख दीधी । जगदे चारूंसूं घरां पधारिया । राजा ओ सत सामधरमाई[1] देखि नै निपट राजी हुवो । महिल आया, पोढिया । धन्य जगदेव ४८ वरस रो राज दिरायो । नींद तो काइ नाईं[2] । पाछिली रात घड़ी चार रही नै चोपदार खवास मेलियो तेड़नै । तरै जगदेवजी श्री परमेसरजीरी सेवा-पूजा करि घोड़े असवार होयनै दिन ऊगतसमां दरबार आया । सिधराव सिरै[3] दरबार बैठा छै । जगदेवनै देखि नै मंसद ताईं[4] साम्हो आय मिलियो । धोजो सिंघासण मांडि बरोबर बैसाणियो । तरै उमरावांरै सामों जोयनै राजा कह्यो, रातरी बातरी कांई खबर, गीत रोवणांरी हकीकत ल्यावो । तरै थानैं कह्यो थो, तिण रो जाब[5] द्यो । तरै उमराव बोलिया, हां म्हाराज, फुरमायो छो तरै ही फलांणसिंहजी[6] ढीकण[7] सिंहजी गया था सो वारै दोय गुदा[8] ऊतरिया था, नै एकण गुदा मांहे एकण रे टाबर मुवो थो, तिणसूं दूपरी[9] करती थी, नै एकण रै जायो[10] हुवो छो, सो गीत गावती थी । आ रातरी हकीकत छै । तरै सिधराव जैसिंघ सामो जोयो । उमरावांरी बात सुणि नै राजा हंसियो नै कह्यो लाख लाखरा पटायत छो, सात खुरसीरा मीर[11] छो, थे खबर न ल्यावो तो बीजो कुण ल्यावे । तरै जगदेव नै राजा

---

१ स्वामि-धर्म, स्वामीभक्ति । २ बिलकुल नहीं आई । ३ दरबार के शिरोमणि होकर । ४ मसनद के छोर तक । ५ जवाब । ६, ७ अमुक अमुक व्यक्ति । ८ बनजारों का दल, चलते फिरते व्यापारियों का संघ । ९ रोना-पीटना । १० पुत्र-जन्म । ११ दरबार की सात कुरसियों को घेर कर बैठने वाले, सरदार, उमराव हैं ।

दीधो। सिधराव जैसिंघजी नै जगदेवजीनैं सरव लोक सरीखा करि मांनै।

तिसै बरस २१३ बीता नै जाड़ेचांरो सिधराव नै नालेर आयो। डोलो[1] ले आया। परणिया। तिका जाड़ेची सूरतिमांहे निपट सखरी[2]। पदमणीं नहीं, पिण सरीसी दीसै। तिको देही सोरम[3] छै होज[4], ५०० रुपयांरै सुंघामांहे नित संपाड़ो करै। तिकै सुंघामांहे जनाना परनाला बहै। तठै भला भला भोगी भंवर होसनाक[5] खस-बोई[6] लेणनैं ऊभा रहै। तठै रूप सुगं-धाईसूं कालो भैरू जाड़ेची रै महल हमेशा आवै। तिको सिधरावने हेठो[7] नाखि छाती ऊपरा पागो देनै जाड़ेची नै भैरू सोवै। नै दूजी राणियांरै महिल भैरू जाण दे नहीं। कहै, दूजी राणीरै महिल गयो तो उणहीज दिन मारस्यूं। तिणसूं डरतो जावै नहीं। जाड़ेचीरे महिल पोढ़ै नै रात आधी गयां भैरू हमेशा आवै। इसी भांति रहै, सिधराव मांहे हेलं[8] करै। तिणसूं राजा तूटै लागो[9], पीलो पड़ियो। फिकर घणी, पिण कहिणी ना आवै। बागवाड़ो, खुस्याली, चूंप[10] राजारी मिट गई। सारो दिन फिकर मांहे रहै। दरबार करै, वेपातर[11] सो बैसे। इण भांति मास ७ बीतां आधे डील हुवो। तिसै जगदेव दीठो। आज हूं म्हाराजनैं वेखातर

---

१ बड़े राजा को अपनी पुत्री ब्याहने के लिए छोटा सरदार राजा के घर ले जाकर अपनी पुत्री ब्याहता है, इसे 'डोला' की प्रथा कहते हैं। २ सुन्दरी। ३ सुगन्धित। ४ तो है ही, सही। ५ सूंघे। ६ सुगन्धि। ७ नीचे। ८ अवहेला, अपमान, यातना। ९ तूटै लागो (मुहा०=शरीर में घटने लगा। १० शरीर की रक्षा में सावधानी। ११ बेखबर।

री समाचार पूछ्या । सांझ पड़ी, रुसनाई[1] हुई । जगदेव हजूर छै । रात चार पहर गई । मिथराव दरबार बड़ा कियो[2] । नै आप जाड़ेची री ड्योढ़ियां[3] आया । तरै जगदेव साथै हीज छै । मिथराव ओर हजू-रियानै देखै तो जगदेव ऊभो छै । तरै राजा कह्यो, कंवरजी थेही पधारो । जरै जगदेवजी कह्यो, महाराजासूं एक अरज पूछणी छै, जो थाहरनै कहो तो अरज करूं, नहींतर डोढी बैठूं छूं । मिथराव कह्यो, किसी अरज छै । जगदेव कह्यो, मास ७ हुवा जाड़ेचीजी प धारिया नै । तठा पछै सरीर मांहि उनमाद[4] नहीं, सुख्यालो नहीं । ति री हकीकत मोनैं फुरमाईजे । तरै मिथराव निसासो[5] मेलि नै कह्यो कंवरजी, दुख छै तिको तो माहिलो सरीर जाणे छै, कह्यांसूं हासो हुवै नै गरज पिण किणहीसूं सरै नहीं, नै राज म्हारा जीवरा दातार छो, नैं म्हारे भलो परताप दीसै छै सो राजरो उपगार छै । ये पूछो छो तो इण ठौड़े दाड़िमरा बीड़ा[6] छै, दोढी मांहे ढोलियो ज्यूं-रो-ज्यूं निजर आवै छै, दुख छै तिको देख्यां रहसो । इसो कह राजा मांहे पधारिया, नै जगदेव दाड़म नै चंबेलीरा बीड़ा मांहि बैठा । हाथ मांहि खड़ग ढाल कनै छै । तिसै आधीरात बीती । राजा पोढिया था नैं काल़ो भैरूं लूंगी[7] रो लंगोटो पहिरियां केस तेल मांहि गरक कियां[8], सिंदूर लागो, गुरज[9] हाथ मांहि लीधां, चोखा ऐराक[10] मांहि

---

१ रोशनाई, रोशनी । २ बड़ो कियो (मुहा०)=समाप्त किया । ३ जनाने महल का दरवाजा । ४ उमंग, उल्लास, प्रसन्नता । ५ निश्वास, दुःखसूचक दीर्घ श्वास । ६ वृक्ष, दरख्त । ७ मोटा लाला कपड़ा । ८ सने हुए । ९ अस्त्र विशेष । १० अर्क, शराब ।

मेमंत[1] हुवौ थको सिघराव छै निठै जाय नै हाथ पकड़ नीचौं नाखि पागा नीचे देनै जाड़ेची कनै भैरूं पोढ रह्यौ। जगदेव सारो विरतंत दीठो, मन मांहे जाण्यो सिघराव इणरो किणनै कहै । न्याय, लोह मांस कठाथी चढ़ै नै म्हारा साहिबनें पूरो अचैन छै । इसो मनमें जाणी नै खड़ग हाथ मांहे झालि सिंहरा सा पांचड़ा[2] भरिनै ढोलिये कनै जायनै उलाल दीधो नैं भेरूंनें हेठो नाख्यो। सिघरावने कह्यौ, उठ बैठा हुवौ नै भैरुंसूं दाकल[3] कीधी । पर-घर-पैसण चोरटा[4], सावचेत[5] हुइ, हूँ जगदेव आयो। तिसै भैरूं नै जगदेव बथो-बथ[6] हुवा। तिकै करैक तो भेरूं ऊपरां, करैक[7] जगदेव ऊपरां। यूं करतां पाछिली रात घड़ी तीन रही। तरैं भैरूं बलहीण हुवौ नैं भैरूं कूका किया[8], मनैं छोडि, आज पछैं इण महिल कदे नाऊं। इणरो सुणतसमों जगदेव ऊभौ हुवौ नै लातरी साथल[9] मांहे दीधी। तिका साथल भैरूंरी तूटी। नै भैरूं हेला टसका करतां[10] मांहे जगदेव आपरा कछणा[11] सूं भैरूंनें अपूठी मसकां[12] बांधियो नै थिरमां[13] मांहे गांठड़ी बांधि कांधौ करि[14] नै आपरैं डेरे ल्याया। तिको डंडो[15] तहखानो थो, तिण मांहे घैसाण आडा ताला जड़िया । प्रभातरा जगदेवजी दरबार सिधाया, अरैं गांव हजार दोय वलैं दीनां।

---

१ मदोन्मत्त। २ मोट कदम। ३ ललकार। ४ दूसरे के घर में घुसने वाला चोर। ५ सावधान। ६ भुजाओं से भुजाएं भिड़ाकर, कुश्ती। ७ कभी। ८ चिल्ला उठा। ६ जंघा । १० ज्यों त्यों, कठिनाई से, हांफता हुआ। ११ रस्से में। १२ पीठ के पीछे हाथों को बांधकर। १३······(?)। १४ कांधे पर डाल कर। १५ गहरे।

इमां भांति दिन मास बीता। पामंडरे[1] अखाड़े काळो भैरूं ना
तरे मानियो इमेंमा धर जमा पाटण जगदेवदिमो जावे मनो, हि
रहनो नहीं, पोहो हुयो बंधमांहि पड़ियो छै। तद काळा भैरूं हुड
ने मिनखलोक आय भाटण[2]रो रूप करि आई। निका का
डोंगी[3], मोटा दांत, दूबळी, घणी डरावणी, माथारा लटा[4] विखरि
घणां तेल मांहि घचनी, धवळा केस, माथे निलाड़ सिंदूर थेथड़ियो
थको, लोवड़ी[6] काळी, काळो घाघलो[7], कांचली तेल मांहि गरका
थकी, उघाड़े[8] माथे कीधां, हाथ मांहि त्रिसूळ कालियां दरबार आई।
तद सिधराव कहै—

कवित्त

सिधराव कहै सुख बैण कर, कर सीकोतर डाकिणी
प्रतक्स आवै जगड़ कर कै छलाय दै तणी
इसा मानव न थायै, सुणी नह दीठी केण
रूप असंभ्रम दिखाइ, हैरान थयां क्यां कंणी
छूटै आवत नयड़ी, जगदेव देप हरपित कहै
जाचण·································डाइण भद्रणी।[9]

---

१ घामुराडा, चण्डी दुर्गा। २ भाटिनी। ३ लम्बी। ४ केशपाश। ५ चर्चित, लिपा हुआ। ६ ओढने का ऊनी वस्त्र। ७ मोटे कपड़े का गँवारू लहँगा। ८ खुले सिर। ९ कवित्त का अर्थ—सिद्धराव मुख में ये वचन लाकर कहते हैं-क्या है-सिकोतरी (प्रेतिणी) है या डाकिन। प्रत्यक्ष में ऐसा प्रतीत होता है मानो कहीं से झगड़ कर आरही है। अथवा

तिसे दरबार उघाड़े माथे आई । सिद्धरावनें डावा हाथसूं प्रह्माव[1] दीधो । तरै जगदेव सामों देखि मूंछां ऊपरि हाथ फेरियो । जदि कंकाली[2] माथा ऊपरी पलो[3] लीधो नै जीमणा हाथसूं प्रह्माव दीधो । तरै जगदेव गिंदवो[4] आघो कोनों । तिण ऊपरां कंकाली बैठी । राजा जाणियो, म्हारो दरबार मोटो नै हूँ पिण सिद्धराव जैसिंघ छूं । तिणसूं माथा ऊपरि वड़[5] लीधो छै । इतरै जगदेव सीख[6] कीधी । तिको डेरै आयो । तरै लारै रावां पूछियो, कुण ग्रन्न[7], कठै वास । तरै कंकाली कह्यो, भ्रन भाट, नवखंडकेरा राजा[8], सती असतिरी, दातार, भूमाररी निधि[9] करती फिरूंछूं । तरै सिधराव कह्यो, थे उघाड़ै माथे ऊपरि वड़ किणनें देखि खैंच्यो नै जीमणे हाथसूं जगदेव नै प्रह्माव दीधो, तिको वड़ किणनें देखिनै खैंच्यो । कंकाली कह्यो, जगदे पंवार सामो देखि मूंछा हाथ फेरियो । तरै हीज जाण्यो, इण सरीखो दातार नहीं । धरती मांहे नै थारै दरबार मांहे इण सरीखो दातार कोई नहीं । तिणसूं लोवड़ीरो वड़ माथा ऊपर खैंच्यो । इमो

छल कपट से रूप बना कर आई है । मनुष्य तो ऐसे नहीं होते; न तो सुना ही और न किसी ने देखा ही है । यह अपने अद्भुत रूप को दिखा कर कइयों को हैरान करती है, कइयों को देख कर कँपकँपी छूटती है । नजदीक आते देख जगदेव ने हर्षित होकर कहा, यह तो कंकाली है जो राजदरबार में याचना करने आई है ।

१ आशीर्वाद । २ दुर्गा की पूजा करने वाली चारणी । ३ पट, वस्त्र । ४ गद्दी । ५ ओढ़नी । ६ आज्ञा मांग कर प्रस्थान किया । ७ वर्ण, जाति । ८ हे नवखंड के राजा । ६ मैं सती स्त्री, दातार और वीर श्रेष्ठ की खोज में·······।

इसो कहि खड्ग काढि सीस उतारियो। तरै फुलमादे राणी थाल सालू[1] सूं ढाकि नै पोळी आई। तरै कंकाली कह्यो :—

कवित्त—छप्पै

किमें असुधो कज्ज, किनां निद्रां भर सोयो
के हुवौ चित्तभंग, किनां रावां दिस जोयो
हूँ कंकाली भट्ट, सती असती नर पेखूं
स्वर्ग मर्त्य पाताल, देव नर नाग परेखूं
विक्रम भोज पूठै मही, जस ज्यारो मन भावियो
कंकाली कहै फुलमादि नै, (थारो) रावत के मन भावियो ॥[2]

तरै फुलमादे बोली :—

कवित्त

राजदेव अवतार, भमरि करि बास समत्थं ।
तिणनै अप्पणा दान, वहा दीजे यहु हत्थं ।

---

१ थाल ढकने का वस्त्र। २ कवित्त का अर्थ—कैसा असम्भव कठिन कार्य किया है, अथवा आज पेट भर नींद सोया है, अथवा पागल तो नहीं हो गया, या राव से स्पर्धा करके ही ऐसा किया है। मैं भट्टिनी, कंकाली हूँ और सत्य और असत्यवान नर की परीक्षा करती हूँ—स्वर्ग, मर्त्यलोक और पाताल के देव, नर, नागों की परीक्षा करती हूँ। विक्रमादित्य भोज के बाद में जिसका यश मेरे मन भाया है, वह तेरा पति है जो राजा के मन में भी बसा हुआ है। ऐसा कंकाली ने फुलमादे को कहा।

सिद्धराव जैसिंघ कहा तसु होड कराई
नह पूजै मंडली, तो कहा पंमार गिणाई
इम जाण दान मो हत्थ दे, परगट थाल पठावियो
फुलमादे भयो कंकालसूं, रावत मो मन भावियो ।[1]

इसी बात करि थाल उघाड़ै तो हड़-हड़[2] हँसनो देखिनैं मुलक्तो माथो पाग मोत्यां समेत सीस देखिनैं कंकाली हँसी । थाल उरो हाथ मांहे लीधो नै कह्यो, थारो सुहाग भाग चूड़ो कायम[3] । इसी आसीस दे बोली, धड़ ऊपरा माखो वैसणरो जतन राखिज्यो, सिधरावनें हराय मूंडो मूंढो[4] कराय आवूं छूं । जगदेव ज्यूं-रो-ज्यूं जीवनो करस्यूं, पृथ्वी माहें अमर नांव करस्यूं । इतरो भलावण[5] दे थाल लोवड़ी[6] सूं ढकने चाली । विचै मारग मांहे जगदेवरो भाणेज सगतसिंह खीची छै । जिणरी पोल आघे थाल लीधा कंकाली आई । तरै सगतसिंह खीची कह्यो, देखां मामेजी कासूं दियो । तरै थाल खोल

---

१ क्षत्रियों में देवता के अवतार (सिद्धराव) सामर्थ्यवान राजा के पास रह कर उसी को अपने हाथों से बहुत सा दान करना ठीक नहीं। परन्तु अब सिद्धराव जैसिंह उसकी क्या बराबरी करेगा ? यदि क्षत्रियं की मण्डली में पूजा न जाय तो पँवार कैसे गिना जा सकता है ? ऐसा जान कर मेरे हाथ थाल देकर भेजा है । फुलमादे कंकाली से कहती है, यह रावत (मेरा क्षत्रियकुलभूषण पति) मेरे मन भाया है । २ खिलखिलाता हुआ । ३ सौभाग्य, भाग्य और चूड़ा सुरक्षित रहे । ४ खण्डित मस्तक । ५ सिखावन । ६ ओढ़नी ।

नै दिखाल्यो। तरै सगतसिंह एक आंपदिसी रूपो[1] छै । तरै देखती आंख थी तिका आंगुली घालिनै काढि थाल मांहे मेली नै कह्यो, मामांजी होड नहीं, पिण इतरी दुगाणी[2] म्हारी ही ले पधारो । नेत्र ले लोवड़ीसूं ढकिनै दरबार आई । आगै जैसिंह देखै छै, जाणें ही ल्यावे त्यूं ल्याई। देखिनै राव बोल्यो, कंकाली ल्याई तो थाल मांहीज, म्हानै दिखावो ज्यूं चोगुणों द्यां। इतरो कह्यां लोवड़ीरो वड़ ऊंचो कियो, देखै तो जगदेवरो सीस छै, नै पाखती नेत्र झलझलाट[3] करै छै । रावनें कांपणो छूटी । कंकाली कह्यो, हिवै चौगुणों दान दे । तिको एक तो थारो सीस, पटराणी, पाटवी कंवर, पाटवी घोड़ो यां च्यारां रो सीस उतारि नै मौनें दे नै च्यार नेत्र दे । राजा उठि मांहे राणी कनै गयो। राणीनें कह्यो, जगदेव ऊपरि[4] नांम करै छै। रांणी कहै, थीजी होड हुवै, पिण सीसरो होड नहीं। ऊपरां नाम हुवौ भावे नीच नांव हुवो। औ वचन संभालि नै कंवरनें आय कह्यो, कंवर ही नाकारो कियो। तरै बाहिर आय कंकालीनें कह्यो, म्हारो सीस नैं घोड़ारो सीस त्यार छै। भली बात। हाथ सूं उतारिने द्यो । तरै राजा कह्यो, थे उतारिल्यो । तरै कंकाली कह्यो, हूं कोई मांणस-खाणी[5] न छूं, भिच्छक छूं, दीधो लूं छूं। राजा कह्यो, औ तो काम म्हांसूं न हुवै। तरै कंकाली बोली, एक काम करो, थांरो सीस थगस्यौ[6], ऊंचा मालिये चढ़िनै हेलो[7] करो, जगदेव पंवार जीत्यो, हूं हारियो। इसो सातवार कहो नै थाल नीचै सातवार नीसरो। राजा कह्यो, भली बात। राजा

---

१ निस्तेज, काना। २ नजर, भेंट। ३ झलझल, देदीप्यमान। ४ बढ़ कर। ५ मनुष्यभक्षिणी, राक्षसी। ६ छोड़ा। ७ घोषणा।

सानवार थाल़ नीचे निसरियो। पाछो थाल़ो ले जगदेव री पोल़ आई। सगतसिंह एक आंख दीधी तिणनें दोनूं आंख दीधी । तिणरे दोनूं ही आंख्यां हुई नै घड़ ऊपरां सीस चाढ़िनै अमीरो छांटो नाख्यो। जगदेव खंखारो करितो उठ बैठो हुवो। नै दांन भैरूं छूटणरो मांग्यो। तरै काल़ा भैरूंने छोडयो । तठा पछै खोड़ो भैरूं कहीजै छै । पछै जगदेवनै घोड़ो चाढि साथे कंकाल़ी होयनें सिद्धरावरै दरबार आया। मुजरो कियो । तठे राजा कह्यो, मात, हिवै म्हारे कंवररो, राणीरो, गोड़ारो सीस ल्यो, थांरी दाय आवै[1] तो परमह[2] सुधां सीस ल‍ ‍ाजा सीस उतारणरी त्यारी कीधी । तरै कंकाल़ी कह्यो, उवा व‍ वेल़ा गई[3] । हिवै ठंडा पाणीसूं जावो मती[4] । कंकाल़ी कहै—

कवित्त

जो न भांण ऊगमै, जो नवि वासग धर मलै
राम बांण न महै, करण पारथो जु मुलै
ब्रह्मा छोड़े वेद, पवन जा रहै पुल़ंतो
चन्द सूर ना वहै, रहै किम अमी भरंतो
पंमार नाकारो नां करै, मेर-समो जाको हियो
कंकाल़ी कीरति करै, सीस दान जगदे दियो ।[5]

---

१ पसंद आवे । २ कुटुम्बजन । ३ ...
जान मत दो । ५ चाहे भानु न उदय
करना छोड़ दे, चाहे रामचन्द्र समुद्र क‍
चढ़ावें, चाहे कर्ण अर्जुन को परास्त कर
दें, पवन बहना छोड़ दे, चन्द्र और सूर्य

दूहा

संवत इग्यारह इकांणवे, चैततीज रविवार
सीस कंकाली भट्टनें, जगदे दियो उतारि ॥

पछे कंकाली जैसिंघ कनै ही राखी। जिण कंकालीरै सात बेटी छै, सो कनै छै। आप कंकाली रावणखंडो[1]। तिण कंकाली इसो विरुद्[2] कीधो।

सिद्धराव जैसिंघजी, आप सोळंखी, तिणनें छिन्नू हजार गाँव हुआ। पोरसो[3] एक कोटार माँहि हुवो। संवत ११३३ तपिया, नै कोटी माँहि गंगा बहै। महारुद्ररो अवतार हुवो। सिद्धरो पिण वर थो, तिणसूं सिद्धराव कहाणो। इसो सिद्धराव हुवो। भीम भार्या, निर्मलरै पुत्र। कर्णराजा भार्या, मिळणरै पुत्र। सिद्धराव जैसिंघदेव हुवो, तिण मालवापति, नरवरराजानें बांध्यो, मोहपक पाटणधणी मदभ्रम राजानें जीत्यो। जिणरै ३२ राजकुळी[4] सेवा करै। संवत् ११६६ सिद्धराव जैसिंघ वैकुण्ठ गया। तिपराव जैसिंघदेरै प्रधान कुशल मंत्री साजनरै हुवो।

[इति श्री जगदेव पंवार री वार्त्ता सम्पूर्ण]

और चन्द्र में से अमृत झरना बन्द हो जाय, परन्तु जिसका मेरु के समान अचल हृदय है, ऐसा पँवार वीर जगदेव याचक को कोरी नहीं कर सकता। कंकाली कीर्तिगान करती है कि जगदेव ने शीश-दान किया।

१ रत्न-खचिता, टूटे हुए छोरवाली । २ प्रशस्ति, यश । ३ अद्वितीय पौरुष वाला । ४ क्षत्रियवंशी ।

जगमाल मालावत

न गर महेवै रावळ मल्लीनाथजी कुंवर जगमालजी राज करे। तिकै रावळजी तो पीर[1] हुवा, तिके भजन समरण मांहे रहै। राज जगमालजी करै। तिन समीयै अहमंदाबादरो पतिसाह महमदबेग राज करै। तिणरै बेटी गींदोली छः। तिण पातसाहरै उमराव एक हाथीखांन पठांण, तिको मोटो उमरांव, मुनसुबदार। तिणनैं पाटनरो सोयो[2] दियो। तिन निपट करड़ो[3] अमल[4] कीयो। तठै कोस तीस पाटणथी[5] सोभतो नगर। तिणरो धणी तेजसी तूंवर, तिको धाड़वो[6]। तिण ऊपरां अचाचूक[7] रो हाथीखांन असवारी लियां आयो। तठै तेजसी तूंवर रजपूत सौ तीन (३००) सूं बाज नै[8] काम आयो। हाथीखांन गांव लूंटियो। तेजसीरी अंतेवर[9] भटियाणी थी। तिणरै बेटी बरस १३-१४ मांहे, तिका वेढ[10] हुंतां मांहे बेटी ले नीकळ गई। तिका कुसळे पड़ी[11] पीहर गई, नै पठांण गांव मारि नै पाछो पाटण गयो। नै कोई नारायणजी रा चक्र[12] थी तेजसी तीन से रजपूतां

---

१ सिद्ध पुरुष। २ सूबा। ३बहुत कठोर। ४ शासन। ५ अपादान का चिन्ह, पाटण से। ६ डकैत। ७ अचानक। ८ लड़ कर। ९ स्त्री, अन्तःपुर वासिनी। १० लड़ाई। ११ सुरक्षित अवस्था में। १२ दैव संयोग से।

सुधो भूतरी गति पाई। तिको आपरै गाँव असवारीरी जलूस करि आथण[1] रो आपरै मेहलां आवै, वड़ी मजलिस करि हरहमेस आवै। गाँव सूनो पड़ियो छः। दिनरै पोहर पाखली[2] रा गावांरा गोरी[3] बैसे, रमे खेलै नै गायां चरावै।

तिण समीयै एकै दिन एक योगीसर आयो नागो; गोरी बैठा देखि मेंलां मांहे आयो नै झरोखे बैठो। तिसै संम्यारा गायां ले नै गोहरी[4] घरांनै घिरिया। तरै जोगीसरनै गोहरयां कह्यो, बाबाजी किणही गाँव जावो परा, औ महल तो सूना छः नै रात पड़ियां मेंलां रो धणी तेजसी तूंवर आवै, जिको भूतरी गतिमें छैः। थे धोको खास्यो। पछै थे जांणो। तरै जोगेसर सुणि नै मन मांहे विचारियो, देखां भूतमाया किसीएक हुवै छः। तरै महिल मांहे हीज आसण कीधो।

रात घड़ी दो एक गई, इक डंको सुणियो। तरै जोगेसर जांण्यो कोई सिरदार आवै छैः। तिसै हाथीरी बीरघंट[5] सुणी, तुररो सहनाई सुणी, घोड़ांरी कलहल[6] सुणी। चराकां[7] सौ एक मूंढा आगै हुवां, चँवर दुलतां, हाथी माथै बैठो सिरदार दीठो। तिसै कैइक असवार महिलां आया। तिसै फरास आय मेंलां आगै चौक मांहे जाजम दुलीचा[8] बिछाया, गिलमां बिछाई, तकिया लगाया। तिसै तेजसीजी गादी तकियां आय बैठा। जोगेसर तमासा देखै छैः। तिसै कैइक

---

१ सन्ध्या, सूर्यास्त के समय। २ आस-पास के। ३ ग्वाल, गोपालक। ४ गोरी (ग्वाल) का रूपान्तर। ५ हाथी के शृंगार की बड़ी घंटी। ६ कोलाहल। ७ चिराग। ८ गलीचा।

चाकर महिल मांहे डोलियो पिछाणवनैं आया । आगै जोगेसर आस
मांगां बैठो छैः । जिकै महिलायाड़ियां[1]रा लक्खण, जिणां जोगेस
आसण कोपां बैठो छैः जिकै महिलायाड़ियां छटावणो मांड्यो नैं रोस
करणो मांडो[2] । पिण जोगेसर आसण छावै नहीं । तिये को सब
तेजसीरै कानै पहिंयो नैं कह्यो, किण्नैं स्यूं[3] कहो छो । चाकर बोल्या,
एक कोई जोगी सरभग्गी[4] मांणसियो[5] बैठो छः । तरै तेजसी कह्यो,
कोई इण जोगेसरनैं क्यूं ही कहो मती । जिसैं तेजसी साद[6] दियो,
बाबाजी, उरा[7] पधारो, अठे बातां करां । तरै आसणसूं उठि
तेजसीजी कनै बैठो । आगै डावीनै जीवणी मिसल रजपूत ढालांरा
कड़ा देनै दरबार बैठा छैः । रसोड़ादार रसोई लागा छैः । चरू कड़ाहा
चढाया छैः । खेह दीधी छैः । रोटा खेह मांहे दाबै छैः । मांस, चूटा,
सोहिता हुवै छैः । तेजसी नैं जोगेसर बातां करै छैः ।

जिसे आधी रातरी वलि[8] तयार हुई नैं पांतियो[9] दीधो, रूपा[10]रो बाजोट[11] बिछायो । तेजसी तीन से रजपूतांसूं पांतियै बैठा, थाल दीधा । तिसै जोगेसरनैं पिण आपरी पाखती बैसाण्यो, पतर[12] मांहे परूसगारो[13] कियो । मनुहारे मनुहारां जीमिया । तठै जोगेसर जाण्यो, कै भूत माया छैः, कि जांणीजै जीमण कांई छैः । यूं जांण हाथ खांच बैठो । तेजसी कह्यो, बाबाजी, अरोगो[14] क्यूं न

१ महल में काम करने वाले नौकर चाकर । २ करना शुरू किया ।
३ । ४ सरभंगी, वीतराग । ५ मानव योनि का । ६ शब्द । ७ इधर,
का भोजन । ९ पंक्ति । १० चांदी । ११ पट्टा, चौकी ।
परोसना । १४ भोजन करो ।

छो। जोगेसर कह्यो, अबार तीजै पोहर रोटी खाई थी, सो गाढो[1] धाको[2] छूं। इणरो कहि पनर टक मेल्यो। तिसै घड़ी दो मांहे सगलो साथ जीमियो। चलू[3] कीया, पांन, लूंग, मुखवास[4] दीधा। तिसै तेजसी ऊंचे ढोलिये पोढण सारू[5] उठियो नै जोगेसरनै पिण कह्यो, थे पिण ऊंचा आय बैसो। तरै जोगेसर ऊंचो आसण मांड तेजसीजी कनै बैठो छः। तठै तेजसो वातां करै छः। तठै कह्यो, बावाजी, एक म्हारो सन्देसो तो मोनै निवाजो[6]। तरै जोगेसर कह्यो, बावा, तुम कहो। तेजसी कहै छः—हूं इण गांव नै इण मैलांरो धणी तेजसी तुंवर छूं। तिको हाथोखांन पठांण ऊपरां आयो, वेढ कोधी, धार तीरथ[7] करि तीन सौ रजपूतांसूं खेत पड़ियौ[8], अगति गयो। प्रेत तीन सै हुवा, तिकै अै रजपूत थे दीठा हीज छै। तद मैं श्रीपरमेस्वर जोरै दरबार पूछियो, म्हाराज, म्हे खत्रीधर्म धारातीरथरी मौत पाई, नै भूतरी गति दीधी, तिको किसै प्रायछित[9]। तरै कह्यो, असुररै हाथ मौत पाई, तिणसूं अगति लाधी। अबै थारी बेटी परणाय कन्याफल[10] ले, तो वैकुंठ आवै। तिको बावाजी, म्हारै मिनखजमारा[11] री बेटी भटियाणीरै पेटरी नीपनी[12] मामरै छै, तिका परणै कुण, तिणसूं औ सन्देसो कहणो। नगर महेवै राठोड़नाथ रावल मलीनाथजी कंवर

---

१ खूब। २ छका हुआ, तृप्त। ३ भोजनान्त में आचमन। ४ मुख शुद्धिकारक द्रव्य। ५ के लिए। ६ कृपा करो। ७ रणक्षेत्र में वीरतापूर्वक युद्ध करके सुगति-लाभ करने को 'धारा तीरथ' कहते हैं। ८ रणक्षेत्र में पड़ा। ९ पाप के फल से। १० कन्यादान का पुण्य। ११ मनुष्य योनि की। १२ पैदा हुई।

देस-रजपूत थो, तिण तुरकसूं वेढ करि कांम आयो। तिके सुणां छां भूति गति पाई। जोगेसर कह्यो, तो बाबा, तेजसी का संदेसा है। तेजसी कही तिका नै आपरी बाघू बाधु[1] पेटसूं[2] सरव कही कै म्हौ संदेसो कह्यो छः;—बड़ा सगा छो, म्हारी बेटी भामारै छः; तिको बडो रजपूत छः तो मौनै गति मेलज्यौ[3]। बाई परणियां म्हारी गत होसी। इसी बात सुण जगमालजी मन मांहे राखी नै जोगेसरनैं आटो दिरायो नै सीख दीधी।

अबे दिन ५-७ नै नवलखै घोड़े पिलांण मंडायो। जगमालजी इकेला ही ज असवार हुआ। तिकै दिन घड़ी एक थकां महलां पोहता-सोभटे पोहता। घोड़े सूं उतरिया, अमल कीधा नैं टेवटा[4] लीधा तितरै घड़ी एक दो गई नै एक डंको सुणियो, घोड़ां री पोड़ि[5] होकार[6] सुणिया। ज्यूं जोगेसर बात कही थी, तिम हीज दीठी। तितरै कंईक भल-घोड़िया[7] आगे आया। त्यौं जगमाल मालावतनैं आगे दीठा था, त्यौं जाय बधाई दीधी। तरै तेजसीजी बहुत राजी हुआ। इतरै तेजसीजी पिण आया। जुहार[8] हुआ। जद तेजसी भूतांनै पिण हुक्म कीनों, जावो बाईनैं लेय आवो। नै जगमालजीनै विछायत करि पधराया। तिसै रात घड़ी चार आतां बाईनै ले नै आया। विचें आवतां बाईनै भूतां सगली बात कही—थारो बाप तोनै परणावसी जगमाल मालावतनै, पछै गति

---

१ अधिक, बढ़ा कर बात। २ अपनी ओर से। ३ सद्गति करवाना। ४ चौपारि से निवृत्त हुए। ५ घोड़ों के खुरों की ध्वनि। ६ कोलाहल। ७ अच्छे घोड़ों के सवार। ८ मिलन के समय नजर, न्यौछावर।

ऊभो रहे, तिणनें लुंण हराम छः। तद रजपूतां प्रमांण कियो। नै निसे तेजसीनें पालखी उतरी, निको रांम रांम कहि नै तेजसी वैकुंठ गयो। तद जगमालजी भूतां मांहि मुदो[1] थो उमराव, तिणनें कंवर कह्यो, कोस ५० घोड़ो खड़ियो[2], निको आलुस करै छः, तिणमूं नगर महेवे पोहचायो जोईजे। तदि च्यार भूतांनें साथे दीधा। निके पोहचाय नें आया।

बाग मांहि राते रह्या। दिन ऊगां बागवान साथे भोपति हुल[3] परधान[4] नै कहायो, परणीज आया छां, पेसारो, साम्हेलो[5] लीजो। तरै नगर बाजार ओछाड़ि[6] सुखपाल ले नै दास्यां आई। निके घणा रली-रंग[7] करता दरबार आया। घणी खुस्याल[8] हुई। गोठां[9] करावै। ब्याहरी बात सगली रजपूतनि कही नै सिरपाव केसरिया कराया, आपकां[10] नै दुगाणी[11] दीधी। घणा तरंग[12] मांहि रहै छः।

तिण समीये हाथीखान पठांण सुणी, महेवारी तीजणियां[13] निपट सख्री[14] छः। तिणनें देखणरो कोड[15] घणा छः। पिण जगमालजी

---

१ अगुआ। २ चलाया। ३ मेवाड़ के गुहिलोत वंश की प्रधान ४ शाखाओं में से एक शाखा "हूल" भी है। यह प्रधान भोपति हुल शाखा का राजपूत था। देखो, नैणसी की ख्यात ना० प्र० सभा) पृष्ठ ७७। ४ प्रधान, मन्त्री। ५ अगवानी करना। ६ धार करके। ७ रंग रलियां। ८ खुशी, आनन्द-विनोद। ९ खुशी के उपलक्ष में भोज। १० याचकों को। ११ दाम, बख्शिश। १२ मन-मौज। १३ चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन गणगौर का त्यौहार मनानेवाली और गौरी का व्रत रखने वाली कन्याएं। १४ उत्तम। १५ लालसा।

मिलसी। तिण बाईनै मेलो मांहे बेसाणी। भूतणियां आई। ब्याह री आरी-कारी[1] मांडी, पीठी[2] कीधी, पीठीरा गीत गाया, घेर[3] चौंरी[4] बंधाई। राति पोहर १॥ जातां फेरा[5] लीधा, मौड़[6] बांधिया, कर-मूँकावणी[7] री वेला तेजसी कह्यो, कँवरजी राजरे जोईजे[8] तिको मांगो। तद जगमालजी जाण्यो, मोनै परणाई तिका मनुष्य छः किना[9] भूतणी छः, इणरी निपै[10] करणनै कह्यो, एक वार रजपूतांणीसूं दोय वात करूँ, पछै मांगूँ। तद्दि भूतणियां मक्रिन्यों[11] गावती ऊँचा मालियै गया। तठीं जांणी तो, पिण बूझिया, थे मिनख छो के भूत छो। तरे तुँवर हाथ जोड़ी मुजरो करि नै कह्यो, हूं मिनख छूं, मामारे घरे थी। तठासूं ल्याय नै परणाई छः। इणरो रजपूत छूं; घणा आटा-नाटा[12] छः, कोई सबलो[13] काम पड़े वेढ-राड़ि[14] रो, तठे रावला[15] रजपूत मदत मांहे आवे। और म्हारे कांई कमी[16] नही। तरे तेजसी तीन से रजपूतां नें मेला[17] करि कह्यो, जिको म्हारो लूंण-पाणी[18] खाधो छः, तिको जग-मालजी याद करे, तेजसीरा रजपूतां वेगा आवज्यो, इणरो कह्यो

---

१ लोकाचार। २ उबटन। ३ विवाह-वेदी में सौभाग्य-कलश। ४ चौंरी अथवा विवाह-मंडप। ५ भाँवरी। ६ वर का मुकुट। ७ वर-वधू का विवाह के उपरान्त कर-ग्रहण छुड़वाने का लोकाचार। ८ चाहिए, आवश्यकता हो। ९ अथवा। १० तलाश, खोज। ११ विवाह का गीत। १२ कष्ट और आपत्ति के समय। १३ कठिन कार्य। १४ युद्ध अथवा झगड़ा। १५ आसरे। १६ कमी। १७ एकत्रित। १८ नमक-अन्न, अन्न-जल, दाना-पानी।

ऊभो रहे, तिणनैं लूंण हराम छः। तद रजपूतां प्रमांण कियो। नै तिसैं तेजसीनैं पालखी उतरी, तिको रांम रांम कहि नै तेजसी बैकुंठ गयो। तद जगमालजी भूतां मांहि मुदो[1] थो डमराव, तिणनैं कंवर कह्यो, कोस ५० घोड़ो खड़ियो[2], तिको आलस करै छः, तिणसूं नगर महेवै पोहचायो जोईजै। तदि च्यार भूतांनैं साथे दीधा। तिके पोहचाय नैं आया।

बाग मांहे राते रह्या। दिन ऊगां बागवान साथे भोपति हुल[3] परधांन[4] नै कहायो, परणीज आया छां, पैसारो, साम्हेलो[5] लीजो। तरै नगर बाजार ओढ़ाड़ि[6] सुखपाल ले नै दास्यां आई। तिके घणां रली-रंग[7] करतां दरबार आया। घणी खुस्याल[8] हुई। गोठां[9] करावै। व्याहरी बात सगली रजपूतनि कही नै सिरपाव केसरिया कराया, जाचकां[10] नै दुगांणी[11] दीधी। घणा तरंग[12] मांहि रहै छः।

तिण समीयैं हाथीखांन पठांण सुणी, महेवारी तीजणियां[13] निपट सखरी[14] छः। तिणनैं देखणरो फोड[15] घणो छः। पिण जगमालजी

---

१ अगुआ। २ चलाया। ३ मेवाड़ के गुहिलोत वंश की प्रधान ४ शाखाओं में से एक शाखा "हुल" भी है। यह प्रधान भोपति हुल शाखा का राजपूत था। देखो, नैणसी की ख्यात (ना० प्र० सभा) पृष्ठ ७७। ४ प्रधान, मन्त्री। ५ अगवानी करना। ६ पार करके। ७ रंग रलियां। ८ खुशी, आनन्द-विनोद। ९ खुशी के उपलक्ष में भोज। १० याचकों को। ११ दान, बख्सिस। १२ मन-मौज। १३ चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन गणगौर का त्यौहार मनानेवाली और गौरी का व्रत रखने वाली कन्याएं। १४ उत्तम। १५ लालसा।

जाय पाटण घह्यो । तरै सावणरी तीज[१] ऊपरां चढियो तिको पाछिले पोहर घड़ो दोय दिन थकां महेवै तीज मिली छः, तीजणियां लहर[२] गावै छः। तिसैं हाथीखांन हजार पांच (५०००) घोड़ांसूं आयो, तिको सात-बीसी[६] साईन्यां[७], डावड़ी[८] वरस १५।१६ मांहे थी। तिके पकड़ि नै पाछो हीज बूहो[९] । महेवारा लोकांसूं कूं ही ज समियो[१०] नहीं। तिसैं रात आधी जातां मांहे जगमालजी बैर काढि नगर आया। लोकां वाहर घाली[११] । सगली बात सुणी, पिण जोर कोई चालै नहीं। महेवारै झाड़ां लेद लगाय[१२] नै कूंस[१३] ले गयो। तरै जगमालजी पाघ खोलि लपेटो बांध्यो। वलै आखड़ी[१४] लीधी, कपड़ा धोवणा, दाढी सुधरावणी मीयांसूं आंटो[१५] काढियां करिस्यां। इसी बात मियां सुणी, तरै धूजियो[१६] । तद हजार सात-

---

१ भय। २ वैर-प्रतिशोध के निमित्त। ३ धावा किया। ४ राजस्थान में दशहरे के त्योहार के बाद, चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन गणगौर का त्योहार बड़े समारोह और आनन्दोत्सव के साथ मनाया जाता है। यह विशेषतः कन्याओं का त्योहार है। इसे "तीज" कहते हैं। ५ राजस्थान का गीत विशेष, सारंग राग का भेद। ६ एक सौ चालीस (७×२०)। ७ सम वयस्का। ८ कन्याएँ। ९ चला गया। १० समझा नहीं, बन पड़ा नहीं। ११ बाहर घाली (मुहा० =फरियाद मचाई। १२ झाड़ां लेद लगाय (मुहा० = मान मर्दन करके, (वृक्षों पर अपवित्र पदार्थ लगा कर)। १३ कौन कर। १४ अक्षय प्रतिज्ञा। १५ बैर। १६ कांप उठा।

आठ पपरैत[1] तबलबंध[2], सेर-जुवान[3] सीपाही राखिया। कदेक बारै चढ़ै, तद ५०० घोड़ची[4] सुतरनाल[5] रामचंगी[6] लियां चढ़ै। इसी भांत मास दोय बीता। तरै भोपत हुल जाणियो, राजा रा वचन, वलै आंटा नीकलता नीकलै, नै आखड़ी पिण टणकी[7] घाली। तदि घोड़ी ब्यावर[8] अढाई सौ पालसै[9], तिण मांहे २५ बछेरा ऐराकी[10] वापता[11]। जिण मांहे निणरा पेटग ऊपना[12] टलाया[13]। त्यांनै रातब[14] देणी मांडी। दोनां ही टंकां[15] सेर दोय घीरत[16], रातब मांडी। धपाऊ[17] धांन दीजै। तिकै बरस एक तांई अपटां[18] चराया। तिकै घोड़ांरी तलियां[19] घीसूं भरीज गई[20]। तठै टालका[21], आपरै समझा[22] रा,साखेत[23], मोटा पदायत उमराव त्यांनै बछेरा फेरणनै सूंप्या[24]। तिकै पचीस असवार सार्थे फेरै। कोस पांच फेर पाछा आया। बीजै दिन कोस १० जाय पाछा आया। तिको भोपति हुल रजपूतांनै कह्यो, बात मन मांहे राखज्यो, कांई तुरकसूं इसड़ी[25] करां, तिका पृथमी प्रमांण[26] रहै। प्रधान कह्यो सु

---

१ कवचधारी। २ घोड़े। ३ शेर-जवान, साहसी। ४ घुड़सवार। ५ ऊँटों पर लदी हुई तोपें। ६ बड़ी तोपें। ७ जबरदस्त। ८ गर्भिणी, बच्चा देनेवाली। ९ खालसा, राज्य में। १० ईराक़ देश के प्रसिद्ध घोड़े। ११ पैदा हुए। १२ पैदा हुए। १३ चुन लिए। १४ घोड़ों का पौष्टिक खाद्य विशेष। १५ समय। १६ घृत, घी। १७ भर पेट। १८ खूब, निपट। १९ तलुवे। २० भर गई। २१ चुने हुए। २२ पसंद के। २३ पैजधारी, कुलप्रतिष्ठ। २४ सौंपे। २५ ऐसी। २६ पृथ्वी में सदा प्रमाणित रहे।

... दोय अहमदाबाद राख्या जावता[1] करण नैं।

अहमदाबादरो पातसाह महमद बेगड़ो। तिणरी बेटी गींदोली नांम, तिका हिंदू राह[3] मांहे चाले। गणगोर्‌यां दिनांसूं गोर[4] मांडीजै, गीत गाईजै। तिण ऊपरां जासूस दोय डोढी[5] राख्या। तिको ऊठी एक आवे खबर ले नैं; एक उठै ही जावतो करै। दिन दो री खबर दे। कोस एक सौ दसरो आंतरो छः। पिण ऊठी दिन दोय मांहे पाछो जावै। इसी जासूस पोहचावै नै तिसी भांति चढ़र सम्भाया। साठ कोस जाय नै साठ कोस पाछा आवै। तद पचीस असवार गणगोर्‌यां पहिली दिन दोय आगूंच[6] अहमदाबाद गया। तठै बीज[7] रो दिन, संम्यारो पूजण, नैं पांणी पीवणनैं गोर काढी। तठै गींदोली चकडोल[8] बैसि गोर पाछै पांणी पावण चाली। तठै असवार हजार दस जाबतामें पातसाह दीधा। नगारा, ढोल, सहनाई बाजै छः। लुगायां[9] गीत गावै छः। हमारां लेवे[10] गोरां नैणां-सरणै[11] रही छः। धूड़रो धोरो[12] उछळियो छः, तिको कोई किणनैं जाणणी आवै नहीं। तिण समीयै तळाव मांहे गोरां मेल्ही छः। तठै भोपति हुल एकेलो असवार हुवो नै चाल्यो नै बीसा असवार पावनी[13] मावता मारू[14] राख्या। अठी उठी असवार साथ

१ संदेशवाहक। २ बन्दोबस्त। ३ प्रथानुसार। ४ गौरी, पार्वती की प्रतिमा। ५ ड्योढ़ी। ६ पहले। ७ द्वितीया। ८ पालकी। ९ स्त्रियां। [१०] लिए। ११ नैणां सरणै=नेत्रों का मार्ग। १२ धूलि का बादल. १३ मारे। १४ के लिए।

सल्वा[१] राल्या नैं हुल ठाकुर घोड़ां छूटारो मिस करि नै अपूठे[२] पगी घोड़ानैं चलायो नैं गींदोली साहिजादी कनै आय बांह पकड़ घोड़ा ऊपर घाली, नै हूल[३] पड़ी। तरै भोपति हुल गींदोली ले जातां कह्यौ, जगमाल मालावतरो रजपूत छूं। तिको महेवा नगर मांहि कोई छो नहीं, तद हाथीखांनियों सात-बीसी तीजणियां महेवासूं ले गयो थो, तिको सूनै गांवमें सूं ल्यायो थो। नै कंवरजी घोकूंपुर दोड़ि[४] पधारिया था, तरै सूनी जायगा[५] थी ले आयो थो। नै हूं इतरा सिरायां देखतां आगै साहिजादी ले जावूं छूं। अबै ताता[६] घोड़ां रो धणी, ऊकलतै[७] कालजै हुवै, सो वेगो पोचज्यो। तरै तुरकांरी चढी असवारी थी, तिके ज्यूं-रा-ज्यूं घोड़ा लारै मार फीटा किया[८]। तिको कोस एकरो आंतरो पड़ि गयो। तुरकांरा घोड़ा ठांणै[९] रा छूटा, रातबां-दाणांरा खुराकी था। छांह बांधा रहता, तिके एक-ससिया[१०] दोड़ता हांफण लागा। परसेवो[११] गरमी हुई, झाग काछों चढिया, तंबोल[१२]मूंढांसूं पड़ै। तिकै घोड़ा थाका पगफाड़ा रालता[१३] देखि फोज ऊभी रही। पातिसाहनै खबर हुई। तरै महमद बेगड़ो

---

१ पराक्रमी, उत्तम। २ पीछे। ३ भगदड़, कोलाहल, कुहराम। ४ बैर लेने के लिए आक्रमण। ५ जगह। ६ तेज। ७ उकलतै कालजै=व्याकुल कलेजेवाले। ८ मार फीटा किया (मुहा०)=थका कर घोड़ों को हैरान कर डाला। ९ घोड़ों का ठाण (स्थान)—अस्तबल। १० एक सांस से, बेतहाशा। ११ प्रस्वेद, पसीना। १२ मुख से झाग, (फेन) का गिरना। १३ पगफाड़ा रालता (मुहा०)—पौंड़े, ओछे, डिगमिगाते हुए, पैर पटकते हुए।

फोजरा डेरा उठे मारग मांहे हीज कराया। हाथ वाढ़ ब
खावण लागो, पिण जोर कोई लागे नहीं।

अवै पातसाह फोजांरो सामांन करणो मांड्यो। अवै भो
हुल गींदोली ऊठीने सूंपि चढाई लीधी। तिकै असवार पचीस
दोय ऊठी एकै रातिवासै[2] पाछलै[3] पड़ी चार दिन रह्यां मह
री सींव मांहे आया, जठै कंवर जगमालजी गोर बोलांवण[4] स
चढिया। असवारी घणी छः, गीतां रा रमिझोल[5] लाग रह्या छः
सठै चोपदारनै बूझियो, भोपतजी कूं नाया[6]। तरै चोपदा
भोपतजीरै डेरै जाय रजपूतांनैं पूछियो। तरै रजपूतां कह्यो, ठाकु
रो कनै[7] आजरो तीसरो दिन छः, सहलां[8] सिधाया[9] छः
तिकै समाचार चोपदार आयने कह्या। तरै जाणियो अठेई हुसी
कठे सखरै रूड़ै[10] काम सिधाया हुसी। तिसै असवार निजर
चढिया। तरै खबर करै। तिसै भोपतजी निजर चढिया नै भोपतजी
घोड़ासूं उतरि पगे लागा, मुजरो कीयो। नै गींदोली ऊठीसूं हेठी[11]
उतार निजर कीधी नै हाथ जोड़ि अरज कीधी। कह्यो, पतिसाह
महमद बेगड़ो, तिणरी बेटी साहिजादी छः। हीजणियरि आटै[12]

---

१ हाथ वाढ खावण लागो (मुहा०)=क्षोभ और अपमान के आवेश में अपने ही हाथ नोंच-नोंच कर काटने लगा। २ रात्रि के समय। ३ पिछली। ४ किसी समर्थ पुरुष का, असमर्थ की रक्षार्थ, उसके साथ सहायतार्थ जाना। ५ झकझोर, झड़ी सी। ६ नहीं आये। ७ न जाने। ८ सैर को। ९ गये हैं। १० अच्छे, उत्तम। ११ नीचे। १२ वैर-प्रतिशोध।

मांहे रावळजीरा मजनसूं[१], कंवरजीरा तेज, प्रतापसूं घणा सिपायां चढ़ियां बिचे मूंढो मारि नै[२] ल्यायो छूं। आ बात कंवरजी सुणि अति मौज चढ़िया। तरै आपरा कड़ा मोती सिरपाव, मोतियां री माळा, असवारीरो घोड़ो, आप बनै सामान थो तिको बग-सियो[३] ने गुजरपाळ मंगाय गोरोन्दीनैं देसाण नगरनैं चाल्या नैं गीतणियां[४] नैं हुकम कियो, म्हांने नैं सहजादो गींदोळीनैं गावो। गीतेरणियां नैं सवागा[५] मंगाय दीया, चूड़ा पहिरावण हुकम दीयो। तिको गींदोळी गवावता गवावता महिलां दरबार पधारिया। अबै रावास[६] बापी गुजरमैं रहै छः।

तरा पछै पातिसाह फौजां मेली चोथी। पाईसो[७] एक तठा भाखर[८]री सोवायत[९], फौज एक सोरठ[१०]री, फौज एक पाटणसूं हाथीरथोन लै चढ़ियो, फौज एक चंपाळ[११]सूं चढी। इसी भांति पांच फौज करि असवार हजार असरीरै साथसूं पातिसाह महमद बेगड़ो तिण मेहवा ऊपर चढाया। तिकै मेहवासूं कोस तीन ऊपरां डेरा दिया। पहाड़ांरा मोरचारी मारसूं अळगो[१२] डमारो लीयो। तरै जगमालजी घोड़ो हजार ३/४ भेळो कीयो। तठै जाणियो असुरांरी फौजां घणी, तरवारियां छुट्टियां बिना बातां नहीं। तरै जगमाळजीनै

---

१ प्रताप से, बल से। २ मुंह से मार कै (मुहा॰ =मुंह मार कर, साहस करके। ३ बख्शीश की। ४ गीत गानेवाली स्त्रियों को। ५ दराग-सम्बन्धी बस्त्राभूषण। ६ रनिवास, रानवास, प्रेयसाके। ७ सेना। ८ पहाड़ की। ९ लोभायमान। १० सौराष्ट्र प्रान्त की। ११ चांपानेर प्रान्त की। १२ दूर, अलग, दूर।

तेजसीरा रजपूतांरी बात याद आई। तरै लापसी, बाकुला[1], तिल्वट[2], दालिया[3], सांकुलियां[4] कराई मण से-पांच अथवा छः से मण धांन रंधायो[5]। पछै दारूरी तूंगां[6] मण ५०/६० री भराई, कसूंभो[7] मणांबंध[8] कढायो, तिजारो[9] मणाबंध कढायो। तिसै राति घड़ी च्यार गई। तठै ताली दीधी तीन नै जगमालजी कह्यौ, तेजसीजीरा रजपूतां, आ थांइरी वेळा छै, वेगा आज्यो। इतरो कहत-समान तीन-से रजपूत प्रेतरी गति मांहि था, तिकै आया नै चल्ूं[10] कैइक साथे लेनै आया। तिजारा, कसूंभो, दारू पाई। लापसी, तिल्वट, बाकुला, दालिया सरजाम[11] कीधो थो, तिणसूं धपाय[12] आंधा कीधा[13] नै मस्त हूवांनै तरवारियां हाथां मांहे दीधी। तरै जगमालजी कह्यौ, लोह करो[14] तिको म्हारो नांव लेनै करिज्यो नै कहिज्यो, "आ ही जगमालरी तरवार"। इतरो सुण भूत अमलांसूं आंधा हूवा थका तुरकांरी फोज मांहि पड़िया। तिका "जगमालरी तलवार" कहिता जावै नै नर, कुंजर, हैवर एके झटकै किणरा एक दाहै[15]। जठै किणरा एक जीव लेनै भागा। पातिसाह जीव लेनै भागो नै घणा मारिया नै जगमालजीरी फतै हुई। नाठा[16] तिकै अहमदाबाद

---

१ उबाले हुए नाज के कण। २ तिल। ३ पीसी हुई दाल की पकौड़ियाँ, बड़े। ४ तेल में तली हुई बाटियाँ। ५ पकाया। ६ ढोल। ७ मद्यरस में घोटा हुआ अफीम का पेय। ८ मनों के परिमाण में। ९ एक मादक पेय। १० फिर। ११ बन्दोबस्त। १२ तृप्त करके। १३ आंधा कीधा (मुहा०) छकाकर अंधा-धुंध कर दिये। १४ लोह करो। मुहा० = वार करो, तलवार चलाओ। १५ गिराते हैं। १६ भागे।

गया । छाज सरम छोडिने भागा ने कहण लागा, यारो, कोई मुनी यादम[1] लड़े तो तिण सें लड़िये । पिण, क्या जांगां केने ही जगमाल थे । "जगमालरी तलवार" कहे अर[2] मारे । इह तमासा अजब देखा । हिये पातसाह दीयो हेठो पालि[3] अपोलो[3] रह्यो ने कह्यो, जिसके पीछे खुदा है[4] मदत करे तिणसूं जोर कोई चले नहीं । यारो, रजपूतांसूं भोटा न करिये । तठे राने जनानि पातिसाह गयो, तरे हुरमां पूछियो,—

बीबी पूछे खांननें कुण किरा[5] जगमाल ।
पग पग नेजा पाड़िया[6] पग पग पाड़ी ढाल ॥

अठे जगमालजी री फते हुई । भूलानें सोरा दीधो । गींदोलीनें रावास थापी । तिको गींदोली[7] गाईजै ।

इणरो वारता । संवत् १३२५ चैत सुदी ३ मंगलवार स्याया, जो विरद[8] आयो । जगमालजी ने गींदोलीरी बात मरम्ल[9] 'सूं कही ।

[इति श्री गींदोली री बात सम्पूर्णम्]

---

१ मालव का आदमी । २ और । ३ हिये हेठो पालि अपोलो = हृदय हारकर, मुंह की खाकर, लज्जित होकर । ४ पुत्र । ५ भी । ६ फिरते । ७ गिराये । ८ अहमदाबाद के बादशाह मुहम्मद बेगड़ा को सरदो गींदोली के हरम के पीछे राजस्थान में इस वृत्तान्त का स्मारक गीत "गींदोली" नाम से प्रसिद्ध हो गया, जो गणगौर के त्यौहार पर अब भी गाया जाता है । ९ प्रशंसित, प्रसिद्ध । १० अदृश्य से, आदि से ।

तेजसीरा रजपूतांरी वात याद आई। तरै लापसी, बाकुला[1], तिलट[2], दालिया[3], सांकुलियां[4] कराई मण से-पांच अथवा छः से मण धांन रंधायो[5]। पछै दारूरी तूंगां[6] मण ५०/६० री भराई, कसूंभो[7] मणांबंध[8] कढायो, तिजारो[9] मणाबंध कढायो। तिसै राति घड़ी च्यार गई। तठै ताली दीधी तीन नै जगमालजी कह्यो, तेजसीजीरा रजपूतां, आ थांइरी वेला छै; वेगा आज्यो। इनरो कहत-समांन तीन-से रजपुत प्रेतरी गति मांहे था, निकै आया नै चलै[10] कैइक साथे लेनै आया। तिजारा, कसूंभो, दारू पाई। लापसी, तिलवट, बाकुला, दालिया सरजाम[11] कीधो थो, तिणसूं धपाय[12] आंधा कीधा[13] नै मस्त हुवानै तरवारियां हाथां मांहे दीधी। जगमालजी कह्यो, लोह करो[14] तिको म्हारो नांव लेनै करिज्यो कहिज्यो, "आ ही जगमालरो तरवार"। इनरो सुण भून अमलांमू मांधा हुवा थका तुरकांरी फोज मांहे पड़िया। तिको "जगमालरी तल्वार" कहिता जावै नै नर, कुंजर, हैवर एकै झटकै तिनरा एक ढाहै[15]। जठै किनरा एक जीव लेनै भागा। पातिसाह जीव लेनै भागो नै घणा मारिया नै जगमालजीरी फतै हुई। नाठा[16] निकै अहमंदाबाद

---

१ उबाले हुए नाज के कण। २ तिल। ३ पीसी हुई दाल की पकौड़ियाँ, बड़े। ४ तेल में तली हुई चपातियाँ। ५ पकाया। ६ ढोल। ७ द्रवरूप में घोटा हुआ अफीम का पेय। ८ मनों के परिमाण में। ९ एक मादक पेय। १० फिर। ११ बन्दोबस्त। १२ तृप्त करके। १३ आंधा कीधा (मुहा०) छकाकर अंधा-धुंध कर दिये। १४ लोह करो (मुहा० = वार करो, तलवार चलाओ। १५ गिराते हैं। १६ भागे।

गया । लाज सरम छोडिने भागा ने कहण लागा, यारो, फाई मुनी याद्म[1] लड़े तो तिण सैं लड़िये। पिण, क्या जांणो केते ही जगमाल थे। "जगमालरी तलवार" कहै अर[2] मारै। इह तमामा अजब देग्या। हिवै पातसाह दीयो हेठो पालि[3] अयोलो[3] रह्यो नै कह्यो, जिसके पीछे खुदा है[4] मदत करै तिणमूं जोर कोई चलै नहीं। यारो, रजपूतांसूं आंटा न करिये। तठै राते अनति पातिसाह गयो, तरै हुरमां पूछियो,—

पीबी पूछै खांनने तुध किनरा[6] जगमाल ।
पग पग नेजा पाड़िया[7] पग पग पाड़ी ढाल ॥

मठै जगमालजी री फतै हुई। भूतानैं सोम दीधो। गींदोलीनैं रवास थापी। मिळो गींदोली[8] गाईजै।

इणरी वारता। संवत् १३२५ पोष सुदी ३ मंगळवार स्याया, मो विरद[9] आयो। जगमालजी नै गींदोलीरी वात मरमूल[10]मूं करी।

[इति श्री गींदोली री वात सम्पूर्णम्]

---

१ मालव का आदमी। २ और। ३ हिलो हेठो पालि = दुरा० = दुरव हालत, मुंह की खाकर, लज्जित होकर। ४ खुद। ५ भी। ६ किसने। ७ गिराये। ८ जामसाहर के बादशाह मुहम्मद बेगड़ा की लड़की गींदोली के हाथ के पीछे राजस्थान में इस वृत्तान्त का स्मारक गीत "गींदोली" नाम से प्रसिद्ध हो गया, जो गणगौर के त्यौहार पर अब भी गाया जाता है। ९ प्रशस्ति, प्रसिद्धि। १० आ-मूल से, आदि से।

म्हे आथण[१] रा आवां छां, तोरण-थांभरी[२] तयारी कर राखज्यौ म्हे परणीजण[३] नै आवां छां। नै रावजी लारे आया। उठासूं चूड़ो बरी[४] दे मेलियौ, महणा[५] सबे मेल्या नै गोधूलकरे साहे जाय परणीया। सुखपालमें बैसांण गढ ल्याया। अलाहिदो[६] महिल एक अभोगन[७] पैलो करायो थो, तिण मांहि राखी। घणा सुंधा[८] अतर तेल चोवा मांहि कपूर कस्तूरी मांहि गरकाब राखे। यूं वरस दोयनै बेटो हुवो। तिणरो नांम बीरम दीधो। दूजी रांणीरै बेटी हुई, तिणरो नांम बीरमती दीधो। मोटा हुवां बरस सात मांहि बीरमदेवो। तठै पाटरो[९] हाथी मदरो आयो[१०] छूटो। तिको पाधरो[११] दोढी आयो। आगै बीरमदे माहिलवाड़ियां[१२] रा टाबरांसूं रमतो थो, तिको दोढ़ी कनै बारै भीनर पाखती बीरमदे दोड़ियो नै हाथी लारै दोड़ियो। तिसे माहिलवाड़ियांरा टाबरां कूका[१३] कीया, रजपूतां पिण कूका कीया, 'कँवरनै मारियौ, कँवरनै मारियौ'। तिसे अपछरा झरोखै बैठी सुणियौ। तरै अपछरा धरती सांमो जोवै तो बीरमदेनै हाथी लपेटियो मह्रे[१४] छै। तरै

१ सन्ध्या के समय। २ विवाह के समय लड़की के घर के द्वार पर लकड़ी का 'तोरण' बांधा जाता है, जिसे विवाह करने को आया हुआ वर मारता है-इसे 'तोरण' की प्रथा कहते हैं। थांभ से यहां आशय विवाह वेदी के स्तंभ से है। ३ ब्याहने। ४ वधू का सौभाग्यसूचक हाथीदांत का चूड़ा और वस्त्राभूषण (बरी)। ५ गहने। ६ पृथक, जुदा, एकान्त में। ७ अभुक्त, नया। ८ सुगन्धित द्रव्य। ९ पाटवी। १० मतवाला। ११ सीधा। १२ महल के नौकरों के। १३ चिल्लाहट। १४ लपेटने ही को है।

आवै छै। सबलो[1] काम दीसै छै। तिसै सांढियो पिण आय पोतो[2] नै आवन-समा[3] पूछियो, रावजी, दातण करि नै आरोगिया कै नहीं आरोगिया। तद पूछणवाले कह्यो, रावजी अवै अमल करि नै दूध मिश्री आरोगसी। तरै पोलियै[4] मांहे रावजीनै गुदरायो[5], भाटीराव लाखणसीजीरो सांढियो आयो छै, दोढियां कागद हाथ मांहे लीधां ऊभो छै। तरै रावजी मांहे बुलायो। तरै ऊठो[6] मुजरो करि कागद हाथ दीयो नै अरज करि नै हाथ जोड़ि नै कह्यो, दूध मिश्री मांहे विष छै, देख नै आरोगज्यो। तिनरै खवास दूध मिश्री भेला करि ल्यायो। तिको कानड़देजीरै आगै चमक[7] हुंतीज नै अरवाल[8] निजर आया। तरै खवासनै कह्यो, ओ दूध मिश्री तूंहीज पीव जा। खवास नै पहलै दिन खोट घालो[9] थी। तिण रीससूं खवास विस घाल्यो दूध पिवै नहीं। तरै रावजी दूध मिश्री थो तिको कुत्ती नै पायो। कुतरी[10] मुई। तिरो खवासनै गाढ करि पूछियो, साच बोलि, किण कंवर कै राणी, प्रधान, मुंहतै, उमराव, दुसमण, जिण दिरायो, तिणरो नाम छै। तरै खवास कह्यो, अणहूंतो[11] किणरो नाम कहूं। तद खवासरो अनखधो[12] (?) पी लियो। ऊठीनै सिरपाव दे नै रावळजीनै घणो मनुहारो[13] करि कागळ लिख घालो मेलीयो नै लारै राव कानड़देजी, रणधीरदेजी, कंवर वीरमदेजी मिसलत[14] कीधी, आपांसूं रावळजी उपगार-सनमंध घणो

---

१ जबरदस्त, बड़ा भारी। २ पहुंचा। ३ आने ही। ४ द्वारपाल। ५ मालूम किया। ६ उठ के। ७ सन्देह, भ्रम। ८ तेज या धी की चिकनाहट। ९ चालना दी थी। १० कुतिया। ११ झूठा, अनहोना। १२ ......। १३ विनय। १४ सलाह।

अपछरा झरोखै बैठी हाथ पसारनै झरोखा मांहे लीधो। तिको रजपूतां दीठो नै सगलांनै अचरज हूवो। राति पड़ियां रावजी महिलां आया। तद रंभा बोली, अबै म्हारो मुजरो छै, हूं जावूं छूं, म्हारी धात कानेकाने[1] हुई नै आपसूं कोल[2] कीनो थो। रावजी घणी ही नोरा[3] कीना, पिण अलोप[4] हुई नै जांती[5] कहियो, म्हारा बेटारी [...] मांहे हूं, छांनी[6] थकी रहिस्यूं। यों कहि अलोप हुई। [...]ो वीरमदे पंजू पायक कने घाव—दाव[7] सीखै। पंजूसूं घणो [...]ाव बांध्यो[8], देह दोय नै जीव एक, लोक इण विध जांणै छै। तिसै वरस १२ मांहे कंवर हूवो। तिण समै जेसलमेर भाटी रावलजी लाखणसीजी राज करै। तिणां रै मेल बैठां सांवण[9] बोल्यो। तिण जिनावर क्यों कह्यो, दिन पोहर एक चढतां सवारै[10] कानड़दे सोनगरानै विस देसी। इसो सांभल नै राइको[11] एक ताती[12] सांढि धाढि कागल लिख नै जालोरनै दोड़ायो। रावलजी कह्यो, म्हारा[13], पोहर दिन चढतां महो जाजे, कोस सात-दसरो[14] आंतरो छै। सांढियो[15] चाल्यो। तिको दिन घड़ी चार अथवा पांच चढतां कोस एक माथे आवतां सांढ थाकी। तिरै वीरमदे मेल चढियां सांढियो निजर चढियो नै कह्यो, कोइक सांढियो ताती सांढ लाइनो

---

१ हर किसी को प्रकट हो गई। २ प्रतिज्ञा, वचन। ३ निवेदन, प्रार्थना। ४ अन्तर्धान। ५ जाती हुई। ६ गुप्त। ७ दाव-पेंच। ८ मोह, स्नेह जोड़ा। ९ शकुन-पक्षी। १० कल प्रातः काल। ११ ऊँट का सवारा। १२ तेज। १३ सम्बोधन, मेरे मित्र!। १४ लम्बा कोस। १५ ऊँट का सवार हरकारा।

हार खाय[1] बोली, हुई साठो नै बुध नाठी[2], किसूं पुछता हुआ[3] छो, रांडीचा[4] नै करिस्यो किस्यूं, खाणैं पीवणे चोह्वा नहीं, थे रीसाओ[5] मती। रावळजी कह्यो, पाछा मेल देस्यां। तरै सोढी कह्यो, पाछा मेल्यां थांहरो भलो दीसै नहीं, नाळेर झालो, पिण हेक वात घो[6], ऊधि[7] जावो तरै सोनगरारो सामेळो आसै[8], जरै थे कहिया, आछो आछो, पिण सोढांरा तोरणरी होड हुवे नहीं। चंवरी बैसो तरै थुंहीज कहिया, हथलेवो झालो तरै कहिया, सोनगरोरो हाथ आछो, पिण सोढीरा हाथरी होड हुं नहीं। नै फेरा ठेने तुरत अंण-जीम्यां[9] चढि एथ[10] आया। रावळजी कह्यो, भलो २ कहि दरीखाने विराज व्यान नाळेर झालि सिरपाव दे विदा कीया। अबै रावळजी जांनि करि नै चढिया। वधाईदारां वधाई दीनी। तरै वीरमदेजीनै रावळजीनै घणो कोड[11] छै। तरै आपरा घोड़ा हाथी सिणगार जलूस कर साम्हा आया, मौंहो मांहे जुहार हुवा, बौंह-पसाव[12] कर मिळिया। तरै रावळजी अठी उठी देखि बोल्या, सोनगरांरो सामेळो सखरो, पिण सोढांरै सामेळा[13]री होड है नहीं। इणरो सांभळतसमो[14] वीरमदेरा डीलमें आग लागी।

---

१ कोप खाकर। २ 'हुई····नाठी' राज० कहावत =साठ वर्ष से होने पर मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है। ३ वृद्ध हो गये। ४ रांड, अभागिन। ५ कुपित मत होवो। ६ एक वचन दो, वादा करो। ७ ऊधि जैसलमेरी भाषा =उधर। ८ आवेगा (राज० भाषा)। ९ बिना भोजन किये। १० यहां, इधर। ११ चाव, लालसा। १२ आलिंगन। १३ अगवानी। १४ सुनते ही।

उपगार कीधो, घणो आसान[१] कीयो, तो इणरो बदलो रावल़जीनै कांसू दीजै । तरै कांनड़देजी कह्यौ, थाईं वीरमतीरो नाल़ेर थां; गढ़पति छै, मोटा सगा छै । आ वात तीनांहीरै दाय वैठी[२] । तरै घोड़ा पांच, सोना रूपासूं नाल़ेर मढ़ाय, ठावा[३] उमराव व्यास प्रोहित साथे दे जेसलमेर मेल्या । तिके बड़ी जलूस कीयां पौता । तठै रावल़जीनै खबर हुई, सोनिगरांरा नाल़ेर आया छै । आ वात सुणि रावल़जीनै घणो सोच हूवो नै कह्यौ, म्हां तो सोनिगरांसूं भलो कीयो थो, पिण मांहिजे[४] गल़ै अलवड़ी[५] छोकरीरो नांखियो । हमै ठाकुरे किसूं कियो चाहीजै । तरै उमरावां कह्यौ, सोढीजीनै पूछौ । आगै रावजीरै ऊमर कोटरी सोढी[६] राणी छै । तिका डील मांहे माली[७] घांणी रै फेर[८] छै, रूप कुढबी[९] छै, पिण रावल़जी सोढीरै वस छै । सोढीजी करै ज्युं ज्युं करै छै । तिण दिसा[१०] उमरावां कह्यौ, सोढीजीनै पूछौ । तरै रावल़जी कह्यौ, मूवां[११], पूछां कि पाछा मेलां तो भूंडा दीसां । आगै तो मांहिजे सोढीजी घणा ही छै । तरै रावल़जी उठ दुमना थका[१२] रावल़[१३] मांहि गया । सोढी पूछियो, तरै नाल़ेररी वात कही । सोढी

---

१ अहसान, कृपा, उपकार । २ पसन्द आई । ३ प्रतिष्ठित । ४ मेरे (जेसलमेरी भाषा में 'जे,' 'जा' सम्बन्धकारक के संयुक्त विभक्ति-चिन्ह की तरह प्रयुक्त होते हैं)। ५ आफ़त । ६ इन्दुवंशी भाटी क्षत्रियों की एक शाखा 'सोढा' है, जो ऊमरकोट के रहने वाले थे । ७ मेंढी । ८ तेली की घाणी की तरह । कुरूपा । १० इसलिए । ११ सम्बोधन, अरे मरे हुओ ! । १२ अप्रसन्न होते हुए, दुखी होते हुए । १३ रनिवास में ।

ता१ खाय[1] बोली, हुई साठी नै बुध नाठी[2], किसूं पुखता हुवा[3] छो, रांडोचा[4] नै करिस्यो किस्यूं, खांणे पीवणे पोहचां नहीं, थे रीसावो[5] मती। रावळजी कह्यो, पाछा मेल देस्यां। तरै सोढी कह्यो, पाछा मेल्यां थांहरो भलो दीसै नहीं, नाळेर झालो, पिण हेक वांद द्यो[6], ऊथि[7] ज़ावो तरै सोनगरांरो सामेळो आसै[8], जरै थे कहिया, आछो आछो, पिण सोढांरा तोरणरी होड हुवै नहीं। चंवरी बैसो तरै युंहीज कहिया, हथलेवो झालो तरै कहिया, सोनगरीरो हाथ आछो, पिण सोढीरा हाथरी होड हूं नही। नै फेरा लेनै तुरत अंण-जीम्यां[9] चढि एथ[10] आया। रावळजी कह्यो, भलो २ कहि दरीखाने विराज लगन नाळेर झालि सिरपाव दे विदा कीया। अबै रावळजी जांनि करि नै चढिया। बधाईदारां बधाई दीनी। तरै वीरमदेजीनै रावळजीनै घणो कोड[11] छै। तरै आपरा घोड़ा हाथी सिणगार जलूस कर साम्हा आया, मांहो मांहि जुहार हुवा, बांह-पसाव[12] कर मिळिया। तरै रावळजी अठी उठी देखि बोल्या, सोनगरांरो सांमेळो सखरो, पिण सोढांरै सामेळा[13]री होड है नहीं। इतरो सांभळतसमो[14] वीरमदेरा डीलमें आग लागी।

---

१ क्रोध खाकर। २ 'हुई.....नाठी' राज० कहावत =साठ वर्ष से लेने पर मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है। ३ वृद्ध हो गये। ४ रांड, अभागिन। ५ कुपित मत होवो। ६ एक वचन दो, वादा करो। ७ ऊथि (जैसलमेरी भाषा =उधर। ८ आवेगा (जै० भाषा)। ९ बिना भोजन किये। १० यहां, इधर। ११ चाव, लालसा। १२ आलिंगन। १३ अगवानी। १४ सुनते ही।

सोढां रो नेस[1] छै, तिके दोढ़ा छै। भोमिया-भूंच, धरतीरा
त्यांरो सांमेलो आछो, तो रावल मांहे परमेसर[2] नहीं, गा
चूक[3] छै। सुणियौ थौ त्यूंहीज छै। तरै वीरमदेजी आगै बां
आया, तठै रावलजी तोरण पण त्यूंहीज वह्यौ। चंवरी
जलूसरी[4] थी, पिण रावलजी देखनैं कह्यौ, चंवरी सवरी सवारी
सोढांरी चंवरीरी होड नही हुवैं। पछै हथलेवो[5] दीयौ नै बोल्या, र
गरीरो हाथ आछो आछो, पिण सोढीजीरै हाथरी होड न है। औ
सोनगरी सांभलनसमांन भस्म हुवै। आगै सोढीजीरी सोभा सुणी
थी। तिसै ज्यावला फेरा लेने चालवारी तयारी कीवी। तिसै राव
सीख मांगी। घणो ही हठ कीनौ, पिण चढिया। तरै कानड़
रांणकदेजी वीरमदेजी तीनै मिल बात कीनी। ऊपगार ऊपरां
दोनी, पिण रावल मांहे गधेड़ारा लक्षण दीसै छै, माईरो कमा
ढ्योयो, पिण एक वार तो बाईनै गढ पोहचावणी। तरै तयारी
असवार सो एक साथे दे रथ मांहे बैसांण साथे सहेल्यां दे चल
राजड़ियो खवास साथे मेल्यो पोचावण नै। आगै कोस ४० गया,
मलाव आयो। मद रजपूत अमल करणनी सारां—फेरां[8] रा टै
टालण[9] नें ऊतरिया। रथ छोड़ियो। तरै सोनगरी दासीनै कह्यो, झा
पांणीसूं भर ल्याव। तरै दासी झारी भरणनै गई। आगै देखै

---

१ मातर। २ मामूली भूमिराल (जागीरदार), थोड़ी सी जमीन
मालिक। ३ दाम, दग। ४ गर्दन की नाप। ५ शामदार। ६ कर-ग्रहण
७ जोअण। ८ गेर गरदा। ९ देव (आदत-Nature's Call, लघु
(जरूरत पूरी करने के लिए,—शौचादि के लिए।

नीबों सिवालोत[1] सात-बीसी साईनां[2] री सायसूं भूलै[3] छै। तिको केवा[4], चंपेल[5], अतराजारी पाणी मांहि लपटां[6] आवै छै। केसर रा रंगसूं पांणी बदल् गयौ, रंग फिर गयो छै। दासी मारी भकोल्[7] पांणीसूं भरी नै सोनगरीनूं दीधी। तद सोनगरी पांणी मांहि लीधौ। तद पांणी ऊपरै तेलरा तरवाल्ा आया। तरै सोनिगरी दासीनै रीस कीधी, तैं हाथ धोय नै भारी भरी नहीं, जा दूजी वार माटीसूं हाथ धोय नै भर ल्याव, आंधी[8], तेल लागो देखै कोई नहीं। तरै दासी कह्यौ, बाईजी, सिरदार कोई सायसूं सांपड़ै[9] छै, घणा सुंधा[10] तेल केसर मांहि हुवा छै। दासी कनै इतरो सुण सोनगरी कह्यो, तूं पूछि आव कुण साति, किसो सिरदार छै। छोकरी आयि नै पूछियो। तरै एकण चाकर कह्यो, साति राठोड, नींबो सिवालीत, लाखांरो लोड़ाउ[11] वडो भोकाऊ[12], सैंणा रो सेहुरो[13] दुसमणरो साल[14], जातां-मरतांरो साथी[15], लाखां रो लहरी[16]। इतरो सुंण छोकरी जाय पाछो कह्यो। तरै सोनगरी छोकरी वल्ी

---

१ शिवलाल का वंशज 'सिवलोत'-नींदा नामक। २ एक सौ चालीस (७×२०) समवयस्कों सहित। ३ नहा रहा। ४ केवड़ा। ५ चमेली का इतर, तेल। ६ तीव्र सुगन्धि। ७ पानी से साफ करके, भकझोर कर। ८ सम्बोधन, अरी अन्धी। ९ नहाते हैं। १० सुगन्धित। ११ लाखों के साथ अकेला युद्ध करनेवाला वीर। १२ बड़ा पराक्रमी। १३ अपने मित्रों को शिरोभूषण। १४ दुश्मनों के हृदय का शल्य। १५ जाते मरते हुवों का सहायक, असहायों का सहायक। १६ लाखों का धन दे डालनेवाला तरंगी, मनमौजी।

भालो घड़ावतां मास छः लागा। पछै लोहाररी बेटी अरज कीवी, रावजी, भालो तयार हुवो छै। तरै रावजी बोल्या, म्हारी[1], उरो त्याव ज्यूं नीवलै नै पोय राळां[2]। तरै डावड़ी[3] कह्यो, रावळजी, हेक तो बडो सोच छै। मुं[4] वैरी विसूं। तरै डावड़ी वोली, ऊ[5] मोटियार छै, थे बूढा छो, कदे[6] भालो पकड़ खोस[7] नै पाछो ही चलावै नैं रावळजीरै दे तो हाथ कै ठोड़ घालां[8] तरै रावळजी कह्यो, हिवै हिवै[9], म्हारी, भलो कह्यो, आवो भांजि राळो[10] नैं रावळजी कह्यो, भाई, मांहजी[11] नीवला तूं ले गयो छै, तांहजी[12] सूरज लै जाइया। इनरो कहि सुख मांहे रहै।

हिवै सोनगरांरै बेटा दोय हुवा। कागद वीरमदेजीरा आवै। इम वरस दस हुवा। तठै दूजी बहिन वीरमदेजीरै छै, तिणरो साहो थापियो। दहायां[13] नै नाळेर मेल्या। तरै मोहिल मेल वीरमतीनै बुलाई। निका जलूस करि नै आई। पिता माता भाई भोजायां सूं मिली। घणी खुस्याली हुई। दिन २/३ बीतां भाई वीरमदेस्यूं बाई कह्यो, थांरा बेहनेई[14] नैं बुलावो तो भलो बात छै। मोनै गिणो तो म्हारी एक अरज छै। मोनै कांचली दीनी, हुं जाणस्यूं अमर-कांचली[15] भाई दीधी।

---

१ सम्बोधन, मेरी···। २ पिरो डालें, बींध डालें। ३ लड़की। ४ मेरा। ५ वह। ६ यदि, कदाचित्। ७ छीनकर। ८ हाथ···घालां (मुहा० =हाथ किस जगह डालें, किसे मुंह दिखावें। ९ ठीक, ठीक। १० तोड़ डालो। ११ मेरी को। १२ तेरी। १३ क्षत्रियों की एक शाखा। १४ बहिन का पति, बहनोई। १५ मेरे पति को अभय देने को मैं भाई की ओर से 'कांचली' का दान समझूंगी; भाई बहिन को जो पोशाक देता है उसे 'कांचली' कहते हैं— वास्तव में 'कांचळी,' कंचुकी को कहते हैं, जो स्त्रियां वक्ष पर पहनती हैं।

थांहरै नै उणांरै मन खनरो भाजै[1] । वीरमदे रावजीनै पूछि नै पान आरे फीधी । कागद लिख नीवांजीनैं तेड़णरौ नेतो मेलियो। तिको कागद नींवाजीनैं दीधो । घणूँ राजी हुवा। आदमियांनैं घणो सनमान दीधो । दिन २/३ राख नै कह्यौ, मोनैं चाकर सेर बाजरी रो रजपुत गिण्यौ । पिण म्हारी निसा-खातर[2] जालोर जाय सोनि-गरां तली धैसण[3] री न वैसै[4] छै, नैं पंजूपायक[5] मो कनै आय ले जावै, तो मुजरो करूं । अे वचन आदमियां आयने कह्या। तरै वीरमदेजी पंजूपायकनैं कह्यो, थे सिधाय नै नींवा सिवालोतनै तेड़ ल्यावो । तरै पंजू कह्यौ, थे देसोत राजवी छो, थांरै चांको पूछी[6] मनमें होय तो मनै मती मेल्यौ, आयांसूं ऊंची-नीची करस्यो[7] मो मोनैं चाकरीसूं गमास्यौ । तरै वीरमदेजी बांह बोल दे[8] पंजूनै मेलियो । तिको समाज सूं नींवाजी कनै आय मिलियो । नींवैजी घणो प्यार आदर कीधो । पंजूनैं सर्व बात कहि नै बांह देनै[9] नींवाजीनै जालोर ल्याया । कान्हड़देजी रांणकदेजीसूं जुहार हुवो । घणा प्यारसूं मिलिया, डेरो दिरायो, मोरी बनायो[10] व्याह हुवो, गोठ जीम्या ।

एकै दिन राजद्वियारो बेटो वीरमदेजीरी खवासी करै छै । निण आंख भरी, चोसरा[11] छूटा । वीरमदेजी पूछियो,

---

१ शंका मिटे । २ विश्वास । ३ हेठा देखने की, अपमान की तरह बैठकर अपमानित होने की । ४ नहीं बैठती है । ५ नौकर । ६ मोटा बैर, टेढा व्यवहार । ७ बुरा बरताव करोगे । ८ प्रतिज्ञाबद्ध होकर । ९ अभय देकर । १० व्याह संबंधी सामान का स्वागत किया । ११ अश्रुधारा ।

बीजड़िया क्यूं, किण तोनै इसा दुख दीधो। तद बीजड़ियै कह्यो, राज माथै धणी, मोनैं दुख दै कुण, पिण नींबो म्हारा बाप रौ मारणहारौ, गढां कोटां मांहि वडा वडा सगां मांहि धणीयांरो हासा-रो-करावण-हारौ[1], वलै गढ मांहि खंखारा[2] करै छै नै पोढै छै, तिणरो दुख आयो। वीरमदेजी कह्यौ, म्हे तो पंजू नै बांह दोल दीधा, सूंस[3] कीधा, तिको कुं ही कहणी नावै नै थारै बापरौ मारणहार छै, तोसूं मरै तो मारि राखि। तरै बीजड़ियै कह्यौ, धणियां[4] रा माथै हाथ चाहीजै। गोठ करि मोनै हुक्म करौ तौ मारि राखिस्युं। वीरमदेजी कह्यो, सखरी कही। पहसगारै[5] री वेलां म्हे तोनै कहां, बीजड़िया, पुरसगारो करि। तरै वीरमदेरा कड़ियां[6] की तरवार कनै राखी थी। तिका अजांण[7] में वाही। तिको नींबाजीरो माथौ अलगौ जाय पड़ियौ नै बीजड़ियौ थांभारै उलै[8] आय गयौ। तदि नींबैजी आपरी तरवार माथै पड़ियैं पछै आडो वाही, तिको थांभारा नै बीजड़ियारा दोय वटका[9] हुआ। तिण समीयैं रो दूहो—

> वही वही तै वाहि नर थांभो नींफोड़ियौ
> नींबड़ा तणै नेठाहि मरियै बीजड़िये मुगास[10] ॥१॥

---

१ हँसी (अपमान) कराने वाला। २ गर्वसूचक ध्वनि। ३ शपथ। ४ स्वामियों का। ५ भोजन परोसना। ६ कमर की। ७ अनजान में, अचानक। ८ ओट में, ओल्हे में। ९ टुकड़े। १० तलवार तो उसी वार चली (वही) थी अब (उससे) आदमी (बीजड़िया) समेत खंभे को काट डाला था। पुरुषार्थी नींबा ने मारे जाने पर भी बीजड़िये को मार डाला।

पैला वीरमदेमी नीवाजीरा साथ, उमरावांरा हथियार सिकलीगररै दीधा था, तठे गुळ[1] रो पाट दिरायो थो। कांम पड़ियां एकै सूं ही भनसांण[2] सकियो नहीं। रजपूत था तिकां सगलां सन करै स्युं कीनो। हाथीदांतारी वाहि करि करि वायां आय आय नै नीवाजी कनै आय पड़िया। वीरमनी आपरा वेटानूं लेनै नीसरी, तिका आपरै गांव जाय वैठी।

ओ दगो हुवो, पंजू पायक सुणियो। तरां मूंछां दाढी ऊपरि हाथ फेरि रीसायनै नीसरियो। तिको अलावदी पातिसाही करै तठै गयो। पातिसाहसूं मिळियो। धाव-डाव[3], कुस्तारो खेल[4] दिखाय घणो पातिसाहनै रीझायो। एकै दिन पातिसाह फुरमायो, पंजू, तो जिसो थारी बरोबर खेलै इसो पातिसाहि मांहे दूजो काई नहीं। तरै पंजू कह्यो, एक जालोर कानड़दे सोनगरारो बेटो वीरमदे छै, तिको मोसूं कुंढीक[5] सखरो छै। तद पातिसाह कानड़दे ऊपरां फुरमान मेल्या। तिण मांहे लिखियो, तीने ही सिरदार हजूर आवज्यो, नहीतर हमकूं फेरा दिरावोगे[6]। ओ फुरमांन वाच घणो सोच हूवो। जांण्यो, ऐ पंजूरा चाळा[7] छै। तरै तीने ही आलोच्यो[8], जो वैस रहीजै तो दिलीरा धणींसूं पोच आवां[9] नहीं। नै हजूर गयां काई बात भूठी साची रफै दफै करिस्यां[10]। यों जांण घोड़ा हजार एक री गांठ[11] करि

---

१ धार। २ औसान, मौके का काम। ३ दाव पेच। ४ कुश्ती का कौशल। ५ कुछ कुछ। ६ इनकारी करोगे; स्वयं आने की तकलीफ़ दोगे। ७ व्यवहार। ८ सोचा। ९ नहीं पहुंच पाते, बराबरी नहीं कर सकते। १० करेंगे, तय करेंगे। ११ समूह, समारोह।

सलरैं मोहरत सलरां सांवणां चढ़िया । तिके कितरेक दिनांनै दिली पोहता । पातिसाहजीसैं मालुम कराई । तरैं पातिसाहजी आपरा खासा तनेखगसी[1] अमीर उमराव मेल्ह दरबार अंब-खास मांहि ल्याया । तीने सिरदारे मुजरो कीयो। पातिसाहजी घणो सनमान दीयो। सिरपाव दीधा, रोजीनो[2] हजार तीन रुपीया कर दीना । सिरपाव, मोतियांरी माला, घोड़ा देनै डेरै मेल्या।

हिवै एकै दिन पातिसाहजी पंजू पायकनैं नै वीरमदेजीनै खेलणरो हुकम दीयो। तिको खेलता खेलतां पंजूरै मनमें आई वीरमदेनै मारूं । जठै वीरमदे खेलणने दरबाररो तयारी कीधी । जरै अपछरा गुपत आय कह्यो, पंजूरै पगरा अंगूठा मांहि पाछणों[3] छै, जावतो राखे, सावधान थको रहे. हूं थारा डाव[4] पंजूरै लगावस्यूं । आ वात सुणि वीरमदे आपरा अंगूठारै नीचै पाछिणो बांधि रेतीमें आया । पातिसाहजी झरोखै बैठा देखै छै । उमराव पाखती[5] रेती मांहे खड़ा छै। कान्हड़देजी रांणकदेजी परमेश्वरजीनैं समरै छै। तिसै दोनूं खेलतां खेलतां वीरमदे इसो डाव खेल्यो तिको उछलतो साइमें कालजे पंजूरै कालजे दो। तिको पेट फाड़ि आंत, ऊरू[6], फेफरी[7] नीकल ढेर हुवा। धरती पड़ियो। पातिसाहजी क्युं मसलायो[8], पिण खेल मांहि घाव डाव मोटीयारां[9] री फुरती, तिणसूं क्युं कह्यो नही। तरैं वीरमदेजीनै सिरपाव दे डेरामें विदा कीया।

---

१ अंगरक्षक। २ नित्य का वेतन। ३ उस्तरा, छुरा। ४ दाव, पेंच ५ सभी, चारों ओर। ६ ओझरी, पेट की अंतड़ियाँ। ७ फेफड़े की नाड़ियाँ। ८ उदास हुवा। ९ मर्दों का।

एकै दिन वीरमदेजीरै पहिरण सारू पगांरी मोजड़ी[1] करावण सारू मोचीनै हुक्म कीयो। तरै मोची लाल, मोती, कलाबतू पाटलो दे खवासनै साथे दीधो। मोची दुकान ऊपरि आयो। कनै खवास बैठो छै। मोची परवाना-माफक मोजड़ी करै छै। मोती, लाल-पटा[2], पना लगाया छै। तिसै पातिसाहजीरी बेटी साह बेगम, तिणरी दासी मोची कनै मोजड़ी करावणनैं आई। आगें मोजड़ी करतो देखि पूछियो, आ किणनै मोजड़ी हुवै छै। मोची कह्यो, जालोररो धणी कांनड़दे सोनिगरो, तिणरो कंवर वीरमदे छै, तिणरै पगांरै सारू मोजड़ी बणै छै। दासी मोजड़ी देखि देखि हैरान हुई। दासी कह्यो, देखो, एक मोजड़ी दे ज्यूं बेगम साहिब नै दिखाऊं। मोची कह्यो, छानै-सै ले पधारो। तद दासो मोजड़ी लेनै मांहि गई। कह्यो, बेगम साहिब आप दीन[3] पातिसाहां के फरजन[4] हो, तिको सुचूं पसूं[5] रूसदार[6] मोजड़ी पगां पैहरो हो, पिण एक रंघड़[7] पगांरी मोजड़ी देखो। बेगम मोजड़ीरा पटा देखि कह्यो, इणको नालो न देख्यो। दासी कहै, न देख्यो? तद बेगम कह्यो, मोची डेरो देखि। कह्यो, सिरदारांरो नांम, सवो निजरां देखि पछै पातिसाहकै मुजरै आवै, तद हमकूं दिखाए। ऐ वातां दासी पाछो जाय मोचीनैं मोजड़ी दीधी नैं सिरदाररो डेरो देखि आई। सिरदाररो सघो, देही री मरोड़[8], आख्यां रो पांणी,

---

१ जूती। २ लाल रेशम। ३ दीन-दुनिया के। ४ फर्जंद, सन्तान। ५ बड़ो ही सफाई-चतुराई के साथ। ६ शानदार, ठसकदार। ७ राजपूत। ८ अकड़।

मछर[1] देखि देखि हैरान हुई। दासी पाछी आयनै कह्यौ, बेगम साहिब, नर-समंद[2] मुरधर[3] रा भला ही कहावै, जठै वीरमदे सरीखा जवान नीपजै, देख्यांहीज बणि आवै । और दूजो कोई पातिस्याही मांहि होय तो कहूं। इतरो सुणि बेगमरो जीव बांध्यो[4], नेह विणदीठां जाग्यो। मन मांहे देखणरी घणी ऊपनी[5]। तिसै बीजै दिन दरबार कान्हड़दे, रांणकदेजी, कँवर वीरमदे बड़ी जलूससूं पातिसाहजीरी हजूर आवै छै। तठै दासी बेगमनै झरोखै की झांखो[6] मांहे वीरमदे जीनूं दिखाया। बेगम तो देखत-समान भरतार धारयो। जीव तलवलाटा[7] लैणा मांडिया। वीरमदे-बाहिरी[8] घणी दोहरी[9] छै। तिको पैलांतर[10] रो नेह वाचा-बंधियो[11] छै। तिणरो संबंध कहै छै—

कासी वांणारसी मांहे एक साहूकार कोड़ीधज[12] वसै। तिणरै पुत्र एक। तिको मोटो हुवो, ठावी जायगा परणायौ। जुवांन हुवो। एकै दिन आपरी सौंणहर[13] मांहे सांपड़ै[14] छै नै आपरो अंतेवर[15] हजूर पलाकी[16] कर संपड़ावै छै। तिसै भंखेरो[17] आयो। तरै अस्त्री दोड़ि महिला मांहे पैठी नै साहूकाररा बेटारो डील सारो धूल मांहे लपेट गयो। तरै साहूकार मन मांहे जांण्यो, घर मांहे माता पिता,

---

.. १ गर्व, वैभव, गौरव। २ नर-समुद्र, समुद्र के समान गंभीर पुरुष। ३ मरुधरा, मारवाड़। ४ चित्त आकर्षित किया। ५ लालसा हुई। ६ छिद्रों, झोंको, झांकने का मार्ग। ७ अकुलाने लगा, तलमलाने लगा। ८ वीरमदेव के बिना। ९ दुःखिता। १० पूर्वजन्म का। ११ प्रतिज्ञाबद्ध। १२ करोड़पति। १३ स्वपन गृह, शयनागार। १४ स्नान करता। १५ स्त्री। १६ कुशलता सहित। १७ आंधी का झोंका।

नमारो[1] मवरा[2] लायो, पिग अस्त्री लायो नहीं। नरे पो
ांपड़ि रीम मांहे वठि कासी-करवत[3] छै, जठै गयो। करवत
प्यो, ओ होज पर, माता पिता सभूं नें म्हारा आधा अंगरी
ोज्यो ने आधा अंगरो हूं होज्यो। इसरो कहि कासी-क
ीधो। पाछो उण होज साहूकाररै अवतार लीधो ने हावा अं
ोटा साहूकाररै पुत्री ऊपनी। मोटा हुआ, परणिया। संसार-
ोगवै छै। एक दिन आपरी आगली सुणेर[4] मांहे छै, पोढै
संपाड़ो करै छै। अस्त्री हजूर पांच संपड़ावै छै ने आगला भव
अस्त्री झरोखै आहिवान[6] मांहे बैठी छै। तिका सांपड़नो देवरनै
छै नें ओ साहूकार बैठी जाणै छै। तिसै आंधीरो झंखेरो अड़वा
आयो। जरै अस्त्री आपरा कपड़ासूं साहूकारनें लपेट लीयो,
कपड़ारि लागी, पिग साहूकाररै रज लागण दीधी नहीं। झंखे
टलियो। तरै साहूकार थठी उठी देखि हसियो। तरै साहणी[8] पूछिय
कँवरजी साहिब, आप हसिया तिणरो विवरो[9] फुरमाईजै।
साह कह्यो, आ थारै जेठाणी, तिका पैलै भवरी अस्त्री छै। आ
सांपड़तां झंखेरो आयो थो, ज्यूं आयो। जरै आप दौड़ि सालि[10]

---

१ जोबन। २ उत्तम। ३ काशी में विश्वनाथ के मन्दिर में एक गुस
समीप के नीचे स्थान था, जिसमें पातालेश्वर महादेव के सामने भक्त लोग
आत्म-बलिदान कर मोक्ष अथवा अपना मनोरथ-लाभ करते थे। ४ शयना
गार। ५ पूर्वजन्म की। ६ विधवापन में। ७ वातूल, बगूला, हवा का
चक्राकार तेज झोंका। ८ साह की स्त्री। ९ ब्यौरा। १० बैठने का
कमरा।

में गई, ने हूं रजीसूं भराणो[1]। तरें मोनें रीस आई। पर माता पिता लाध्या, पिण वैर[2] म्हारा जतन करें तिसें लाधी नहीं। तरें खरली ले[3] रीस मांहे ऊठि करोत लीधो। जठे आधा अंगरी थे अखी हुवा ने आधा अंगरो हूं हुवो। ऐ वातां झरोखें बैठी सुणी। तरें साहणीनें रीस चढी। झरोखासूं उतर पाधरी करिवत छै, तठै गई। करोत लेती कह्यो, म्हारें भरतार ओही साहूकार होज्यो। इसो व्रत ले नें करोत लीधो। दइवरें जोग पग हेठें गायरो हाड आयो। तिणरा फरस[4] सूं अलावदीन पातिसाहरें बेटी हुई। लारें[5] साहरें बेटें सुणी, साहणी थारें नांम धारा-करोत[6] लीधो। तरें इण साहूकार बीजी वेला वले करोत लीधो। लेतां कह्यो, आगली अखी सूं वाडि कांटो मती देज्यो[7] ने मोटा राजवीरें देसोतरें[8] जनम होज्यो। करोत ले नें देह त्यागी। तिको जालोर कांनडदेरें घरें वीरमदे कँवर हूवो। तिणसूं पैला भवरी नीयांणासूं[9] वेगमरो नेह लागो।

हिवें अठे वेगम पातिसाहसूं अरज कीधी, मैं वीरमदे सोनिगरानें कबूल कीधो, मेरा व्याह नका[10] करो। मेरा ग्वावंद सिर-पोस[11] जालोर का धणी है। पातिसाह कह्यो, वेगम, ऊ तो हिंदू है,

---

१ मर गया। २ स्त्री, पत्नि। ३ जल्दी से स्नान करने को राजस्थानी में "खरली लेणो" कहते हैं। ४ स्पर्श। ५ पीछे से। ६ काशी-करौत का कठिन व्रत। ७ वाडि कांटो.........दीज्यो (मुहा०)—किसी प्रकार का सम्बन्ध न देना। ८ देशपति, राजा के। ९ धारणा, लालसा से। १० निकाह, मुसलमानी रीति से शादी। ११ शरोभूषण।

मेरी तरफसूं गाढ भांति भांतिसूं करिसूं, पिण मेलो[1] तो खुदाय के हाथ है। ऐ वातां करि पातिसाहजी अंब-खास तखत विराजिया। खांन सुल्तान दरीखानै मिलिया। कानड़देजी पिण आया। जरै पातिसाहजी रावजीनै घणो आदरसूं सगाविध[2] सूं वतलावण कीधी नै कह्यो, रावजी, हमारी लड़की तमारा लड़काकुं दीधी, सलाम करो। हम तुम समधी का नाता है। हमारै तुम बड़े खेस[3] हो। रावजी कह्यो, पातिसाह दीन-दुनीरा छो, हूं पाथरियो[4] घर रौ धणी रजपूत छूं, पातिसांहा सगावल[5] करो, रोम सूंम[6] विलायत रा धणी छै। हूं तो बंदगी करूं छूं। पातिसाहजी घणो हठ कीनो। जरै कह्यो, मोटीयारनै बूझूं; उणरी रजावंध[7] री वात छै। तरै हाथी, घोड़ो, मोतियांरी माला, खंजर देनै विदा कीया, नै कह्यो, सुबै कंवर कु लेनै वेगे आइयो। कानड़देजी आय नै कंवरनै सगली हकीकत कही। तरै कंवर कह्यो, रावजी, जो कबूलो नहीं तो तुरकड़ो अठै ही मारै। तिणसूं प्रभाते हूं साथे चालस्यूं नै हूं वातां करलेसूं। प्रभात हुवां कानड़देजी, रांणकदेजी वीरमदेजी तीनें वडी पोसाख कर हजूर आया। मुजरो कीयो। तद पातिसाहजी वीरमदेजीनै फुरमायो, कंवरजी, हम तुमारै ताई हमारी लड़की साह-बेगम दीधी, कुरनस[8] करो। वीरमदेजी सिलाम करि कह्यो, हजरत, म्हे परा

---

१ मिलाप। २ सगापन के ढंग से। ३ प्रिय सम्बन्धी, माननीय आत्मीय जन। ४ मोया-मारा। ५ सगपण, सम्बन्ध। ६ रोम सूंम'—प्राचीन काल में भारतवर्ष से बाहर के राष्ट्रों के लिए साधारणतः प्रयुक्त होता था। ७ रजावंदी, आज्ञा। ८ स्वीकारसूचक अभिवादन, कृतज्ञता-प्रदर्शन।

धणी रजपूत जमीदार भोमियां[1] छां, पातिसाहरा पूंगड़ा[2] म्हारै घर लायक नहीं, नै पातिसाहां हमकूं दीवी तो कबूल कीवी, पिण परणस्यां म्हांरी हिंदूरी राह[3]। तदि पातिसाह कह्यो, तुमारी राह कैसी? तद कंवर कह्यो, वरस २/३ वनि जीमैंगे[4]। पीछै जांन[5] बणाय, तोरण बांदि, चँवरी बंधाय परणैंगे। दिल्लीरा धणीरैं घरे परणां जिसो सांमो[6] खजानो म्हां कनै न छै। तिणसूं नाकारा[7] री अरज करां छां। पातिसाह कह्यो, लाख १२ रुपीया खजांनांसं ले जावो, नै तीन वरसरी सीख दीवी। थेरे तुमारी राहमें आइयो। सिरपाव दीयो। रुपीया खजांनांसूं कढाय डेरे मेल्या। अबे तीनां मिसलत[8] कीधी। देशमें पौंच गढ समो तो इयांरो मुँहडो तोड़ां। आ वात करि चालणरी तयारी कीधी। तरै साह-बेगम पातिसाहसूं अरज कीधी कि रैवले-जहां, ऐ हिंदू है दगादार[9], जाणां[10] आवे नावे, निसे इणका चचा (?) राणकदे कुं ऊवाल[11] महि राखो। पातिसाह कह्यो, खूब कही। अबे

---

[1] भूमिपाल, जागीरदार। [2] प्रतिष्ठित संतान। [3] रीति, रस्मपूर्वक [4] ब्याह होने के कुछ दिन पहले वर अपने कुटुम्बी और प्रियजनों के यहाँ भोजनार्थ निमंत्रित किया जाता है, इसे "बीन जीमणो" कहते हैं। धीरमदे बादशाहों का दामाद है, अतएव कुछ दिन नहीं, बल्कि कुछ वर्ष तक, बादशाह के धन पर 'बींन' जीमेगा। [5] बरात। [6] सामान। [7] नाहीं। [8] सलाह। [9] धोखेबाज। [10] न जाने। [11] बदले में—वैरी के किसी आत्मीय जन को किसी शर्त पर अधिकार में रखना और शर्त पूरी हो जाने पर छोड़ देना—इसे 'ऊवाल' (Ransom) कहते हैं।

कान्हडदेजी सोख मांगणनूं आया। तरै पातिसाहजी फुरमायौ, रावजी, एक तुम्हारा छोटा भाई राणगदे हमारे पास राख जावौ; ज्यूं हमारे निसां-खातर[1] रहै। कान्हड़देजी आरे कीधी। तरै रांणकदेजीरै असवारीरो घोड़ो फीयड़ो देवांसी[2] छै, तिको घणो चलाक छै। एक आसो चारण रांगणदेजीरै। तिणसूं घणो जीव[3]। तिणनै राखियौ। एक चाकरीनै खवास, तीन आदमी नै तीन घोड़ा राखिनै जालोरनै चाल्या। तरै राणगदेजी कह्यौ, गढ वेगौ करावज्यौ। कांनड़देजीरै सोनांरो पोरसो[4] तो आगै हीज छै, पिण दिलीरा धणीरी तपस्या करड़ी[5]। तिणसूं कुंदी कहणी नावे थी। इण वात ऊपरां जीव आसंग[6] पृथ्वी मांहे नाम राखणनै इतरो कांम कीधौ। गढ कराय वेगो समाचार देज्यो। भठारो घड़ियो उठै हीज पागड़ो छोडस्यूं। इतरी वात कह राह कूच कीयो। तिके मजलां-रा-मजलां जालोर आया। सखरौ[7] मुहरत जोय गढरी नींव दिराई, पिण गढ करावणरो उतावलो घणौ गाढ मांहियौ। रुपीयो पइसा-जू जांणे नहीं। पछै पातिसाहजी तगै मुगल, तिणनै कह्यौ, राणकदे सोनिगरानूं म्हारी हवेली मांहे राखो। इणका जावता तुमारे हवाले है। तगै कबूल करी। रांणकदे पइसा एक भर अमल गलियो पीवै, नै अमल पइसा एक भर आसो चारण करै। नै रांणकदेजी अमल करि कटारी बांधि फीयड़ा ऊपरि असवारि होई नै सुरी

१ विश्वास। २ देववंशी, दिव्य। ३ प्रेम, मोह। ४ प्रतिष्ठापूर्ण उपवर्ण, खजाना इत्यादि (?)। ५ भाग्य अधिक प्रबल है, पूर्व जन्म के कर्म अधिक प्रबल हैं। ६ हिम्मत करके। ७ शुभ।

करावे[1]। तद अमल ऊगे[2]। तिको तगो देखे। तगे पूछियो,रांणकदेजी अमलको तुम्हारे या क्या तरे है। तरे राणगदेजी कह्यो, अमल नै जिण सभाव घाते तिण हीज ढाले[3] ऊगे, जिको झोंथड़ारी खुरी विना मीयांजी, अमल ऊगे नही। अवै दिन ५/७ में मुजरे जाय। पातिसाहजी बहुत प्यार करे। समाचार वार वार पूछे। मास २/३ नै पातिसाह पूछियो, रावजी नै कँवरजो पौंता[4] की कुसल खेम के कागद आए। रांणगदेजी कह्यो, चाल्यां पछै रावजी पोतांरो समाचार आयो, पण वीरमदे दोड़ गयो थो, तिणरो सहिर पोतो नहीं। तिणरो समाचार नायो छै। तिणरी फिकर घणी छै। आदमी च्यारे तरफनैं दोड़िया छै। ऐ समाचार छै। वले समाचार आसी तद मालुम करिस्युं। मास १/२ नैं वले पातिसाह पूछियो। तरे रांणकदेजी कह्यो, अजे स काई खबर नाई छै। तिणरो म्हनि घणो सोच हुवे छै। दीसे पातिसाहसूं मूंढामूंढ[5] नटणी[6] नायो। तिको चाल्यां पछै कठे ही गयो, सो परमेसरजी जांणे, हजरत, बहुत फिकर है। तद पातिसाहजी कह्यो, या तो बुरी हुई, खुदाइ भली करेंगे। पातिसाह मांहि बेगमने कही। तद बेगम कह्यो, हिंदू दगेदार है, झूठ कहै है। जहांपना, इनको आयना रखियो, हिंदू नाठ[7] जायगा। पछै पातिसाहजी गवेसो[8] छोडियो नैं न छोडियो पिण छै।

---

१ घोड़े को फेरते थे। २ अफीम का नशा चढ़े। ३ ढंग से। ४ पहुँचने की। ५ मुँह पर, प्रत्यक्ष में। ६ नाही, निषेध करना। ७ भाग जायगा। पूछताछ, गवेषणा।

ढक गयो। देखि कँवर वीरमदे ऊभो रह्यो नैं पूछियो, दुरत[1] मैंसो कटै ले जावो छो। तरै मीयां कह्यो, चलखरै पातिसाह दिल्लीरा पातिसाह कनै मेलियो थो, जभै करो मती। म्हटकासूं माथो वाढि हमारै तांई सीख दिराई थी। तिको वरस तीन रहे, पिण पातिसाही महि कोई सिपाई नहीं। दिली का पटैल[2] है, जमींपट में भैं[3] स्वायें है। इनरी वात सुंणि वीरमदेनै रीस उपनी। तिको पाखती मैंसारै पसवाड़ै[4] आय परताळै कड़ियांसूं तरवार वाही, तिको सींग नै मायो वाढि दोय पटका कर नांख्या। मीयां देखता हीज रह्या। वाह वाह सगळां कह्यो। कँवर तो पाछा गढ सिधाया नै मीयां तो पाछा दिल्ली गया। जाय पातिसाहजीनै माथो, सींगांरा पटका दिखाया ने कह्यो, ऐसा सिपाई हजूर राखीजे। जालोर कांनड़दे का कँवर वीरमदे नां कुछ वल कीया नां तरवार तोली, कँवरानै लोह करै ज्युं कीधो, पातिसाहांरो बोलवाला[5] हूवा। इनरो कहि मीयां सीख मांगि चलनै गया। इण मैंसारा मुजरासूं पातिसाहजी घणा राजी हूवा। वीरमदेरी खबर पाई। नरै पातिसाहजी इण मुजरासूं राणकदेनै क्युं ही कह्यो नहीं। तरै सोनैरो छड़ीदार मेल नै राणकदेनै बुलायो। रावजी, तुम्ह कह्यो, कँवररी खबर नहीं, सो तो हमारो पातिसाहीका कँवर बोलवाला[5] कीया। तिणसूं तुम ऐसा दगा कीया, झूठ हजूर कह्यो, तिणको गुन्हो माफ वगसियो।

---

१ बेसमय, बेवक्त अथवा तुरंत, भद्दी सम्भव बाघा। २ स्वामी। ३ अर्थ अस्पष्ट है; संसर्ग से अर्थ लिया जा सकता है, मुफ्त ही जमीन का मालिक बना बैठा है। ४ एक बाजू की ओर। ५ यशप्रशस्ति।

पिण, अम्र कंवर सिताब हजूर आवै, त्यूं करो । राणकदेजी कह्यो, हजरत, मोनें अजेस[1] ठीक खबर नही छै । पातिसाह फुरमायो, तो अबै ताकीद करि बुलावूं छुं । सीख मांगि तगारै मेलो डेरो छै तठै आया । इण भेसारै छोह करणेसूं रांणगदे घणो विराजी हुवो । झूठी साचो वात कहि भूलाई[2] थी । पाछासूं पातिसाह तगा मुगलने कह्यौ, हिंदू हमारी निजर दगादार-सा आवता है ने हरा[3] रहा तो चढि चालतो रहैगो । तिणसैं घणो जावतो राखज्यो । वळे सोनारी बेड़ी दीधी, आ राणगदेरै पगां माहे घालिज्यो । चोकी पोहरै[4] घणो जाब्ता राखज्यो । इसो हुकम लेनै तगो हवेली आयो । तिसे पातिसाह गोठी[5] आदमी जालोर चासभास[6] लैणनै मेल्यो थो, तिकोई आय तो । आदमी कह्यौ, गढ समियो, उठै तो पेढरी[7] त्यारी छै । बारै स तांई धांन, घृत, तेल, गुल, खांड, अमल, भाग, तिमारो णीो[8] कपडो, मूंग, धणो[9], दारू, सीसो लोहरो सामान कीयो छै । 'रुईरा फूंभा'[10] लपेट बावड़ी भरै छै । इसो वार्ता बेगमसूं कही । .. पगम आदमी पातिसाहरी हजूर मेलियो ने अरज थी ज्यूं कही । ऐ समाचार तगाने दे मेल्या, घणो जाबतो कराज्यो । अबे सोनारा थाल मांहे सोनारी बेड़ी तगो घालि ल्यायो । तिण वेळा रांणगदेभीरै अमल करणरी वेळा छै । तठै तगो कह्यो, रावजी, पातिसाहरो हुकम छै, बेडी पगां मांहे राखो । तठै आसो चारण इसनें कहै—

---

१ अभी तक तो । २ भुलावा दिया था । ३ बेफिकर । ४ पहरे पर । ५ जासूस, संदेशवाहक । ६ रसद । ७ युद्ध की । ८ जरूरत चीजें । ९ धनिया । १० रुई के पहल (घावों को मरहम पट्टी करने के लिए ।

दूहा

रणका रुणझणकेह, राय-आंगण रमियो नहीं ।
(तो) पहिरस केम पगेह, वडनेररी वणीरउत ।[1]

ओ दूहो सांभळि राणकदे कह्यो, मिरजाजी, अमल करूं, पछे हुकम प्रमाण छै । तगे कह्यो, खूब कड़वा आरोग ल्यो । तरै अमल करयो, कटारी बांधि नै कोथड़े असवार हुवा । तरै तगे कह्यो, हिंदू अजब गिवार है, बरजतां मांहि घोड़े असवार हुवे छै । तठे तगारो वचन सांभळि आसो कहै—

दूहो

तगा तगाई मति करे बोले मुंह संभालि ।
नाहर नै रजपूतनै रेकारै ही गाळ ।।१[2]
तगो न जांणै तोल, मुरस मंदरीकां तणो ।
वायक सुणतां बोल, मारै कै मारै मरै ।।२[3]

१ हे राणकदे, मैं देहियां रुनझुन करके झनक रही है । तू तो अभी राजदरबार में खेला ही नहीं । अपना पराक्रम दिखाया ही नहीं । । तो हे वनवीर के पुत्र, क्या अब इन देहियों को पहन कर बंदी की तरह दरबार में आयगा ? । २ अरे तगा, तू धृष्टता मत कर, मुख में से संभाल कर वचन बोल । शेर और राजपूत को अरे, या रे कहने से गाली लगती है । ३ मूर्ख तगा पौरुष पूर्ण (मंदरीकों) पुरुषों का तोल (मूल्य नहीं जानता । ये लोग कोई वचन सुनते ही या तो शत्रु को ही मार देते हैं, या स्वयं मर जाते हैं ।

इनरो सुणनसमो राणकदे कटारी काढ तगारी छाती माहि जड़ी, कै[1] भर भाद्रवारो कड़क नै वीजली पड़ी । तिके तीन कटारी जड़ि हेठो धरती मेलो कीयो। तरै आसा नै खवासनै राणगदे कह्यो, थे थांहरे पापे पुण्ये होज्यो[2] । म्हेतो थेट[3] जालोर गयां पागड़ो छोडिस्यां नै थे डावा-जोमणा[4] होयने वेगा पधारिज्यो। इनरो कह्यां आसो नै खवास सैर मांहि रमता रह्या[5] नै राणकदे चलाया । निसै हवेली मांहि कूक पड़ी। सेहर हलचलै चढियो। तठै—

दूहो

सुध पूछै सुरतांण श्रो केहो कोलाहल कटक ।
कै रीसवियो रांण कै मैंगल थांभ मरोड़ियो ॥[6]

जरै अरजवेगी जाय हजूर वाको दीयो[7], सोनिगरो राणगदे मिरजा तगाने मारि भागो। पातिसाहजी कह्यो, हम जाण्योहीज थो। भलां, खूब सिनाव[8] पगसीने हुक्म दीयो, परगरूर अम्बर अमीर उमरावांरी वाथीसी विदा करो नै सिनाव मेर करनाल[9] कूप की करावो । मीर मजल होरी दे[10] विदा कीया । मजल पोकै तुरत

---

१ मानो, कि । २ पापे.....होज्यो (मुहा० =अपनो आप संभालना । ३ सीधे, ठेट । ४ दांये बांये, इक्र धिरस्र । ५ अन्तर्धान हो गये । ६ दिल्ली का सुलतान खबर पूछता है कि कटक में यह कैसा कोलाहल है । क्या राणा कुपित हुआ ? अथवा मदोन्मत्त हाथी खम्भे से छूटा है ? ७ खबर दी । ८ अप्ली । ९ तोप की आवाज (कोई विशेष सार्वजनिक सूचना देने के लिए) । १० अभय देकर, मंजा देकर ।

बावीसी[1] विदा चढियां घोड़ां करि आपरा डेरा खड़ा कराया नै बावीसीनै कह्यो, हम तुमारै पीठ लगे आवते हैं।

अबै रांणगदे दिन घड़ी च्यार चढियां दिल्ली थी चढियो थो, तिको रात्रि घड़ी च्यार पाछली थकां रोहीठ गांवसूं उरै[2] कोस च्यार एक गांव पावती नीसरै छै। तठै डोकरी[3] एक गोबर वीणै छै। तिणनै रांणगदे पूछियो, डोकरी, औ किण प्रगनारो गांव छै । तरै डोकरी कह्यो प्रगनो सोमतरो छै, तरै जांणियो जालोर तो नेड़ो कीधो। वलै पूछियो, डोकरी, काई नवी वात सुणी। तरै डोकरी कह्यो, बेटा, घणी वेला हुई वात सुणियनै। रांणकदे कह्यो, कठारी वात सुणी। डोकरी कह्यो, रांणकदे सोनिगरो तगा मुगलनै मारि भागो नै वांसै[4] बावीसी विदा हुई छै नै तिणरै पूठै पातिसाह आप छै। इसी वात सांभलि रांणगदे तांमस[5] साथ कह्यो, फोट[6] भींथड़ा, तो पहिलो वात आई। तठै घोड़ो देवंसी, तिको फिटकारो सुणतसमो धूजणो[7] साथ हीयो फूट हेठो[8] पड़ियो। रांणगदे ऊतर अलगो हुवो। सोच करण लागो, चढीजै किण ऊपरे। तरै डोकरी कह्यो, बेटा रांणकदे, तैं फिटकारो क्यूं दीयो, म्हे तो सीकोतरी[9] छा। जरै तैं तगानै मारयो, तरै हूं उठै हीज थी। इसा घोड़ा फिटकारै गमीजै[10] नहीं। तरै रांणकदे कह्यो, माता, अबै बेट आज दिन ऊगतां पहली जालोर पोहंचो जोईजै। तरै सीकोतर सांवली[11] हुई नै कह्यो, म्हारी पूठि ऊपरि चढो। तरै रांणगदे पूठि

---

१ बाईसी (२२,००० संख्यक सेना), सेना। २ इधर। ३ वृद्ध स्त्री। ४ पीछे से। ५ क्रोध। ६ धिक्कार। ७ कम्प। ८ नीचे। ९ डाकिनी, तांत्रिक स्त्री। १० खोये जाते। ११ श्यामा चिड़िया।

ब्याई थी, तिकारो दूध ले नै खीर कराई। तिके पातलांरै खीर लगाय नै लसकर दिसी नाखी। तिके ज्यूंरीज्यूं पातलां पातसाहरी हजूर ले दिखाई। जरै पातिसाहजी उमरावांमूं मिसलत कीधी नै कह्यो, जिण गढ मांहि अजेस खीर खाईजै छै, तिण गढरो भिलणरो[1] किसो भरोसो। तिणसूं बारै बरसरो जोग, बारां बरसां री तपस्या, ज्यूं बारा बरसरी वेद फले होय तो भलो, नहीं तो ही भलो। तिणसूं पाछा दिलीनै चालो। इसो मनसूबो[2] करि पाछा डेरा चलाया। कूच री अवाज हुई। करनाल कराई। मोरचा उठाया। वेगम साथै ले पाछो कूच कीयो। तिके रांइप-भवराणी[3] आय डेरा दीया। तठे लारै कान्हड़देजी रांणगदेजी वीरमदेजी गढरी पोलि खोली। बारै बरसां गढरोहो[4] टलियो। सैंदाना[5] बाजै छै। चारण भाट जाचक गीत-गुण ले नै मिले छै। विरद दीजै छै। गोठरो हुकम हुवै छै। तिके रसोड़ादार गाठ बणावै छै। दारू री पैणगो[6] हुवै छै।

तिण समै आगै बरस पैली दुदिया दोय रजपूतां मांहे मोटा गून[7] पड़ियो। जरै दोन्यां ही मैं सूली दिराया था। तिके सूक खेलरा[8] हुइ गया छै। तिको वायरो[9] सबलो वागो। तिणनूं वेड़ै जणां दुदियांरो मूंढो भेलो हुवो। तिके वीरमदेरै निजर चढिया। नरै वीरमदेजी दारू री मतवाल मांहि कहणरी सुध न छै। तिण वेळा वीरमदेजीरै चढिनेवो

---

१ ओलें लगें का, गढ के गिरने (हाथ आने) का। २ निश्चय। ३ संभवतः रणथम्भोर का क़िला (?)। ४ गढ का शत्रु द्वारा अवरोध। ५ धौंसा। ६ शराब की गोठी। ७ कसूर, अपराध। ८ सूखा हुआ कंकाल। ९ हवा।

दहियो छै तिको बैठो छै। तिणसूं मसकरी माथै कह्यो, आजरा दहिया मतो भूंडो[1] करता दीसै छै, गढ मिलावै छा। जरै दहियै बहनेवी कह्यो, मड़ांनै[2] किसा बोल वचन कहो छो। तिको वाचा-बंधी[3] कासी-करोत लीधी थी, तिको चूकै नही। अवस्य माथै वीरमदे कह्यो, मूंवांरा ये जीवता भाई छो, मदत करो नै भायांरो वैर ल्यो। पातिसाहसूं मिलि नै गढ मिलावो। तद दहियै कह्यो, बड़ा सिरदार, नर निंदवीजै नहीं। नरांरी अणमापी रासि[4] छै, चाहै ज्यूं करै नै म्हे तो थांहरी भली चितवां छां। पिण, मोटा बोल तो श्रीनारायण छाजै[5]। मूंढै तो इसो कहै, पिण मन मांहे जाणे छै, कदि सीख मांगि पातिसाहजीसूं मिलूं। तिसे दारूरा प्याला फिरिया। सगलांने प्याला देदे चाक[6] कीया। गोठ जीमिया। राति आधी गयां सीख हुई। बीजै दिन दहियै कह्यो, बारै बरस टाबरांसूं बिछोहै रह्या। अबै फते हुई, तुरक पाछो गयो। हुकम हुवै तो घरे जावां। तरै वीरमदे मोती कड़ा सिरपाव दे घोड़ो देनै घरांनै विदा कीया। तिके असवार हुइ पाधरो खंडप-भवरांणी आयो। आगै पातिसाहजीरै कूचरी भेर हुई छै। तठै दहियो डोढी जाय अरजबेगी[7]नं घणो राजी करि मांहि कहायो, जालोरसूं रजपूत जात दहियो वीरमदेरो बेनोई वीरमदेसूं विराजो थको गढरा लेणरी अरज करण आयो छै, हुकम हुवै सो करां। तरै पातिसाहजी हजूर हाथ बंधाय बोलाया। पगे लागा। हाथ सुलाया

---

१ बुरा विचार, घात का विचार। २ मरे हुओं को, मुरदों को। ३ प्रतिज्ञाबद्ध, वचनबद्ध। ४ पुरुषार्थ। ५ शोभा देता है। ६ मस्त किया। ७ अर्ज करनेवाले सेवक को।

पातिसाहजी फुरमायो, तुमारा आवणा क्यूं हुवा । तरै दहियै कह्यो, हूं वीरमदेरो बहनेवी छूं। बोल [1] मारिया। पातिसाहीरा भाग मोटा छै। गढ मांहि सांमो खूटो छै, खीर घृतरीरा दूधरी थी। हूं कहूं जठै जठै गाढ करि मोरचा लगाईजै । म्हे गढरा पूरा भेदी छां, गढ मिलावणो म्हां हाथ आयो । पातिसाहरा तप तेजसूं चढियां घोड़ां गढ फतै करिस्यां। जरै साच आयो। जद दहियारा माणस [2] खालड़ बोड़ावड़रै [3] परगनै रखाया। तिके दहियावाटी कहीजै छै।

अबै पातिसाहजी पाछो कूच कीयो, तिके गढ जाय लागा। तठै वले गढरी पोलि जड़ी। अठै वीरमदेरै वाघो वानर रजपूत छै। रोजगारी छै। तिको हमेसा वीरमदेरै रसोड़ै छै। आदमी सौ-च्यार जीमै त्यांनै सोनारा थाल दीजै। त्यांमें वाघो चलू करि उठतो थालरै ठोलारी [4] दे, तिको विच मांहिसूं आंगुल चार टुकड़ो उड जाय। तिके हमेसा संधाईजै [5]। यों दोइसै तीनसै थाल संधिया। तिके एके दिन वीरमदेनै निजर आया। थाल असंध कोई दीसै नहीं। तिणरो कासूं विचार। जरै रसोड़ादार कह्यो, रावलै [6] वाघो वानर रजपूत आरोग नै थालरै ठोलारी दे तिको विच मांहिसूं टुकड़ा हो जाय, सो हमेसां संधाईजै छै। इनरो सांभलि वाघा वानरनै तेड़ाय [7] नै मिलिया, बांह पसाव कीयो नै कह्यो, थाल तो सगळा असंध कीया; तिसाहीज गढ काम हाथ वाहिज्यो [8]। वाघै कह्यो, श्री कँवरजी, करड़ो मोरचो

१ ताना, व्यंग्य। २ स्त्री, बालबच्चे आदि। ३ मारवाड़ में एक स्थान। ४ उंगली के बीच के हड्डीवाले जोड़ के प्रहार करने को 'ठोला' कहते हैं। ५ जोड़ लगाये जाते हैं। ६ राजगृह, राज-परिवार में। ७ बुलाकर। ८ चलाना।

जांणो, तिको रावल़ा रजपूतनै भल़ावज्यो। हूं कहूं त्यूं करज्यो। पछै श्री परमेस्वरजी करसी त्यूं होसी।

दूहो

सूरा सूरा आहुड़ै माजै जाय मरम ।
तै वरियां कास्यिवसुतन सूरज हाथ सरम ॥[1]

कंवर कह्यो, थे कासूं कहो छो। वाघे कह्यो, मोनै एक वार विना लोह करणरी आखड़ी[2] छै। उण हथियारसूँ बीजो वार ल करूं नहीं। तिणसूं मोनै जायगा सूंपो तठै हजार ३/४ तरवारियां तितरी कटारियां, सेलड़ा घणा तीर मेलाज्यो। पछै रावल़ो लूंण ऊजल़ो कर देखाल़सूं। आ बात कंवर आरे कीधी। तिसै पातिसाहनै दहियां कह्यो, तिको गढरो लगाव छै तठै सुरंग लगावो, ज्यूं गढ मिल़ै। तरै पातिसाह कारीगर बुलाय मुसालो मंगाय बेलदार[3] बुलाया। तिके हमेसां सुरंग चलावे। तिका सुरंग ऊंमाड़ा[4] कनै नीचे जाय नीसरी। तिण वेल़ा राणी थाल़ी मांहे मोती छूटा मेल हार पोवै छै। तिको बेलदार हींसु[5] वाह्यो। तिणसूँ थाल़ी वागो[6] नै मोती नाच्या। रांणो दासी मेलि कंवर वीरमदेनै तेड़ायो नै कह्यो, अठै सुरंग ला दीसै छै। तद वीरमदेजी तेल मण से-च्यार बड़ा बड़ा कड़ाहां मा घणो बल़तो उन्हो करायो। जिसै सुरंगरो वारो खुलियो, तिस

१ शूरवीर शूरवीर से ही भिड़ते हैं। रणक्षेत्र से भागनेवालों को शर्म जाती है। उस समय सूर्यवंशियों की लज्जा सूर्य के हाथ रहती है। २ प्रतिज्ञा। ३ खोदनेवाले मजदूर। ४ रनिवास का एक भाग। ५ फावड़ा, खोदने का औज़ार। ६ बजी, झंकार उठी।

कड़ाहा नाया। त्यांसू घणा तुरक भस्म हुवा। पिण धारो[1] हूवो। जरै बीजे दिन पानिसाहांरा हठ, तिको सोर[2] सूँ भरनै उडायो, तिको भींत पडी। घणो चोड़ो धारणो हुवो। जरै वीरमदेजी तिण मोरचै बाघा बांनरनै राखियो, सेलांरो गंज[3] करायो, कटारियां रा पूज[4] दिराया। उणहीज मोरचै पखरैत[5] सिपाई हाको करि आवे। त्यांनै बाघो तरवार छूटी वाहै, तिको घोड़ो असवार दोनूँ ही टूक होय। यों हजार च्यार तुरकांरो गरो कीयो[6]। सगला सस्त्र नीठिया[7]। तुरक हाको आयो जरै बिगर हथीयारां बाघो ऊभो। तुरक आंवतो देखि बाघै तांमस खाय पाहणसूँ हाथ पछांटियो। तरै हाथ वेणी[8] माहिसूं ऊड पड़ियो। हाथ तीखो रह्यो, तिको हाड सूं लोह करै[9], जाणे कटारी लागी। इसी भांत सिपाई ४०/५० मारिया। पछै तुरकां कह्यो, विण-हथियारो मारै नै आपै देखो। तद तीनसै भेला होय हाको करि बाघा ऊपरां आया। तरवारियांरी छांहड़ी हुई। जरै बाघारी धूय[10] धूथ हुई पड़ी। तिके धूयां उडि उडि तुरकांरै हीलरै जाय लागी नै घहटो[11]। इसी तरै बाघो बांनर खेत रह्यो। आ खबर सुणि वीरमदे गढरी पोल खुलाय दोनों नै कान्हड़देजीसूं मुजरो कीयो। तरै सर्व राज-लोक दाढ उतारियो[12] नै कान्हड़दे राणकदे सोनारो पोरसो थो, तिको बावड़ी

---

१ हार। २ शोरा, बारूद। ३ पचासों का ढेर। ४ ढेर। ५ कवच-धारी। ६ ढेर कर दिया। ७ समाप्त हुए। ८ कलाई। ९ पार करता है। १० मांस के टुकड़े। ११ चिमट गये। १२ तलवार के घाट उतरवा दिये।

माहि नाख्या । कान्हड़दजी देवरा[1] माहि, अलोप[2] हूवा । तरै वीरमदे पेट आपरो परनाल्यो[3] कटारी सूं । सो यूकड़ा[4] काढि थारै मोजां[5] नै दीधा और आंतां ऊमक[6] भेला करि पेटी सैंठी[7] बांधि ऊपरि हथियार बांध्या । आदमी हजार दोय रजपू[...] पोलि माथै गढ मांहि साको[8] कीयो । घणा तुरक मारिया । गजगाह[9] हुवो । तरै पातिसाहनै अरज पोहचाई, वीरमदे बहुत जुलम करै है । तद पातिसाह कह्यो, वीरमदे मारै सो मारणे [...] पिण वीरमदेनै लोह कोई मतो करो । ढालांरी ऊट[10] देनै जीव[...] निलोहो[11] पकड़ि हजूर ले आवो । तरै सिपाया ढालांरा कड़ा दे [...] सांम्हा पालनियां[12] आयनै सांम्हा धरिया । तिसै वीरमदेरा हथिय[...] खूटा, तद झाल्यो[13] । तरै वीरमदे कह्यो, मो नेड़ो कोई तुरक मा[...] मतो नै श्री पातिसाहजीरी हजूर चालो । जरै सिपाई दोला वींटा[14] हजूर ल्याया । तरै मुजरो न कीयो न जुहार कीयो । तरै पातिसाहनं मुलक[15]नै कह्यो, कंवरजी, हम तो हमारी लड़की दीवी नै तुम ऐसा जंग जुलम कीया । हम टकै सैं खरच भए, क्या हाथ आया और बेगम तुम्हारे ताईं कबूल कीया । हम हुकम दीया, हमारा हुकम मेटणे ऊपर एता हसम ले[16] गढ लागे । वीरमदेजी कह्यो, पातिसाहजी, म्हे

---

१ देवालय । २ अन्तर्धान हुए । ३ काट डाला । ४ टुकड़े, मांस की झिल्लियाँ । ५ गृद्धों को । ६ ओझरी, मांस की झिल्लियाँ । ७ मजबूत, कसकर । ८ युद्ध किया । ९ घमासान युद्ध । १० ओट, आश्रय । ११ बिना घाव, अक्षत । १२ बगल वाले । १३ पकड़ लिया । १४ चारों ओर से घेर कर । १५ मुसकराकर । १६ साज सामान फौज इत्यादि लेकर ।

होंदू हां, स्यत्री धरम छां, श्रीनारायणजी नै श्रीगंगाजीनै मांनां, गऊ पूजां, तुलछी मांनां, श्री सालगरामजीरो चरणामृत स्यां, ब्राह्मण पट दरसणरै आधीन रहां। नै जिण मुखसूं श्रीराम-श्रीराम जप्यौ, तिण मुखसूं असुर-मंत्र कलमो कहिणी नावै। पिण श्रीपरमेश्वरजी करै तिकूं प्रमाण छै। तरै पातिसाहजी कह्यो, हम तो तुमारी राह व्याह कबूल कीया था। पिण तुमारै निका पढण की दिल हुई। साहिब एक है, राह दोय कीया है। तरै हजूरी चाकरांनै हजरत कह्यौ, जावौ काजी मुल्लांनै तेड़ो, और वेगमकूं संपाड़ो करावो, सेहरा स्यावो। बांदी सहेलीकूं कह्यौ, सेहुरे गावै, नौबत चोघड़ियै[१] सरू करावै। हुकम कीयो, कंवरजी, तुमही गुलाबके पांणीसें न्हावो। अ वातां सुणि, मोटा-मोटा मनसबदार हजूरी था, तिका नाजर साथे होय गोसलखानै वीरमदेजीनै ले गया। तरै वीरमदेजी मनै नैड़ा जांण लागा। तरै वीरमदेजी कह्यौ, थे कहस्यो ज्यूं-ज्यूं म्हे करिस्यां। तरै आपरा हाथथी कड़छणो[२] खोल्यो नै घूमतो नेत्र फाड़तो मूंछांरा केस सरव ऊभा हुवा। जांणे कोई जम सत्रै सुरकनि गिण[३] जाये तिसो दीसै। तिसै पेटी खोली। तरै-आत-ऊंमरा, फेकरांरो ढिगलो[४] हुवो। तिसै वीरमदेजी नेत्र फेरिया। तरै हजूरी चाकरां दोड़ पातिसाहजीसूं दीठी स्युं कही। कंवर तो भ्यस्त[५]कूं पोहता। तरै पातिसाहजी सुणि-नीसासो राल्यो[६]। खुब होंदू जुवान था। वेगमनै कहायो। नाजरां थी ज्यूं कह्यो। वेगम कह्यो, पातिसाहजीनै मांहे मेलियो। तरै पातिसाह

१ वाद्य विशेष। २ कमरबंध। ३ निगल जाय। ४ ढेर। ५ बहिश्त, स्वर्ग। ६ निश्वास डाला, अफसोस किया।

जी मांहि गया। बेगम बोली, बाबाजी, हींदू मेरा पैलांनर[1] का खावंद है। आगै छःवेलां इण पाछै मेरी देही जलाई है। बांसली[2] कासीजी री वात कही। आ सातमी वेला है। पातिसाहजी जांण्यो पैलांनर का बैर-नेहसूं इतरा धोकल[3] हुवा। बेगम कह्यो, रजपूत का सिर काट ल्यावो ज्युं फेरा ल्यूं, और मैं पाछै जलूंगी। तरै पातिसाहजी कह्यो, तेरी खातर आवै त्यूं करो। तरै बीरमदेजीरो माथो काटि बेगम कनै ल्याया, थाली मांहि घालिनै। तरै बेगम ऊठि सांमी आई। तरै माथो फिरियो नै पूठि दीधी, नेत्र सांमो न जोवै। तरै बेगम बोली, साहिबजी, मैं करोत लेनां भव-भव राजिनै भरतार[4] मांग्यो नै थे मांग्यो, इण लुगाईसूं वाड़ कांटो मता[5] दीज्यो, तिको ज्युं हीज हुवो। अबै हूं फेरा लेनै राजवांसै[6] सती हुस्यूं। कंवारी काठ लैणी नावै[7]। तद मूंढो सांमो फिरियो। बेगम फेरा लीया नै कहायो, हजरत, कासीकरोत लेतां गाइ को हाड पगांरै लागो, तिणरा दोषसूं मुसलमांनरै घरै अवतार लीयो। पिण म्हारो सात भवांरो खावंद छै, मोनै लकड़ी द्यो। खावंद सूं आंतरो पड़ै छै, ज्यूं जायनै मेलो हुवूं नै रूसणो[8] भांजूं। तरै पातिसाहजी कह्यो, हमारा कतेब[9] मांहि आ बात कबूल नहीं। पिण, इणरै वाचा-बंध्यो काम है। तिको बेगम कहै त्युं करो। जरै आगर चंदणरो घर थणायो। हींदू तुरक साथै हुवा। तरै बेगम बीरमदेजीरो

---

१ पूर्वजन्म का। २ पिछली। ३ युद्ध-विग्रह। ४ पति। ५ बाड़······ दीज्यो (मुहावरा—कोई सरोकार न देना। ६ आपके पीछे। ७ कुंवारी कन्या को सती होने का अधिकार नहीं होता। ८ कोप। ९ किताब, धर्म- . कुरान।

धड़ मंगाय माथो धड़ गोद मांहे लेने सती हुई। रांम-रांम कहितो सत्यलोक पोहतो। खावंद भेळी[1] हुई।

घड़ी येठ हुई। रावजीरा रजपूत हजार पांच काम आया। हजार दोय लोहां पड़िया ने पातिसाहजीरा सिपाई हजार १६ काम आया, हजार १०/११ लोहां पड़िया। वडो गजगाह हुवो। इण समीयारा गीत गुण-भावन[2] घणा ही छै। पछै पातिसाहजी दिली गया।

॥ इति श्री वीरमदे सोनिगरारी वात पूर्ण ॥

---

१ इकठी, मिलाप। २ गुणगान।

कहराट तरवहियो

स मुद्र रै विचै कोल्हपुर पाटणरो धणी अनंतराय सांकड़ा छत्रधारी। तिणरै बडो गढ, जमीन[1]। तिणरै एकसो एक भाई-भतीजा निधा भेला[2] गढ मांहि रहै। हुकमी थका चाकर करै। त्यां कनै असवारीनै घोड़ो एक नै खवास[3] एक नै सागड़द पैसारा[4] आदमी च्यार कनै रहै। सगलां कनै इसो जमीत राखै। च्यार आदमी उपरांत रापण पावै नहीं। ऊगमणो मसंध[5] धारै धरतो कोस सौ-तीन तांई आंण धरतै[6]। घोड़ा लाख दोढरी जमीत लीधां रहै। दरियाव मांहे जेहाज मारै। तिणरो माल चीजां घणो ही भेलो हुवै। तिणरै सुजांणसाह मंत्री छै। गढ मांहे बसती घणी, व्यौपारी घणा रहै।

एकै समीये दरियाव गाज्यौ। तरै अनंतराय भायां-भतीजांरै विचै दरबार बैठो। तरै कह्यो, इण लूंड[7] नैं धूर[8] नांखो। वले मो समान धरती मांहि बीजो कुण छै, सो मो कनै गाजै। तरै सुजांण

---

१ जमीन, राज्य। २ इकट्ठे। ३ नाई अथवा नौकर। ४ शागिर्द पेशेवाले, चाकर। ५ पूर्वीय मसनद, पूर्वीय राज्यसीमा। ६ धाक बैठती। ७ घमंडी, दुष्ट। ८ मिट्टी डालकर दबा दो।

मंत्री कह्यौ, महाराज, धरती मांहे घडा बडा राजा छत्रपति, गढपति अनेक छै, नै औ दरियाव तो न्याव[1] गाजै। इण मांहे नवसै निन्नाणँ समाहि जावै छै, नैं धरती मांहे इण समान दरियाव बीजो कोई नहीं, तिणसूं गाजै छै। तरैं अनन्तराय बोल्यो, वलै धरती मांहे बीजो मो जिसो कुण छै, कनां कोई मो उपरांत रह्यो छै। तरैं मुंहते कह्यौ, हां महाराज, धरती मांहे मोटा मोटा छत्रपति, गढ़पति अनेक छै। तरैं अनन्तराय भाई-भतीजानैं कह्यौ, थे एकसो डील[2] छो, तिके एकेक गढपति छत्रपति पकड़ पकड़ नैं मा कनै ल्यावो। इसो हुकम सुण घोडांरा घमसाण[3] लेनै चढिया। तिणां वडी वडी वेढ[4] करिनै भला भला गढपति पकड़ आण सूंप्या। तिणांरैं अनन्तराय पगां मांहे बेड़ियां घालि कैद कीया। हाथां मांहे हथकड़ियां घाली, सगलां कनै[5] सिलामां कराई। आछी ठौड़ राख्या। जीमणरो जाबतो करै, पिण दिन ऊगै दरबार करै, चांदणी बिछाईजै छै। तठे अनन्तराय सिंघासण बिछाय बैसे[6] छः। छत्र धरावै, चंवर ढुलावै। भाई-भतीजा डावी जीमणी[7] मिसल बैसै। सनमुख कलावंत मृदंग मजीरा ले अखाबारी[8] करै। पापतो[9] सागड़द पंसारो लोग ऊभो रहै। तिण समीयै सो राजा कैद मांहे छै। त्यांनै बुलाईजै, सलाम करायनै पछै मूंगड़ा[10] सेर ४/६ आंणि चांदणी ऊपरां विखेर दै। तिकै राजावां कनांसूं मूंढासूं चुगावै नै चुगतो

---

१ ठीक ही। २ शरीर। ३ घमासान, दल, फौज। ४ युद्ध करके। ५ सब के पास, सब से। ६ बैठता। ७ दाहिनी बांई। ८ सेवा, मनोरंजन। ९ चारों ओर। १० भुने हुए चने।

गम[1] करै तो भाला विरांगो,[2] भिगरै सीमो भार[3] दिएई छै, त्यांरा धररका[4] दूगरै[5] होमै। इसो विनति देसोतां[6] मांहे चालै। इसो करै।

तद एकै दिन कह्यो, ठाकुरां, धरतीरा राजा तो मगला बंध धीधा। तिसै एकै कह्यो, महाराज, मगो[7] स गढ गिरनाररो धणी परवाट राजा सरवड़ियो, मालरो मांझो[8] नायो[9] छै। तरै श्री वचन सुण भाई-मनीमनि कह्यो, पढो, झालने[10] ल्यावो। तिको आगे मांहे मनोजा राजा पकड़िया, तरै अठी उठीरो साथ घणो कटियो थो, जरै पकड़णी आया था। जरै सुजांणसाह कह्यो, थां म्होंने विदा कियो हुंत[11] तो धानासूं पकड़ ल्यावतो, साथनै जोर तिलभर आवण देवतो नहीं। तद भाई-मनीजा अरज कीधी, गढ गिरनाररै ऊपरै सुजांणसाह नै विदा करो। तद सुजांणसाह कहै—

दूहो

वियजारो होइ पोठ[12] ले, जाऊं नदी उदांघ[13] ।
मइ ल्याऊं गिरनारपति, तो हूं साह सुजांण ॥

इसो कहि बीड़ो लीधो। अबै पोठ भरियो नै भांति भांतिरी चीजां लीधी। त्यांमें दोय ढाल असल गेंडारी लीधी, नै दोय घोड़ा जलहर[14] रा लीधा, जिणसूं राव फइत्राट रीझै। पोठ लाख एक

१ देर। २ भाले, अणीदार शेल। ३ फल। ४ चुभाना। ५ चूतड़ पर, नितम्ब पर। ६ देशपतियों। ७ अब तक। ८ अधिपति, अगुवा। ९ नहीं आया। १० पकड़ कर। ११ किया होता। १२ सामान का भार, लदाव। १३ उलांघ कर। १४ जलधर, समुद्र का।

कीया। त्यां मांहे असवार हजार दस साथे सुखपाल[1], रथ, नीसांण नगारा लीया। विणजारै रै सदाई हुवै छै, इसो बहानो करि चालतौ चालतौ गिरनाररी तलहटी पासर मांहे राजथान[2] छै, तठै आय पड़ियौ। राजा कहवाटरै पगे लागो। केइक राजांवाली टूंम[3] निजर कीधी। विणजारै कह्यो, मास एक-दोय अठै वालद[4] चरसो नै व्यापार करसूं, लाख पोठ छै। जरै[5] राजा कह्यो, भली बात छै। राजरै हमेसां मुजरै जावै। वडा डेरा कनातां[6] खड़ा कराया। राजा कहवाट सूं घणो प्यार बांध्यो।

दिवै[7] पैला वरस दोय पहिलां राजा कहवाट केइक मोटा-सां उमरावां कनै कोठार मेलणनै[8] टको[9] लीधो थो। तिके उमराव फिर गया था। तिके कहवाटरै छोटो भाई छै। तिणसूं मिलिया नै कह्यो, म्हे तोनैं गिरनार वैसाणां[10]। इसो कहि भाईसूं फाड़ि[11] नैं उमराव दिल्लीरा पातिसाह कनै ले गया। पगे लगायो नै चाकरी कबूली[12]। तरै पातिसाह साथ खजांनो दे घोड़ो लाख एक साथै गिरनार ऊपरै विदा कीधा। तद आ खबर कैवाटजीनैं पोहती[13]। तरै सारापुर पाटणरो धणी वालो नैं छोटो ऊगो, औ कैवाटरा भांणेज छै, साख[14] राठोड़ छै। तिणनैं खबर दीधी। तद साथ सामांन लेनै आया। ऊगारै असवार हजार दसरी जमीत छै। वरस १५ मांहे छै। तिणनैं खबर देत-

---

१ पालखी। २ राजधानी। ३ नजराने के उपयुक्त गहने इत्यादि। ४ बैलों की कतार। ५ तब। ६ खेमा। ७ अब। ८ कोठार मेलण नैं=राज्य कोष की कमी पूरी करने के लिए। ९ कर। १० राज्यगद्दी पर बैठावेंगे। ११ विरुद्ध करके। १२ कबूल की। १३ पहुँची। १४ वंश।

समो[1] आपरी जमीत असवार हजार ६० लेनै आयो नै कछवाटजीरै पगे लगो नै कह्यो, मामाजी, म्हारो कोयो आरै राखज्यो[2]। तरै कछवाटजी कह्यो, भाणेज, थे करस्यो तिको प्रमाण छै। नै कछवाटजीरै कंवर जेसो, तिको बाळक ६।१० वरस मांहै। दिवै उगो ब करै। तिण समीयै ऊगो मचकूर[3] करिनै फोजांरा तुंगा[4] कीधा। एकै दिन चढ़िया, जिके उमराव फिरिया[5] था, माइमूं मिलिया तिणांरा मांणस[6] टावरां सूधा पकड़िनैं ल्यायानै कैद कीधा। आ खब उमरावांनैं पोहनी। तरै उमरावां मेळा होय नैं मसलत[7] कीधी। भांणेज ऊगो रजपूताई मांहै धूळ नांसो, पाघ माथे रही नही, मूंढै मूंछां रही नहीं, नैं धणियां[8]सूं साम्हां हुवां पड़ां नहीं[9]। तो चालो पगे लागां, नै धरती पिण[10] छूटसी नही। तरै कैछवाटजीरा भाइंनै ले डेरा ऊभा मेल्हि[11] रातिरा चढ़िया। तिकै सोरठरै गड़ासंधै आय पड़िया नै ऊगा सूं धतगाव[12] कीयो। जरै वांह-वोल बोल्नैं पगां लागा, मांणस सूंपिया। पटा आधा-आधा दीधा। माथै वळे[13] टको ठहरायो। गाजा नैं पिण कछवाटरै पगे लगायो। खरचो पातिसाहजी दीधी थी। डरी लीधी[14]। अमल[15] निपट करड़ो[16] कियो। जरै कछवाट कह्यो, भांणेज ऊगा, तूं म्हां कनै मठै हीज रह। तरै वठै हीज रहै

१ ऐसे ही (समय)। २ आरे राखज्यो=ध्यान में रखना। ३ व्यवस्था करके। ४ टुकड़ियां। ५ विरोधी हुए थे। ६ स्त्रियां। ७ सलाह मशौरा। ८ स्वामी। ९ साम्हा हुवां पड़ां नहीं=सामना करते बन नहीं पड़ता। १० तो। ११ ऊभा मेल्हि=उठाकर। १२ बातचीत, सन्धि। १३ फिर से। १४ डरी लीधी=ले डाली, ले ली। १५ शासन। १६ कठोर।

डोलरो खरच लागै तिको कछवाटजी दे नै उमराव पटायत छे त्यांरे घरांसूं खरची आवै नै गिरनार रहै।

तिसै सुजांण साह आयो। अबै उणी आछी चीज कछवाटजीरै देखै तो तिका उरी लेवै। एकै दिन सुजांण साह ढाल दोय असल गैंडारी थी, तिके निजर कीधी। तरै घडी रामचंगी[1]रो गोळो वाहि[2] दीठो, तिको चापटो[3] होय पड़ियो, पिण ढालरै ंगरी चिटक[4] लगरी नहीं। तरै मोल पूछियो। सुजांणसाह कह्यौ, जीवरा जतन[5] में तिणरो मोल नहीं, नैं मोल पूछो तो लाख दोयरी छै, तिकै महाराजरी निजर छै। राजा कछवाट घणो राजी हुवो। तिसै ढाल एक जेसो कँवर बरस १३ मांहे छै, तिण हाथ घाल उरी लीधो। ढाल एक उणी उरी लीधी छै। तदि कैवाटजी मलसाय[6] नैं कह्यौ, भाणेज, एकै हाथ ताळी वजावो छो[7]। तरै उणी कह्यौ, मांमाजी, म्हारै तो एकै हाथ ताळी वाजै छै, मामैजी दीठी छै ही। तरै कैवाटजी कह्यौ, भाणेज, म्हारो देह, म्हारा रजपूत, ज्यांसूं जोर कर अमल करणो किसी भारी बात छी, पिण कदेहीक वणसी[8] जद कहिस्यां। उणी कह्यौ, मामोजी कहसी जद त्यार हूं, हुकम देलूं[9] तो रजपूतांनैं छराप[10] लागै। इसी भांत वातां हुई। डेरा गया।

एकै दिन सुजांणसाह अकेलो राजा कनै एक खवास देखनै

---

१ तोप। २ चला कर। ३ चपटा। ४ खरोंद। ५ हिफाजत ६ झल्लाकर। ७ एकै.....छो=(राजस्थानी मुहाविरा)—एक हाथ से ताली बजाते हो, अपनी सामर्थ्य के बाहर साहस करते हो। ८ आपत्ति आ बनेगी। ९ उलांघूं। १० थाप।

कह्यो, महाराजा, ढालां ऊपरि भांभिजनैं कह्यो, तिके ढालां री नाचीज[1] छै, जिण म्हारैं डेरैं दोय घोड़ा जलहररा छै, तिके देख्यो तदि रीझो[2]। पृथ्वी मांहे वस्ता[3] छै। तिण मांहिलो[4] एक घोड़ो महाराज री निजर चढ़ै[5] जिको रखावज्यो। तरै राजा कह्यो, देखां मंगावो। तरैं साह कह्यो, च्यार सुंम[6] उघाड़ो[7] राखूं छूं। पांणी विण डेरा मांहि पाऊं छूं, धूप खेवीजै[8] छै। हमेसा लूंण उंवारीजै[9] छै। तिणां आगे पोथी हमेसा बंचे छै। तिणसूं महाराजा, म्हारैं डेरैं पधारो नैं घोड़ा फेरो, पछै पायगा[10] मांण बंधावो। राजा सुणि खवास साथै ले पारी[11] दिसि नीसरिया, तिके पाधरा[12] डेरा मांहे आया। घोड़ा दीठा। तिसै घरवादार[13] घोड़ा दोनूं ही माथै जीण कसिनै मंडावै छै। तिसै साह उठ डेरा बाहिर आयो। नकीब[14] साथै सगला साथनै कहायो, तैयार होयनै म्हां मेला वेगा होज्यो। इनरो कहायनैं मांहे आयो, सो आगै सांणो था होज, तिसै घोडां पिलांण[15] मांड तयार हुवा। राजा मुंहतो[16] दोनूं असवार हुवा। हथियार तो खवास कनै छै। डेरा बारैं[17] आया। घोड़ा छकड़ी[18] करै छै। तरै साह कह्यो, इणां घोडांरी धाव[19] कोस च्यार ताई एकै सिराड़ै[20] देख्यो, तरै इणां

---

१ नाचीज़, तुच्छ वस्तु। २ प्रसन्न होवोगे। ३ वस्तुएं। ४ में से। ५ निजर चढ़ै=पसंद आवे। ६ खुर। ७ खुला हुवा। ८ धूप किया जाता है। ९ लूंण उंवारीजै छै=नमक न्यौछावर किया जाता है। १० पायगाह, घुड़साल। ११ पीछे का छोटा दरवाज़ा। १२ सीधे। १३ सांस। १४ छड़ीदार, दूत। १५ जीन कसकर। १६ मंत्री। १७ बाहिर। १८ चौकड़ी भरते हैं। १९ दौड़। २० एक साथ, एक सांस में।

री हांम[१] पूरी पोचसी, तिणसूं महाराज, सिराड़ो साथे दिरावों। तरै खुरी कराय[२] कुंडाळे फेरनै[३] सिराड़ो दिरायो। कोस च्यार गया। तठै[४] साथ पिण सगळो आय मेळो हुवो। तरै रथ आंण[५] हाजर हुवो। तरै साह कह्यो, राजा कैवाटजी, घोड़ासूं उतर रथ मांहे विराजो, हूं अनंतराय सांखलारो मुंहतो छूं। आगै सौ एक राजा कैद मांहे छै। थे अनमी[६] था, तिणसूं इसो चोज[७] करि पकड़िया छै। इसो राजा सुंण मन मांहे विचारियो, कनै हथियार नहीं, रजपूत कनै नहीं। तरै रथ बैठा नै चाल्या, तिकै कोइलापुर पाटण पोहता। अनंतराय सांखलारी हजूर[८] ले गया नै सुजांण साह कह्यौ—

दूहो

करि तसलीम[९] कहवाट, इम आखै[१०] राजा अनँत।
पाछो मेलूं[११] पाट, परणाये[१२] गिरनार पति॥

जरै कहवाट दूहो कहै—

दूहो

राजा राजस[१३] जोय, किया आगै मुजरो करूं।
ऊगो भांणेजोय[१४], लाख रुपियां कसूंमो गळै[१५]॥

---

१ हौंस, इच्छा। २ घोड़े को ब्रस से साफ करने को 'खुरी करना' कहते हैं। ३ चक्राकार फिरा कर। ४ वहाँ। ५ आकर, लाकर। ६ नहीं झुकने वाला, अदम्य। ७ कपट, हठ। ८ दरबार में। ९ अभिवादन। १० कहता है। ११ स्थापित करूँ। १२ ब्याह कर। १३ राजा के सदृश। १४ भानजा। १५ जिसके लिए लाख रुपये के खर्चे से कसूंभा (द्रव रूप में अफीम) गलता है।

तरै कैवाट कहै, नाळेर[1] वंटोरो द्यौ नै सिलाम करावौ। तरै थांच्यो नै आरारा घपरका देणा मांड्या[2]। वळे भूंगड़ा आण नाख्या। कह्यो, धुगा। तरै कछवाट कह्यो, थारा जंमाई[3]नै दुख मती द्यो, रजपूत छै तो माथो वाढि राळि[4], अथवा वसोला[5]सूं वाढि, पिण थारो जंमाई ओ काम न करै। तरै घणो ही आरारो अचेन[6] दीयो, पिण नमै नहीं। जरै मननराय कह्यो, वेड़ी पहिराय कठंजरा[7] मांहे दरबार आगे राखो, घरनी मांहि कठंजरो गाडो नै दरबार आवै जिके कठंजरा ऊपरि मारग वहै। पगांरी धूळ मूंढा[8] मांहे पड़े, ज्यूं कानी[9] दिराया। पसवाड़ो[10] फेरण पावै नहीं नै खाणा-पैरणारो घणो जाबतो करावै। अठै राजा कछवाट इसी भांत रहै छै।

दिवै लारै रांण्यां जाण्यौ मरदानै छै, मुत्सा उमराव जांणै जनानै छै। इम दिन तीन हुवा। चौथे दिन उणे पूछियो, मांमोजो दरबार पधारियनि दिन तीन हुवा छै, सु कठै छै। तरै किण ही कह्यो, जनानै गेर मैहलां में छै। तद नाजर[11] मेलि खबर मंगाई। दिन चौथो छै मांहे पधारियानैं, इसो नाजर आयनै कह्यो। जरै खवासनै कह्यो, महाराजा कठै। तद खवास कह्यो, महाराजा नैं[12]साह घोड़ा फेरणनैं

---

१ नारियल । २ प्रारम्भ किया । ३ दामाद। ४ काट गिराओ । ५ लकड़ी काटने का औजार, कुल्हाड़ा। ६ दुःख। ७ काठ का बना पिंजरा। ८ मुख। ९ तरफ। १० करवट। ११ प्राचीन समय में हिन्दू राजाओं के अन्तःपुर में नपुंसक लोग सेवक की तरह रहते थे, जैसे संस्कृत नाटकों में कंचुकी नामक पात्र। १२ और।

विगर हथियारां सिधाया था। साद कह्यौ, कोस ४१५ री धाव पूगे छै। जरै हूँ तो घरै आयो। मैं तो जाण्यौ महाराजा गैर मैलां[1] छै। जरै उणां कह्यौ, ठाकुरे दगो पाधो[2], सकै तो अनंतराय सांखलारा रजपूत नैं वांणिया था। जरै तुरत हीज मेंगल भाट घररो, पीलां आंपांरो धणी,[3] तिणनैं कह्यौ, मांमाजी, सही राजा कड़वाटनैं अनंतराय सांखलारै ले गया। आनै घणा राजा बंध मांहे छै, जिणसूं राजि उठै पधार खबर ल्यावो। जरै मेंगल भाट चाल्यौ, तिको दोढसै कोसरो आंतरो छै। विचै दरियाव छै, तिण मांहे गढ छै, जेहाजां मांहे बैसनें जाईजै छै। उठै किणी जोर पोंचे नहीं। चारण भाटनैं अटकाव[4] नहीं, और कोई हुकम विना जांण पावै नहीं। औ भाट पाघरो अनंतरायरै दरबार गयो नै अनंतरायनं विरुद दीधो,—बडा-बडा गढपतियांरो मांनरो मोड़णहार[5], गढपतियांरो पड़गाहणहार[6], छत्रपतियांरो नमावणहार, भाई अनंतराय सांखला, तो जिसो अबार[7] इण समै कोई हुवो न होसी। अै वचन सांभलि[8] राजा पूछियो, भाटराजारो कठै वास। तरै भाट कह्यौ, सोरठ गढ गिरनार रहूं छूं। राजा कह्यौ, तो घर रा धणी कड़वाटसूं मिलिया, प्रसाद[9] दीयो। भाट कह्यौ, हुकम पाऊं तो जाय प्रसाद द्यूं। तरै कह्यौ, जावो, मिलि आवो। तद भाट मेंगल जठै कठंमरो छै तठै गयो। कैवाट दोलियै ऊपर सूतो छै। बैठो तो होणो आवै नहीं। तीरा ढोहरा खोला हाथ-हाथ लांबा-सा पणा

---

१ दूसरे महलों में। २ दगो पाधो=धोखा उठाया। ३ पीली आँखों वाला। ४ रोक-टोक। ५ मान मर्दन करने वाला। ६ प्रतिग्रहण करने वाला, पकड़ कर कैद करने वाला। ७ अभी। ८ सुनकर। ९ आशीर्वाद।

जड़िया छै। निणमूं ढोलिये सूनौ हीज रहै छै। तठै आय मह
दीयो। सूनै हीज कुरब[1] कियो। समाचार पूछिया नै कह्यौ। ज
कहवाट दूहा कहै—

मैंगल ऊगानै कहै, कठपींजरै कैवाट।
छाती ऊपर सेलड़ा[2], माथा ऊपर वाट[3] ॥
तूं कहितो ज तिकाय[4], ताली तालाहर[5] धणी।
वाला[6] हिवै बजाय, एकण हाथै ऊगला ॥

अै दो दूहा सीखाय दीधा। पाछो अनंतराय कनै आयो। दिन
रहि सीख मांगी। घोड़ो सिरपाव ले गिरनार आयो। भांणज
नै दूहा सुणाया। घणो निपट सोच ऊपनो[7]। तरै ऊगो दूहो

मामा मैंगल सांभलै[8], दूजो न जांणाह।
चौड़ै धूपट बांध नैं, अनंतराय आंणांह[9] ॥

इसो कहि महिलां सचिंतो[10] गयो। तिसै गहलोतणी मैहलां छै,
तिणरै अनंतराय फूंको लागां छै। तिका हजूर आई, पिण ऊगो बोलै

१ आदर किया। २ शेल, भाले। ३ मार्ग। ४ वैसीही है। ५ तारा-
पुर का स्वामी। ६ राठौड़ क्षत्रियों की 'वाला' जाति विशेष, जो सौराष्ट्र के
इतिहास में प्रतिष्ठित हुई है। ऊगा वाला जाति का राठौड़ था। ७ उत्पन्न
हुआ। ८ हे मैंगल भाट, मामा को कहना। ९ मैं सरे-आम सिरपर पगड़ी
बांध कर (प्रतिष्ठा सहित) अनंतराय को पकड़ कर न लाऊं तो जानना।
१० चिंतित होकर।

नहीं । रूसै ठांसणो[1] ढालरी दीधाँ बैठो घणो सचींत दीठो । जदि गहलोतणी कह्यौ, आज तो महाराज घणा साफिकर[2] दीसे छै । तद उणै कह्यौ, चिंता सांभली[3] नहीं । गैहलोतणी कह्यौ, इणरी चिंता मत करो । अनंतराय म्हांरो सगो फूफो छै । वडो मासी उणरै मेहल छै । तदै हूं कँवारी थकी मासीजी कनै मास चार रहिती, तिका उठारी सारी वातांरी मोनैं खबर छै । तरै उणै कह्यौ, स्यावास रजपूताणी बडी ओगाल[4] उतारी नैं म्हांनै जोवाया, थे उठारी हकीकत जांणो तिका कहो । तद गहलोतणी कह्यौ, दरियाव मांहे गढ छै । उठै घोड़ा सो-दोढ पायगा मांहे छै । तिको सोकलि पारचो[5] घास खायै छै, रातब दांणारै पांण[6] सिंहमंसा[7] हे रह्या छै, तिणसूं कोरड़[8] नहीं, दोब[9] (…) नहीं, करड़[10], धामण[11], गांठियो[12] सौ घास घोड़ा चढे हो लागै नहीं । जो घास कोरड़रा दगासूं हूं हाथ चढे तो चढै । तरै आ बात सांभलि उणौ राजी हुवौ । असाढरो मास थो, तिसै मेह हुवा जदै खाटसैं[13] कोरड़ बुवाई[14] । जोड़ि[15] घास बले ठोड़-ठोड़ रखाया । दोब रखाई । यौं करतां आसोज आयो । कोरड़ उपाड़ो[16], घास कटायो । दोब भेली कराई । पछै जेहाज एक कोरड़ सूं, घाससूं, दोबसूं भरायो नै असवार लाख एकरी जोड़ि करि तूंगा जुदा जुदा कीधा नै कह्यौ, कोई बूझै तो कहिज्यो, अनंतराय

---

१ टेक, सहारा । २ चिन्ताग्रस्त । ३ आनी । ४ मदद की । ५ घास की उत्तम जाति विशेष । ६ रै पांणकी वजह से । ७ शेरकी तरह हष्टपुष्ट । ८,९,१०,११,१२, घास की [illegible] । १३ [illegible] पर । १४ बोई । १५ इकट्ठा करके । १६ उखाड़ी ।

सांखलारा चाकर छां, भाई-भतीजांरा छां। इसो बहिनो[1] कर होलै-होलै[2] कोई कठी कोई कठी होय जेहाजां बेस नै कोई सोवत[3] रो मिस करि चारण होयनै वेगा आय मेला होज्यो। हिवे पाछो मुहरत लेनै सिधाया[4]। ऊगो हजार १० घोड़ो ले नै कोयलापुर पाटण उरै[5] कोस ६ दिखणाधी डेरा उतारो लीधो[6]। जठे जिहाजांरो मारग छै तठे जाय उतारो लीधो। त्यां मांहसूं सातसे टाल्ह्या[7] रजपूत ऊगे लीधा। त्यांनै करसावाला[8] झगा[9] पहिराया, गोडां[10] तांइ पांण काढी दोवटीरी दुपटी पोतां[11] पहिराई, माथे मैला पोतिया[12] बंधाया। एक आप पाघ बांधी। हाथ मांहि ढाल तरवार ले बडेरो चोधरी होय बीजां[13] रे हाथ मांहि मोटी डांगां[14] दीधी। जाटांरो रूप कर नाव मांहि बेस गढ मांहि पोंहता। पोलियां[15] करसा देख अटक्या नहीं। मांहि राजासूं मालम करियो, करसा ऊभा छे, हुक्म करो तो आवे। तरै हुक्म हुवो। तरै मांहि पोहता। त्यां मांहे ऊगो मुह्री[16] बोल्यो, राज्याजी, रांम रांम, राज्याजी समाप्या[17] छो। राजा हस्यो। तरै ऊगो कह्यो, महाराज, जाट गधेड़ा की तरह छै, वेड़[18] का रहिणवाला छां, बोलण की सूं[19] ही जाणां छां नहीं,

१ बहाना। २ धीरे-धीरे। ३ सौहबत, संग। ४ चले। ५ के इधर, इस ओर। ६ पड़ाव डाला। ७ चुने हुए। ८ हलकों के से। ९ कपड़े। १० घुटनों तक। ११ पांण काढी····पोतां=मांडी लगी हुई रेजी की धोती की कई। १२ सारे, पगड़ी। १३ दूसरों के। १४ लट्ठ। १५ द्वारपालों ने। १६ अगुआ। १७ (समाधिस्थ) बैठे हुए हो। १८ (बीहड़) जंगल के रहने वाले। १९ कुछ भी तमीज।

माफ करियो। तरे राजा कह्यो, फटै रह्यो नै इतरी दूर कूं आया। तद ऊगे कह्यो, गरीबनवाज, माल्वे का मरे[1] छां, हूं सगला को मुदी छूं नै माल्वे सिवू[2] घणो खेचल[3] करे नै दुख दे छै, दूध-दही, मावो, खांघड़ी[4], गाडी, वेठ पड़ि पावां नहीं[5]। आयध[6] का देवाल छां। एक थांहरे[7] रैतने चैन सुणियो, तैरा थाका पावां[8] आया छां। तद राजा कह्यो, म्हे थांने आघ[9] में ही रवायत[10] करस्यां,वेगा आवज्यो, आछा खेत थांहरा छै। तिसे एकै घोड़ा घनांसूं घास लेने ऊगाने दिखायो, देख्या चोधरी, राजा का घोड़ा घास खे छै। तरे ऊगे कह्यो, महाराजा, थारे-थारे मास फोरड़ घास सुपंखी[11]म्हांकै माये[12] छै। पूला[13] ७/१० ले गया था, तिके निजर कीधा। राजा, बीजा भाई भतीजां सगलां सराह्या ने राजा कह्यो, जा घास नै फोरड़री निचिताई[14] कीधी तो म्हे थासूं निपट घणी[15] गोर[16] करिस्यां, हासल[17] मांहे रवायत करस्यां। सालूरो[18] पाघ बंधाय सीख दीधी। तरे ऊगे कह्यो, पोलियांने कहावो, म्हांने आवनांने रोके नहीं। तद राज-दुवाइनी[19]दीधी। ऊगो डेरे आयो। दूजे दिन ७०० पोट[20]

---

१ आगे। २यवन। ३ कष्ट, अत्याचार। ४ खोंपड़ी=?। ५ वेठ पड़ि पावां नहीं=युद्ध कर सकते नहीं। ६ हासल, कर, लगान। ७ तुम्हारे। ८ थके पांवों। ९ आधे लगान की। १० रियायत, माफी। ११ सुवापंखी रंग का, हरे रंग का। १२ रहता है, जमा रहता है। १३ घास का गट्ठर। १४ निश्चितता। १५ निपट घणो=बहुत ज्यादा। १६ गौर करेंगे, कृपा रखेंगे। १७ लगान। १८ कीमती वस्त्रविशेष की जड़ाऊ पगड़ी। १९ दुहाई, आज्ञा, फरमान। २० भार, गट्ठर।

यांधी नै सातसौ भारा घासरा बंधाया । तिण मांहि ढाल
यां बंधाई । परभात-समांन[1] जाटरो ल्बेस[2] करि नाव मांहि
लिह पोलि आया । जरै चवदै-सै पोटा लेनै दरबार पोहता ।
मिलिया । राजा सूआपंखी दोब रा भारा देखिनै घणो राजी
ई-भतीजा उमराव सारो साथ रहणो दरीखाने[3] बैठा छै ।
ह्यो, हुक्म करो जठे नांखां[4] । राजा कह्यो, बुरज[5] मांहे
तै बुरज कनै आया नै समस्या[6] कीधी । तरै पोटां मूंधी[7]
पड़ग काढ़ि नै ऊपर पड़िया तिकै जाणै जवाररी कड़ब[8]
थरा[9] कीना नै राजा अनंतराय सांखलानै ढाल्यांरी उट[10]
पकड़ लीधो । बीजा सरब मारिया, जीवतो एक न
.......सोर दरबार मांहे सबळो[11] हाको हुवो । जरै
कहै—

दूहो

कां वागी रींठ, मोठ पड़ै माथा मड़ाँ ।
ड़ए मामा ठीड़, आयो दीतै ऊगलो ॥[12]

ोते ही । २ लिबास, पोशाक । ३ आम-खास, राजा का
ने का स्थान । ४ डालें । ५ कोट की दीवारें । ६ सलाह ।
र । ८ कड़बी, भूसो । ९ काट-काट कर बिछा दिये ।
ोर का हल्ला । १२ दोहे का अर्थ—तलवारों का जंग बज
माथों पर अग्नि (मोठ) बरस रही है । मालूम होता है,
दूर करने के लिए उगा आया है ।

कोलाहल झटकेह, कहिजे पाटण में किसौं ।
झीक धागी झटकेह, धायो सहीं त ऊगमौं ॥[१]

सांखलौ[२] ने मसन्दो[३] बांध सहर लूटि डेरे आया। खवास दोय च्यारि पकड़ि ल्याया। दृज्यू सोपड़ो बरस पांच नीचलो[४] राख्यो और सगला कतल किया। ऊगो, राव[५] राठोड़, मारू कमधज[६] हुवो। डेरे आय खवास एक अनंतरायरो तिण कनासू सुजाणसाहनें तेड़ायो[७]। आय मुजरो कियो। तद ऊगो कह्यो, थारा धणीनें छुड़ावे तो म्हांसू रदल-बदल[८] करि। तरै सुजाणसाह आयो। फजी[९] होय नें सुरपाल के रथां मांहि सांखलियां वैसाण ने मकलीयो[१०]। थांज्यांरी जात, इणो ढगो करे जिणनें हमेसां च्यार आगल बाढीजे। जिण डूंगरो[११] संसार छे, धणी फुरमावे जिको सिर माथा ऊपर छे। कानूं धणियां नें कासूं रजपूत, धणीरा भलानें दोड़े। तद सुजाणसाह कह्यो, महाराजा सर्वजाण छे, डूंगरो काम करेसार[१२] छे। तरै ऊगो कह्यो, म्हे थारा धणीनें छोड़ां, म्हे कह्यां ज्युं करे तो। तरै सुजाणसाहनें कह्यो, जिणरा राजा बंध मांहे छे, त्यांनि एक एक बेटी भाया-भतीजा

---

१ पाटण में सेनाओं का कोलाहल कैसा सुनाई दे रहा है, तलवारों के झटके चल रहे हैं, प्रतीत होता है कि प्रलय समुद्र आ पहुँचा। २ [illegible] जाति का [illegible] सर्दार था। ३ कमाई बांध कर। ४ नीचे की उमर। ५ जाति। ६ कमधज नाम की शाखा का वंशज। ७ बुलवाया। ८ अदला बदला कर, अर्थात् विवाह-संस्कार कर, अथवा [illegible] कर। ९ मालिक। १० आगे होकर आया। ११ चमत्कार, [illegible] [illegible] स्वामी का भक्त। १२ [illegible]।

... परणाव तो छोड दूं। तरै साह
प फने जाय नै मसलत करी, नै सांखलै कह्यो, घरतो जीवरै
रक है, तुरकनि बेटी दीजै छै, तो अे तो राजा आपणा ...
दाय आवै[2] त्यूं दे लेनै सुमाय। बेड़ी हथकड़ीसूं
। तरै साह ऊगा कन्है आय सरब वात कबूल कीधी।
होजारा तूंगा था, तिके आय भेला हुवा। ऊगै र
म गोधूलक[3] रा फेरा लिवाय द्यो, जावो, तोरण चं
बंधावो। साह सगली तैयारी कीधी। गोधूलकरी
वाटजी तो दुलहा नै दूजा राजा जानी[5] ज्यूं है
रा मंगाय सो ई राजारै बांधिया। सरब राजा धं
प कैवाटजी साथे सांखलियां परणिया। गीत, सेहुर
। सैंदानां[6] नौबत बागी[7]। राति मालियैं पौढ्या।
कैवाटजी साथे करि असवारी बणाई नै मुदै[8] कैवाट
लां के रथां मांहे सांखलियां बैसांण[9] नै मलीटा[10] नैं थं
[11] जठै ऊगारो डेरो छै तठै आया। ऊगो साम्हो ज
गो। तद राजा कह्यो, ऊगा, धन थारी माता पि
म्हां मांहे विपति पाड़तो[12] नै जीवतो करेई
उपगार सगलो राजासूं तैं कीधो, थारो पृथमी मां

...के वास्ते। २ दाय आवै=पसंद आवे। ३ गोधूलि बेला
...रे का मंगल गीत। ६ निशान। ७ बजी। ८ अगवा...
...र। १० आगे चले। ११ घुसते घुसते। १२ दुख।

नींव अमर हुवो। राजा कैवाट दूहो कहै—

राठोड़ांरी कुलत्रिया, सीला गरभ न धरंत ।
ज्यां भरतार न भंजणां, से भंजणा न जणंत ॥[१]

यों वार्ता करता डेरा मांहे आंण पोहता। मसंद[२] माथै कैवाटजी बैठा। डावी जीवणी मिसल[३] बीजा राजा बैठा। मूंढा आगै कंवर दैसे त्यूं ऊगो बैठो। साह सुर्जाण ऊभो छै। तिण समीयै अनंतरायरै पगां मांहे बेड़ी, हाथां हथकड़ी, माथा ऊपर चींथी[४], तिण ऊपर पाघ लपेटियां हजूर बुलायो। तरै कैवाटजीसूं लेनै[५] सगला राजानि सिलाम कराई। अनंतरायनै वले मूंगड़ा सेर एक मँगाय चांदणी ऊपर बिखेराया नै कह्यो, भूंगड़ा चुग। तरै चुगै नही। तरै पिरांणियरि तीखी आरां, तिणसूं चपरका देणां मांडया ढूंगारै। तरै मूंढासूं भूंगड़ा चुगण लागो। भूंगड़ा चुगायनै ऊगो कह्यो, सुणि हो सांखला, ठाकर मोटा मोटा गढपती छत्रपती था, तिणांरै नै थारै कोई लांबो[६] वैर नहीं, धरतीरो विरोध नहीं, कोई हाड-दैर[७] नहीं। तैं इणांरी इसी भांत इज्जत गँमाई। सदाई सबलो राजा निवला राजा नै झालना[८] आया छै, बंद मांहे सदाई राखना आया, पिण लो ठाकुर ज्यूं कोई अति-गति[९] मांडे नहीं। तिका परमेश्वरजी सोनैं

---

१ राठौड़ों की कुलवधुएँ व्यर्थ ही गर्भ धारण नहीं करतीं। जिनके पति रणभूमि से विमुख होने वाले नहीं हैं, वे रणभूमि से भागने वाले पुत्र पैदा नहीं करतीं। २ मसनद। ३ प्रतिष्ठाद्योतक क्रमबद्ध पंक्ति। ४ चिथड़े। ५ कइवाट से लेकर और सब। ६ बहुत बड़ा, लम्बा। ७ पुश्तैनी द्वेष। ८ पकड़ते, कैद करते। ९ अनीति, अत्याचार।

आख्यां दिखाई छै। तीनै दिनाँई[1] च्यार-च्यार आंगुल पसोलासूं वढाईजे[2]। सगाविध[3] पिण हिवै, सगौ हुवौ तो साम्हो ओवण आवै नहीं, सगाविध देखणी। इसो कहि घेड़ी कटाई, हथकड़ी कटाई, कड़ा मोती दे घोड़ै चाढि पाटण पोहचायो।

ऊगौ सगलां राजा साथे करि कूच कीयो। तिको कोस सौ दौढ सोरो आंतरो[4] छै। तिके मजलांरी मजलां[5] गिरनार पोहतो। दिन ४/५ राजांनै राखि नै सीख दीधी। हाथी १ घोड़ा ७ दे नै साथ दे आप आपरा गढां पोहचाया। घड़ो पृथमी मांहे राठोड़ ऊगारो नाम हुवौ। हिवै कैवाटजी गिरनार राज करै। वरस पांच पछै ऊगो पिण आपरै तारापुर सहर आयो। सुखे राज पालै छै। कैवाटजीरो कंवर जेसो वरस १७ मांहे हुवौ, तरै कैवाटजी रांम कह्यो[6]। जेसो टीकै बैठयो[7]।

---

१ प्रतिदिन। २ बढाना चाहिए। ३ समधीपना, सम्बन्धीपना। ४ अन्तर, फासला। ५ मंजिल पर मंजिल। ६ राम कहा—मरे। ७ गद्दी बैठा।

जपड़ा मुपड़ा भाटीरी वात

पछिम दिसनै पाटण गांव छः। तठै ऊधो भाटी राज करै। तिणरै दोय बेटा हुवा। त्यांरा नाम भीवो नै देवो दीधा। तिणांरै गांव अढाई-सैरा धणी घणा रजपूत खाव-पीवता रहै। असवार सामसै अथवा हजारोरी साहिबी छै। तठै टीका सगाईरै भीवा देवानै परणायो। तठै बरस १६ मांहि भीवो हुवो। तठै ऊदैजी राम कह्यो[1]। भीवोजी टीकै बैठा। उमरावांनै घणी रीझां[2], सिरपाव, घोड़ा, कड़ा दीया। दोनां ही भायां मांहो-मांहि घणो मेल रहै छः। तिण भीवासूं मामारो घणो ओव[4]। तिकै सुखै राज करै।

तिण समै दिल्लीरै पीरोजसाह पातिसाह, कुतबदीन साहिजादो राज करै। त्यांरै उमरावांरो घणो ठाट। मोटा मरातब पाविया। आ बात भीवै ऊदाणी चारणां-भाटां आगै सुणी। तरै भीवैजी मनमें सूतां सोचियो, जिकै बडा बडा राजवी पातिसाहांरी चाकरी करै, जिकै घोड़ा हाथी हुनरवार कमावै[5] पावै, बडा हुरब[6]नै लेवै। सो हूं पिण पातिसाहांरी चाकरी करूं। इसो विचार नै प्रधान हुवा

---

१ स्वर्गस्थ। २ [illegible]। ३ [illegible] दिया हुआ इनाम। ४ मोह, प्रेम। ५ [illegible]। ६ [illegible]।

माताजीरै मुजरो करणनै मांहे गयो। तरै मुजरो करिनै हाथ जोड़िया नै कह्यो, जे वडा वडा राजवी गढपती नामजादीक हुवै तिके दिल्ली रा धणीरी चाकरीं कियांसूं वडा हुईजै, नै कह्यो छः-'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा'-मनरा मनोरथ पूरणनै समय छः, तिणसूं श्री माजी साहिब, हुकम करो तो पातिसाहांरी ओलग[1] करूं। इण वही वेस मांहे सारो विवहार छः—

दूहो

जोवन दरब न पट्टिया,[2] ज्यां परदेसां जाय।
गमिया[3] यूं ही दीहड़ा,[4] अहिल[5] जमारो[6] जाय॥
ज्यांनै पांच न ओळपै,[7] मरी गरदह[8] मांहि।
तिणही हंदो[9] हे सखी, जीतव[10] ही कुछ नांहि॥

तिणसूं पीरोजसाह पातिसाहरी चाकरी करां। तरै मा कह्यो, बेटा, थारै किसी बातरी कुमी छः। थारा बाप-दादारी पाटो[11] अमा घणी छः, तिका खाव नै चाकरी मांहे किसूं छः, पारकै[12] आधीन रहणो, रातदिन चाकरी करणी, सेरा धांन खावणो नै सूं घर बैठा हीं याटो खातां धूजी आवै[13] छः। सुख छोड नै दुख कुण आदरै[14]।

---

१ सेवा, परदेश में आकर सेवा करना। २ उपार्जन किया। ३ गमाये। ४ दिन। ५ व्यर्थ। ६ जीवन, जिन्दगी। ७ पहचानते। ८ सभा। ९ तिण ही हंदो=उनका तो। १० जीवन, जीना। ११ उपार्जन। १२ दूसरे के। १३ बाटो खातां धूजी आवै (मुहा०)=चैन से जीवन-निर्वाह करते हुए को उन्माद होता है। १४ स्वीकार करे।

तूं ही ज पिण राजियो[1] छः। थारै वडेरां लाघा फूलाणीरी चाकरी कीधी, रजपूतांरो नांम देणां नै मारणासूं छः। इतरो सुण मा कनै वलै भींवैं घणा हठसूं हुक्म करायो। तरै बाहिर आय रजपूतां सूं मसलत[2] कीधी। चाकरीरो वेंदराव[3], डेरा कनात सामान खरची लीधी। असवार सौतीन (३००) सूं चढियो। लारली[4] भोलावण भाई देवानै दीधी। सपरै सावणे[5] चाल्या, तिके दर-मजले दिली पोहता। सपरी ठोड़ आपरी मिसल मांहे डेरा कीधा। पातिसाहजी सूं मालुम करायो। हजूर आवणरो हुकम कीयो। तठे मीर-मजलस रैं साथे होय पातिसाहरैं निजर पेस कीधी। पातिसाहजी आछो रजपूत देखि, चरको[6] डोल, रौबरो, मरोड़ देख नै तीन हजारीरो मुनसप दीधो, ठोड़ घनाई, सिरपाव, हाथी, घोड़ो, मोतियांरी माला किलंगी, खंजर दे विदा कीयो। जागीरो नीसरो। मोटै तोल[7] में बधियो। पातिसाही मांहे नामजादीक हुवो। इसी भांत बरस दोय तथा तीन बीता। तठै काबलरै दिसी नवनेआ पठाण छः, त्यां ऊपरां पातिसाहजी बावीसो[8] विदा कीधी। तठै बडा बडा मीर उमराव विदा किया। त्यांनै भींवा ऊदाणीनै सिरपाव दीधो। जरै भींवैजी अरज कीधी, म्हारै कनै पातिसाहांरो सुघो निजर सूं हजार तीन असवार छः, वले सिरधीरा घाड़ा साथ राखिनै हूं जावूं। जरै पातिसाहजी पूठि[9] थाप दी नै कह्यो, तुम्ह सेर जुवांन ऐसे होज हो, पिण आगै जायगा विषम छः, तुम तुम्हारो नौकरो सिपागरी आछी करियो।

---

१ राज्य का स्वामी है। २ मसौरा, सलाह। ३ ......।, ४ पीछे को। ५ शकुनों से। ६ ओजस्वी। ७ गिनती में। ८ सेना। ९ पीठ।

इतरो काँहि बिड़ा किया। तिको सगळां उमरावांरो साथ हजार तीस असवारांसूं कूंच कीयो। तिके पठांणांरै देस मांहि गया। पठांण सांमा आया। वेढ[1] टणकी[2] हुई। डं.रा[3] घण छूटा। तठै भींवो ऊदाणी आपरै तीनसै असवारांसुं तरवारियां धाप वतरियो[4]। साथ सगळो कांम आयो। भींवाजीरै एक बाजू लोह[5] ४/५ लागा। तिवला सवला तद घणां रजपूतांरी लोथां मांहि घणा जाड़[6] मांहि पड़ियो। तठै घोड़ांरो चरवादार[7] थो, तको घोड़ो लेनै नीसरियो, तिको पाटण जाय सगळी हकीकत मांडिनै कही। भाई मा घणो दुप कीनो नै कह्योः—

दूहो

रिण रहचिया[8] म रोय, रोए रिण छाडे गया।
इण घर तो आगी लगी, मरणै मंगल होय॥

हिवै भींवाजीनै रिणखेत पड़ियनि दिन होय हुवा। तिसे तिसां मरै। तिण समीयै कैइक जोगेसर अकळपंथ हींगुळा जंफरस[9] आवै था। तिकै रिणोइ[10] देखि वातां करै छै, भाई भाई, रजपूतांणियां धवड़ी[11]रै परणै[11]रा लोहां धाप पोढिया छै, औ सुर भींवारै कानै आयो। तरै भींवै माथो ऊंचो कीयो। तरै योगीसर रिणोई मांहे होयनै कनै आया। तरै भींवै पोक[12] मांडि दिखाई। जोगीसरां कनै तूंबी

१ युद्ध, मुठभेड़। २ भीषण, जोरदार। ३ शत्रुओं के। ४ मन भर के तलवार चला कर गिरे। ५ घाव। ६ झुंड। ७ सईस। ८ अनुरंजित, लवलीन। ९ योगियों का एक पंथ विशेष। १० रणभूमि। ११ वीरांगनाओं। १२ ओकके। १३ पानी पीने के निमित्त हाथों की बनी अंजलि।

मांहे पांणी थो, तिको पायो ने अमल खवायो। सावचेत हुवो। तद भींवो बोल्यो, गरूजी, मोटी कूंडरो ठीकरो छूं[१] ने म्हारा पापली म्हारा रजपून रिणपेत पड़िया छै। मो कनै मोतो कड़ा छै, कटारीरी पड़दड़ी[२] मांहे २५ मोहरां छै, तिको मोनै चेलो करो। तरै जोगीसरां झोळी मांडिनै उठायो, तिको किणहेक सहर ल्याया। पाटाबंध[३] तेड़ने पाटा बंधाया। भींवारा जावता भांति-भांतसूं कीना। कड़ा मोती बेच नांणो[४] कीधो। तारा मलीदा करै ने भींवानै पवाड़ै ने आप होज खावै। इसी भांति लोहसारां हुतां बरस एक लागो, घाव फूदे आया[६]। तरै महंत जोगेसर कह्यो, अब भींवा, तूं थारै घरे जा, थारा कुटंब मांणसां मेळो हुइ। तरै भींवो बोल्यो, म्हारा देस मांहे मोटी एक कुरीत छै। कोई ठावो गाँमेती वासड़ियो तथा घररो धणी रजपूत मरै, मोटियारकै कांम आवै, तो उणरी बायर[७] गाघरांणो[८] करै। तिणसूं किसूं करूं घरे जायनै। तरै जोगेसर कह्यो, गाघरांणो क्या कहीजै। भींवै कह्यो, देवर होय तिणसूं घरवास करै, भोजाई देवररै घर मांहे पैसे। तिकै म्हारै वांसै[९] देवो छोटो भाई छै, तिणसूं देसरी रीत रजपूतांणी कीयी होसी। म्हारै चाकर खबर दीधी छै। तिणसूं घरे किसे मूंढै जावूं, म्हारो परणी लहुड़ा[१०] भाईरी अंतेवर[११] कहावै, तिणसूं ओ सबद मोनैं जरै[१२] नहीं। मोनैं दरसण हीज द्यो। ताहरां जोगेसर छोटे

---

१ बड़े घराने का बालक हूँ। २ कोष। ३ मरहम-पट्टी करने वाले। ४ रुपया-पैसा। ५ मुलाकर। ६ घाव भरने को आये। ७ स्त्री। ८ नाता, पति के मरने के उपरान्त स्त्री पति के निकटतम पुरुष की स्त्री बन कर रहे-उसे 'गाघरांणो' कहा है। ९ पीछे। १० छोटे। ११ पत्नि। १२ सहा होना।

आसण बैसांण थोड़ो सो चीरो दीयो, कासमीरी मुद्रा घाली, ना सूंप्यौ, माथै टोपी पहिराई, सेली गळा मांहे घाली। तिको भींवोजी भींवरावळ कहावै, धरतीरा तीरथ करै जोगीसर साथे। तिसै आपरा गांवसूं कोस तीन ऊपरै कोई गांव छै, तठै ऊतरीयो। तरै भींवैजी गुरसूं अरज करि कह्यो, गरूजी, हुकम करो तो अठासूं कोस तीन ऊपरां म्हारो राजस्थांनरो पाटण गांव छै नै माता भाई छै, थे कहो तो कुटंबजात्रा करि आऊं। गुसांई कह्यौ, जावौ। तरै भींवो चाल्यो, सो पाटण आय पाधरो कोटड़ो आयो। आगै देवो पोळ मांहे मांचा[1] विछाया छै। त्यां ऊपरां देवो नै रजपूतांरो साथ छै। आइस देनि सगळां आदेश कीयो, पिण किण ही उळख्यो[2] नही। तरै भींवो एकै ढेचा[3] ऊपर बैठो। देवै तीरथांरी वात पूछी। तिसै देवानै जीमणरो तेड़ो आयो। देवो मांहे जींमणनै गयो। तद देवै मानै कह्यो, मा, एक जोगेसर पोळि बैठो छै, तिणनैं थाळी परूस मेल्हो। तरै चाकरारो खीच, रोटा, काचरीरी भाजी, पईसा तीन भर घी परूस छोकरी लेनै आई। तठै छोकरी पिण उळख्यो नहीं, थाळी पत्तर मांहे खीचड़ो रोटा घालि मांहे गई। भींवै जांण्यो इनरां मांहे किणी उळख्यो नहीं, नै मातारो मोह मोर्थी घणो थो, पिण वरस ६ हूवा छै, कि आंणोनै तिसो हेत छै कै न छै, पिण मातारो दरसण कीधां विन जाऊं नहीं। जो माता उळख्यो तो पांच दिन टिकसूं, नहीं तो दरसण कर मैड़ो[4] दे रमतो रहिस्युं। इसो विचार पांणी मांगणनै डोढ़ियां आय अवाज कीधी, माई, पांणी पावगा। तिसै माता सबद सुणिनै कह्यो, हे देवारी

१ खाट। २ पहिचाना। ३ खटिया पर। ४ मिलाप।

बहू, दोढी जोगेसर पांणी मांगे छे, पिण जांणे म्हारा भींवड़ारो साद छे। उआरी जाऊं[1] जोगी थारी बांणी ऊपरा ! इनरे भींवे जांग्यो माता साद ऊलख्यो। तरे भींवो पोलि में पाछो भांचे जाइ बैठो। तिसै अटसूं लोटो भरि दोढी स्याई। देपै तो जोगीसर तो नहीं। तरे कह्यो, बहूजी साहिब, जोगेसर तो तिसियो हीज पोलि मांहे गयो। तरे माता पड़ाऊ पगां मांहे घालि हाथ मांहि आसो लेने छोकरीरे हाथ लोटो देने पोलि आई। तिसे भींवारी नै मातारी निजर मिली ने माता ओलख्यो। तरे डोकरी आंप्यां गलगली[2] करिने गले मूंबी ने[3] कह्यो, धन दिन आजरो, घणां दिनांरो बीछड़ियो पुत्र मिल्यो। अठीने भींवे ही आंपि भरी। तिसै देवे आरोगने असास कीधो थो, तिको हाको सुणि बारे आयो। रजपूत पिण सारा भेला हुवा, सगलां ऊलख्यो। तारां भींवे पाछली बात हुई थी त्युं कही। तरे देवे कह्यो, भाईजी, ओ राज, घोड़ा, गांव, रजपूत रावला छे। तरे भींवो माता भाईरे हठसूं रह्यो। दरसण उतारण[4]रो हठ घणो ही कीन्हो, पिण दरसण राख्यो। आमो पेरे, पाघ बांधे, मुद्रा लपेटी राखे, रजपूतांनें घोड़ा, ऊंट बगसीस करे, नै मांहे तो कोइ जाये नहीं, बारे हीज रहास[5] करायने रह्यो। तरे देवे कह्यो, रावली रजपूतांणी रहलो तो तिका छे, नहीं तो और सगारे व्याह करो। तरे भींवे कह्यो, जोगीजसी[6]। सुप मांहे रहे छे।

हिवे पाटणथी कोस ४० ऊपरे फागलो बलोच रहे। तिको बड़ो मोकाई[7], गांव ४० रो धणी। तिणरे बेटी एक, पिडसंधी। तिका बरस

---

१ बलिहारी जाऊँ। २ अश्रुयुक्त। ३ लिपट गई। ४ योगी का बाना तजने के लिए। ५ रहवास, मकान। ६ देखो आयगी। ७ शूरवीर।

११ मांहे हुई। तरै आंटै भीलसूं सगाई छोडी। तिसै कागड़े रलोचरो डील वेचाक[1] हूवो। तरै कागड़े कह्यो, तुस्सांडे[2] जीवनै चेन रख, अस्सांडा लेप है त्युं होगा। कागड़े कह्यो, तुस्सानै अल्ला जांणै, पै एक बात अख्खूं[3] सो सुणो। सिकारपुर में पठांणांदी घोड़ियां लेण नैं दोय तीन वेला झूका[4] दिया, तहां अस्सांडा दांत पट्टा किया, हथ पगां पड़ अन्त आया। सो पुत्र नहीं, पुत्र होय तो सिकारपुर पठांणां दी घोड़ी ल्यावै। इसो सुण पिउसंधी बोली, मैंडा बोल सचा जांणे तुस्सांडी पुत्री हूं तो घोड़ी ल्याऊं। ओ वचन सुणि कागड़े कह्यो, तो पंजा[5] दे। तद पिउसंधी आघो हाथ करि कोल कियो। कागड़े देह छोडी। तरै पिउसंधी कफन देनै चालीसो कीनो।

अठै पिउसंधी कागड़ैरी असवारीरो घोड़ो, तिण ऊपर घोडारी असवारी सीखै। वरस एक मांहे घोड़ो सारियो[6] नै पकी असवार हुई। तरां[?] पठांणारै बेटां साथै तीरंदाजी सीखै। पायंदाज[7] मांहे हाथरी साचोट सफाई सीखै, सो कागड़ो तीर सूं पांचसै पांवडा[8] रै आंतरै आदमी जिनावर उठाय लेतो नै पिउसंधी हजार पांवडां ऊपर चोट करै, निका आगीनै पांवडा दससूं कीधी। इसो भांति वरस पांच सीखतां लागा। माथै केसां रो झूलो[10] रहे नै ऊपरां लपेटो बांधै। वागो, पिलकमा[11] बगतर वैरै।

---

१ असमर्थ। २ तुस्सांडे, अस्सांडे, दी, अख्खूं, ये सिन्धी, पंजाबी के शब्द हैं-भाषा की यथार्थता दिखाने के लिये प्रयुक्त हुए हैं। तुस्सांडे=तेरे। ३ कहूं। ४ आक्रमण, डाका। ५ ताली देकर वचन दे। ६ तैयार किया। ७ ......। ८ लम्बाई। ९ कदम। १० अलाघुर। ११ चमकते हुए।

लोही मार्यो[1]। तरै अबै बरस सोळै मांहि हुई। तरा पछै सिकारपुर री घोड़्यां लेगने चाली। तरै तरगस तीन भूथड़[2] लीना, कबांण तीन अठारटंकी[3] लीवी, तरवार दोय, कटारो एक, सिलहै साबत[4] होय घोड़ै पाखर[5] लगाय सिकारपुर सांम्हा मोड़्या। तिका दिन ५/६ नैं सिकारपुरसूं उरै कोस पांच तलाई छै, तठै घोड़ांनै मेल्यो छै।

अबै भीवै ऊदाणी एकै दिन रजपूतांनै कह्यो, मिनख जमारै आय कोई जिणमो मांहि नांम न कीधो तो यूंही ज आया। तरै रजपूतां कह्यो छै—

दूहो

गह राखा नह मांथिया[6], लद्द[7] दे सुजस न लिद्ध।
मांनहै[8] इसां मानव्यां, केहा कारज किद्ध॥

तरै रजपूतां कह्यो, म्हारो मन यूं कहै छै, एकासूं सिकारपुर पठांणांरी घोड़ी पांचसै सातसै ऊठरै[9] छै, तिकै ल्यां, कुसलै घरे आवां, जिणमें प्रमाण नाव रहे। रजपूतां कह्यो, वाह वाह, निपट मोटी विचारी, सावण लगा लेनै पधारो नै श्री माताजी करै तो पठांणांनै भूंडा[10] दिखाय नै घोड़ियां ल्यावां नै सुरी करां। तरै सारां आ बात ठहराई। तरै भीवै असवारी मांहिसूं घुण-घुण कालरा परपा[11]

---

१ लोही मार्यो (मुहा० =किशोरावस्था की उमंगों का दमन किया, अथवा सहनशील होना)। २ भाथड़े। ३ अठारह टंक भारवाली। ४ कवच (जिरह) से सुसज्जित होकर। ५ घोड़े का कवच। ६ हम भोगा। ७ लाभ। ८ मानव जीवन में, मानवे में। ९ निकलती है। १० नीचा दिखा कर। ११ काल के समान कभी।

असवार हुवा। जिके ३०० टालिमा चढ़िया। सावण निपट सरस हुवा। तिको दिन सात मांहे कोस पांच सिकारपुर करे घोड़ा मेल्हिया। अठे रात्रि पड़ी। तरे भींवे एक आवतो आसम सिकारपुर घोड़ियारी ढूँढ़े[1] मेल्हियो। रातै तो घोड़ां रमजूनानैं बल् रात्र हुई नहीं। तठै दिन ऊगी पोहर भींवाणी टेवटा[2] लेवणनै गया। तठे उजलाई[3] करण नै जल् सोभै। तिके तलाई दो तीन सोभी[4], पिण खाली लाधी। तिसै एक सामी[5] नाडो[6], तिण मांहे धुवो ऊठतो दीठो। तरै भींवै जाण्यो कोईक आदमी छै, तठै जल् होसी। यूं जांण नाडी मांहे आयो। आगे देखें तो मोटा लाकड़ा धुखाया[7] छै नै जिनावर एक मोटो विगसायो[8] छै, तिको सेक-सेक नै पठांण खावै छै नै घोड़ां नै पिण खवाड़े छै। इसी देख भींवै कह्यो, क्यूं पांणी छै तो कहो, ज्युं उजलाई करां। तरै कह्यो, म्हारा घोड़ारै हांतै वादलो[9] जल्सूं भरियो छै, सो ल्यो। तरै जोड़ी[10] मांहे जल् लीधो, उजलाई करनै पाछो आयो, रांम रांम कियो। तरै पठांण कह्यो, आवो भाईजी रांम रांम, हींदू हो तिणसूं मनवार[11] करणी नावै। तरै भींवै कह्यो, भाईजी, राज अठै ही रहो छो कै ओर कठै ही। तरै कह्यो, हूं पठांण छूं, कागड़ा बलोच को बेटो छूं, तुम कोण हो। तरै भींवै कह्यो, हूं पाटण ऊदा भाटीरो बेटो, भींवो म्हारो नाम छै। आपे तो गड़ासंधरा रहणवाला छो। आप अठें कुं पधारिया छो। तरै पिउसंघी कह्यो, भाईजी, सिकारपुर

१ खोज में। २ शौचादि के निमित्त। ३ स्नान। ४ खोजी। ५ सामने। ६ तलैया। ७ जलाया है। ८ नष्ट किया, मारा। ९ जल की झारी। १० पानी इकट्ठा हुआ स्थल, डाबर। ११ मनुहार।

सिलह सावत कीयां बैठा था, तिके घणा-सा तुरत होज हजारां पंधारियां[1] माथे चढिया नै वांसे[2] मार फीटा कीया। तठे फलोच कह्यौ, भाई भीवा, वाहर पालो कै घोड़ी टोलो। तरै भीवैजी कह्यौ, थां इकेलांसूं टोलणी आसी नहीं, तिणसूं राज वाहिर पालो नै वेगा पधारीज्यो। इसौ कहि घोड़ी टोली। तरै पिउसंधी कह्यौ, धीमा धीमा सुसते-सुसते चाल्यां जाज्यौ। तिसे वाहरू[3] देठाले हुआ[4]। तरै पिउसंधी कह्यौ, पांवडा इग्यारैसैरै आंतरै खड़ा रहिज्यो नै ठ पांणीसूं आग-मतै[5] है तिको आधो वध[6] नै आवज्यो। इसरो हील फुरत देपनै वचन सुणनै धीमा पड़िया नै कह्यौ, रे तूं तो इकेलो ही छै, तिसका पाप कैसे लेवां। सारो साथ हुवै तो मुकालया करां तरै पिउसंधी कह्यौ, हजारां लापां घोड़ा हुवै तो डरूं, इसरा तो म्हारी चार छो। इतरो कहि पांवडा सातसै आटसै ऊपर एक बांवल[7] रो सूको मूंठ छै, तिको ऊभो दीठो, तिणरै ऐसारी पिउसंधी दीधी, सो पंथारा वारै रहया, नै कह्यौ, तुम इसको लगावो। तरै पठाण लेस चलाई, तिका पांवडा ग्यारसै मूधी पोहती। तरै पठांणांरो सारो साथ चमकियो नै कह्यौ, भेटण-जोगो पठाण नहीं, आगे लो। तरै वर्यां होक कह्यौ, इतना हीम देखके कैसी भांत आगि देंगे। इसरो पिउसंधी सांभलि नै कह्यौ, अब खबरदार हुवो, यो मेरा तीर आवता है। तिण तीरसूं पठांण १०/२० वींध्या नै गुड़ो पाड़ियो[8]।

---

१ कंदवारी घोरे। २ पीछे। ३ बचाव करने वाले। ४ दिखाई दिये, दृष्टिगत हुए। ५ ठाडा पाणीसूं भींज मतै (हुवा) = ठंडे पानी मरता हो, - मरता हो तो। ६ आगे बढ़ कर। ७ बबूल का वृक्ष। ८ गिराया।

इसा तीर वेळा ५/७ वाह्या, पठांणां सौ-दौड़रो साथरो[1] हुवो। घोड़ियांरो सोच भूलि गया। सगळांनि जीवरो सोच हूवो, नै पठांण तीर वावैं तिको धेट[2] ताईं पोंचे नहीं। तरै एकै कह्यौ,खांजी, सिधारो। तरै पिउसंधी दुवा-सिळांम करि राह धुरी नै तिके आगला साथसूं जाय पोहच नै कह्यौ, घोड़ा जल्द ताता खड़ो मतो, पाछली फिकर बीजी वार घोड़ियां लेवो तद करज्यो। इण भांति वातां करता दिन दोय नै राति दोय मारग चाल्या। तठै पाटणसूं कोस तीन ऊपरां मारग दोय फाटे। पिउसंधी घोड़ो ठांभ नै कह्यौ, भाई भींवा, अठ औ मारग तुम्हारा है नै औ मारग हमारा है, घोड़ियां बांटि ल्यो। तरै एकै रजपूत कह्यो, घोड़ी मूंडका[3] माफक बांटो। तरै ऊ वचन सांभळ पिउसंधी कह्यो, कुटण[4] मूंडका कया, आधी हमारी है, आधी तुमारी है। तठै वयूं चड़भड्यो[5] रजपूतांरो साथ। तरै भींवैजी कह्यो, आपरी खातर आवै ज्युं करो। तरै पिउसंधी आपोआप कीधी। तरै घोड़ो एक सांढ थो, तिको वधतो रह्यो। तरै वळे एकै रजपूत कह्यौ, ओ सांढ आपणे घोड़ियां नै रापो। तरै पिउसंधी रीस करि कमचीरी[6] घोड़ारी कमर मांहे दीधी, तिको दोय तपना हुवा। तरै पींडो दोय आपरी असवारी रा घोड़ारी धनाको लगाई, रीस मांहे चाल्यो। तरै भींवै कह्यो, साथ नै थे अठै वळू[7] करो। गांवसूं जाजम, चांदणी मंगाय नै बिछायत करावज्यो, खेजड़ा[8] री छाया छै, तठै गोठरी तारी करिज्यो।

---

१ खातमा, काम तमाम हुआ। २ ठेठ, पूरी दूरी तक। ३ प्रति मनुष्य एक। ४ कुट्टिनी, एक प्रकार की गाली (क्रोधके आवेश में)। ५ कुपित हुए। ६ कोड़े को। ७ भोजन करो। ८ शमीवृक्ष।

घोड़ियां-घोड़ा जुलगा[1] मांहि दांत्रणा देनै छोडज्यो । ३
कह्यो, म्हे, पठांण रीसांणो जाय छै, तिको इसनै थांह-येली[2] रा
छिण हेक वेळा आडो आवै, तिणसूं अठे पाछो स्याय, गोठ जी
सीख देस्यां, गाढो रजावंध[3] करि हसि हसायनै सीख द्यां नै
करां । इसो कहि आप पाळो[4] हीज दोड़ियो । आगै पिउसंधी व
एक पोहती । तठे बावड़ो एक जळसूं भरी दीठी । तरै अठी-इठी भा
पाछो दीठो । देखनै मारगरी गिरमीसूं डील बेहोस होइ रह्यो थो
तरै मन में ऊपनी, संपाड़ो[5] करूं । तरै घोड़ासूं उतरि घोड़ी जळ
मांहि घरती कीधो, आप बावड़ो मांहि उतरो, सिलह खोल नग
होय नै पांणी मांहि सांपड़ै छै । तिसैं भींवो आय पोहतो । भींवै मन
मांहे जांण्यो, बावड़ो मांहि किसूं करै छै । यों जांण बरही[6] रा
ठेकड़ा[7] मांहि जोवै । तठे देखै तो अस्त्री छै । देख नै माथो धूणै छै ।
नै जांण्यो परमेश्वररा घर-मांहि घणो रीध[8] छै, नै आ जो म्हरि
घेर[9] होय नै इणरै पेटरो कोई नग नीपजै तो हूं पृथ्वी मांहि अमर
होयूं । पिण दिवारू[10] धनळाऊं[11] तो माथो वाढै । तरै पाछो पोहरा
५० जाय नै पंवारा करतो आवै छै । तिसै पिउसंधी कपड़ा सिरह
पहर हथियार लगाय बाहर आयी । तिरो भींवैजी राम राम कहि नै
कह्यो, म्हां चाकर ऊपरै इसरी इसराजी[12] फुरमाई, हूं तो निपट

१ कलाताय के पास का बीहड़ । २ (हुहा॰ : भुजा का सहायक ।
३ खूब हमामंद, प्रबन्ध । ४ पैदल । ५ स्नान । ६ छोटी सी दीवार ।
७ छिद्र । ८ ऋद्धि । ९ पत्नी । १० भारी । ११ काम करूं । १२ [illegible]
[illegible]

गोफूलरयांरा फेरा लीधा, सेहरा वधाया गाया । तठै महल एक नवो वणायो । तिण दोळा[१] कोट सात कराया । सात संदूक दिराई । पावनी रजपूत सौ-दोढसै, दोयसै वैसे । पोळांरो जाब्तो निपट घणो राखै। तिकै तंबासूरी ठरड़ां[२] लागी रहै, गझां-थानां करै, बंदूखांरी आवाजां करै । तिको आंटा भीलरो घणो धीह[३] राखै ।

तिसै वरस दोयनैं बेटो एक हूवो । तिणरो नांम जवड़ो दीधो । पछै बरस एकनैं आशा रही[४] । तिको मुपड़ो पेट मांहे छै । तिसै भाद्रवैरी अंधारी रात, मेह बरसनैं रह्यो छै, दादरा डरराट[५] करै छै, मोरिया झिंगोर खायनैं रह्या छै, बीजळी सिहर-सिलाव[६] करने रही छै, परना-ळ्यांरा पड़ताळ[७] वाजि नै रह्या छै । तठै पोहराइत[८] था, तिके आप आपरै पापती कोटसूं बैठा छै । तिण समीयै आंटो भील आयो । आगै ५/७ वेळा आयो थो, पिण जोर लागो नहीं, तिको आयो कोट सात कूदि नै मेल चढियो । परनाळांरा पड़सादां[९] शी पड़कारो निघे पड़ी नहीं । तिण वेळा भीवो रातिरा श्रमसूं दारूरा जोससूं भर नींद मांहे सूतो छै नै पिउसंधी आंटारा भोसूं जागै छै । दीवो तो गुल करि दीधो । इणनैं आयो जाणि नै पिउसंधी तरवार काग़ड़ा वलोचरी फड़ियां[१०] री छै, तिका भीतसूं पड़ी कीधी छै। तिसै आंटै झरोखे चढि मूंढो काढियो । तरै बीजळीरा चमकासूं पिउसंधी दीठो, जांणियो उळगाणोजो[११] पधारिया । तिसै सूती हलवै से ऊठी

१ चारों ओर । २ टाठ । ३ डर । ४ (मुहा०)गर्भाधान हुआ । ५ मेंढकका डुरडुर् शब्द । ६ चमक दमक कर । ७ शब्द । ८ पहरेदार । ९ घोर शब्द । १० कटि की । ११ विरही परदेशी प्रिय ।

ने तरवार काढी नै उवाह्यां[1] ऊभो। तितरै आंटो हेठे आंगणै[2] आयो नै जाण्यो सूता छै, तिको बीजलीरा चमकासूं दोनां ही नें बादसूं। जिसे बीजली चमकी नै पिउसंधी तरवार चलाई, तिको काड़ियां मांहे वूही[3]। दोइ टूक हुवा नै हेठो पड़ियो। लोहीरो चीपलो[4] हूवो। तरै पिउसंधी तरवार दलै[5] करि भींवारै पापती पोढ़ि रही। घड़ी दोय नै भींवो नाड़ो[6]-छोडणनें जाग्यो। तिको ढोलियासुं पग नीचो दीयो। तरै पगां मांहे कीच लागो। भींवै जाण्यो, कठै ही परनाल छिश्री कै छात फाटो। तरै भींवो कहै—

दूहो

'राति अंधारी चीपलो'

तरै पिउसंधी बोली—

"आंटो चीपरियो।"

"मैं पिउसंघी झटकियो, सु ऊढो ऊबरियो[7]।"

वलै पाछली वात पिउसंधी कही, तरै सगली वात जांणी। आंटै रै भाई सात छः। त्यां मांहे एक तो रहियो, नै बीजो भवाई निपट टणको[8] छः। त्यांसूं दोय बेर ठेंहरया।

अबै पिउसंधीरै बीजो बेटो हूवो। तिणरो नांम कुपड़ो दीधो। नै पहली घररा दोयरो जपड़ो हवो थो। तरै गुजरात पापती काला-

---

१ उत्+बाहु हाथ उठाकर तलवार को तौले हुए खड़ी। २ आंगन में। ३ चली, प्रहार किया। ४ कीचड़। ५ दलै करि (दल = तलवार को कोषगत करके। ६ पिशाब करने को। ७ बचगया। ८ पराक्रमी।

थाइ छः । सठै पड़रो[1] दुख हूवो, नै पाटण-समीयो[2] अवल चरणोई[3] घणी हुई । तरै काला उठै आया था । तिको इठी कालारो पेटी मास ६ माहे थो । तिका जपड़ानैं परणाई । ब्याह थाली मांहे कीयो । पछै मास ६ रहि काला देस गया पाछा । तरां पछै बरस १०/११ मांहे जपड़ो हूवो । तिको गांवरै वारै साईनां[4] रै साथै रेतो मांहे रमै छः । गांवसूं अधकोसेक माथै रमै छः । तिसै गोवालियो एक दोड़ियो आवै छः । तरै जपड़ै कह्यो, दोड़ियो इकसासिया[5] कुं जायै छः । तरै कह्यो, दरबार बाहर धालग[6] नैं जाऊं छूं, नाहर बहिड़[7] एक मोटी मारिनैं खाये छः । तरै जपड़ै कह्यो, रे मोनैं बताय । तरै कह्यो, म्हारी पाधर[8] नैड़ो हीज छः । मरै जपड़ो टाबरांनैं छोडि तरवार लेने दोड़ियो, तिको नाहर अपना ऊपर गयो नै कह्यो, फिट[9] काली ढांढो[10] रा खांगड़ार, पसुआंनैं ही मार जांण्यो छः । तरै नाहर करांछ[11] लेने जपड़ा ऊपर आयो। तिसैं जपड़ै नाहरनैं मार लीयो । तरै टाबरां कना सूं घेऊं[12] तपना नाहररा धींसाइ[13] दरबार आंण राख्या। तरै भीवै जी कह्यो, बेटा, आछो काम कीधो, पिण नाहर सिंधरा धणीरा सिकार रो छः, तिणरो सोच छः । तरै जपड़ै कह्यो, बद[14] कीधो छः । तिसै करोलां[15] जाय सिंधरा धणीसूं कह्यो, सिकाररो नाहर थो, तिको

---

१ खाद्यपदार्थों का दुष्काल। २ पाटण की ओर। ३ खेती, घास इत्यादि। ४ समवयस्क बालकों। ५ एक सांस से, बहुत तेज। ६ फरियाद करने। ७ पहिलीवार प्रसूता होने वाली जवान गाय। ८ सोध में। ९ धिक्कार, धिक्कार। १० ढोर (पुल्लिंग), पशु का खानेवाला। ११ फलांद, छलांग। १२ दोनों। १३ सिंघवाड़ा, घसीट कर। १४ वध, हिंसा की। १५ शिकारियों ने।

पाटणरो धणी भींवो भाटी, तिणरै थंटे मारियो । तरै असवार ५० सलव हुइनै हजूर बुलाया । तरै भींवो जपड़ो थंडे, असवारसे-तीनसूं चढ़िया, तिके हजूर गया नै राम राम कीयो । तरै राजा कह्यो, माहरी रपत[1] रो नाहर कुं मार्यो । तरै जपड़ो धाल्यो, रजपूतारो हींदू धरमरो जमारो छः, गऊ ब्राह्मणरा प्रतिपाल कहीजां छां, तिको गाइ मारी सुणी, दूजो पसतीरै नैड़ो आयो, तरै सरीपा साटो[2] थो, श्री परमेश्वर जी मोनैं ही जसरो तिलक दीयो, नै नाहरसूं काई सकी नहीं । आ बात जपड़ारा मूंढासूं सांभलि भींवा साम्हो जोयो । भींवो डीलो तोवरदार[3] तो खरो, पिण जपड़ारी सिधी डील रोम-रोमंछर[4] रंग मिले नही । तरै जांण्यो, बाप जिसो हुवे के माता सरीसो हुवे । तिको इणरी माताको रंग चहिरो दीसे छः । तरै कह्यो, भींवाजी, घरे सिधावो, पिण इण जपड़ारो सेन[5] दिखावणो पड़सी, नहीतर थांहरै नै माहरै रस[6] रहैलो नही । यों कहि सीप दीधी । भींवोजी घरे आया, पिण घणा सचीता होयनै एकण सूटा[7]-सा ढोल्यिा ऊपर सूता । तरै विचलंधी जांण्यो, सिघ गया, कोई समाचार कह्यो नहीं, कांइ जांणीजै, देखां पूछूं । इसो मनमें विचार नैं उठ ढोलिया कनै आयनै पूछियो । कह्यो, राज सिघ पधारिया, पिण मोसूं समाचार कह्या नही नै दिलगीरी[8] किण बातरी दीसे छः । तरै भींवै

---

१ रक्षा का, पालन । २ सारीपां साटो हुता० । बराबरी बातों में बदला था । ३ तौरदार, रौबदार । ४ रोम-रोमावलि । ५ चेन, वह चेन्ह की जिसकी कोख में जपड़ा पैदा हुआ । ६ प्रेम । ७ टूट हुए । ८ दिल की व्याकुलता ।

कह्यो, कै तो देस छूटै कै घर छूटै कै जमारा मांहे छराप[1] लागे। तरै पिउसंधी कह्यो, क्यूं ? तरै भावै कह्यो, राजा जपड़ारो खेत देपणनै पह्यो, तिको घररी बेरां[2] किण किण देपाई नै नाकारो[3] करां। देस छूटं। पिउसंधी कह्यो, इणरो किसो सोच छः, थे अमल[4] करो तरै दूणा अमल कराया, दारूरा प्याला दीधा नै भीवानै अमलांसु आंघो[5] कीधो नै सुवांण दीयो। तरै पिउसंधी घोड़ो सांइणी[6] कनांसु मंगाय पिलांण करि वागो पहिर हथियार बांधि नै सिधनै चलया। तिकै दिन-ऊगतै पहली पोल जाय ऊभी रही।

तठे राजानै सिकाररो घणो इसक छः। तठे चोबदार कनां स्युं मुजरो कहाय नै कहायो, कागड़ा चलोचरो भतीजो-बेटो छः, सो आयो छः, तम मालम करो नै हम सुण्या है महाराजाकूं सिकार खेलणरी घणी इसक छः नै हमकूं पिण इसक छः, सो महाराजानैं कहो सिकार चढोजे, ज्यूं सिकाररो खेल देखां नैं दिखावां। तरै चोपदार आ बात राजासूं मालूम कीवी। तरै राजा घणो राजी हुवो, करनाल[7] कराई, भला भला सिकारी साथे लीधा, सिकारी जिनावर —चीता, स्याहगोस[8], कुतरा[9] बाज, सूर, कूही[10] साथे लीधा नै असवार हुवा नैं वन मांहे गया। तिके आप-आपरे मुहांगे[11] खड़े छः। तठे पिउसंधीरै धकै चढे[12] जिके जिनावर, तिणरो दावो

१ कलंक। २ स्त्रियां। ३ मांदी। ४ अफीम खाओ, सेवन करो। ५ दवा कर बेहोश कर दिया। ६ घोड़ों की रक्षक, क्षत्रिय जाति विशेष। ७ विशेष घटना सूचक तोप की ध्वनि। ८ एक प्रकार सिकारी जानवर। ९ सिकारी कुत्ते। १० एक सिकारी जानवर। ११ सामने। १२ धकै चढे (मुहा०,=सामने आये।

कांन काट काट नै घोड़ारो तोबरो भांरयो नै कैइक सूर, सांभर, हिरण निजर किया नै अउर उमराव सिकार निजर करि करि नै मुजरो करै, पिण डावो कांन न दीसी। इसी भांत पोहर ३/४ खेल नैं डेरां आया। तरै राजा कह्यो, मीरजी, थांहरो नांव कहो। तरै कह्यो, नांव श्री परमेश्वरीरो कै महाराजरो, पिण लोक सिकारखां कहै छः। इसो सुणि राजा सिकारसु' घणो रीझ्यो। तरै कड़ा मोती सिरपाव दीया, पिउसंघी सीष मांगी। तद राजा कह्यो, थांहरो दरबार छः, अठै ही रोजगार मिलसी, घर तो छताही[१] छः, तिणसूं पांच दिन अठै हीला[२] रहो। तरै पिउसंधी कह्यो, फेर चाकरीनैं हाजर छां। इसो कहि सीष कीधी, तिका आपरै गांव पाटण आई। तिसै भींवोजी जाग्या। तिसै राजारा वलें आदमी आया नै कह्यो, सिताबी[३] करो, जपड़ारा पेत ल्यावो। तरै पिउसंधी भीवाजीनैं आय कह्यो, थें कड़ा मोती पहिरो, सिरपाव पहिरो नै तोबरो ले जावो नै कहिज्यो, सिकार मांहे जिनावरांरा डावा कांन कठै, सिकार खिलाई तिको पेत छः। इतरी बात सुणि घणो खुस्याल होय सारो सरजांम ले हजूर गया, मुजरो कीयो। राजारी निजर तोबरो मेल्यो। राजा कह्यो, उणरी हकीकत कहो। तरै भींवैजी कह्यो, तोबरा मांहे घसत[४] छः सो निजर मेली छः नै कड़ा मोती पहिचाणो, नै जिनावरांरा डावा कान कठै छः, ऊ[५] खेत छः। तरै राजा कह्यो, तोबरो सुंधो[६] करो, देखां सूं। तरै जितरा जिनावर सिकार मांहे आया था, तितरांरा डावा कांनारो ढेर हूवो। तरै राजा देखनै

१ है ही। २ मिलजुल कर। ३ ज़ल्दी। ४ वस्तु। ५ वह। ६ उलटा, सोधा।

हैरान हूवो । नाहर, सूर, सांभर, पाताल-छोकड़ा, फालिहार, खरगोश चीता, वघेरा, सीह—इतरां जिनावरांरो कांन ढेर हूवो । तद राजा कानांने देख भींवाजीने कह्यो—

दूहो

भूमि परेपो[1] हो नरां, कहा परेपो व्यंद[2] ।
भुंय बिन गजा न नीपजे, कण, तृण, तुरी नरिंद ॥
हंजां[3] घरि हंजा हुवे, कग्गां[4] कगा विहाय ।
उदाणी घर जणड़ो, नग नीपजे स न्याय ॥

अै दूहा कहि सिरपाव देनै सीप दीधी । तरै गांव आया ।

अबै बरस दोयनें भींवेजी राम कह्यो, तरै जगड़ो टीकै बैठो । सुपड़ो मूंदा आगें दौड़े धावै । इसी भांति दोनूं भाई घणा हेतप्यार मांहि रहै । दियणी मांहि देणा मारणा[5] सूं नांव पायो । दातारां भूंझारांरा नांम छः, जिणसूं चारण-भाट देस-देसरा रूपक[6] ले आवै[7] आवै । तिके लाख-पसाव[8]

---

१ पहिचान । २ अन्यथा । ३ हंसों के । ४ कौओं के । ५ दान देने और युद्ध में मारने से । ६ कविता । ७ पात्र । ८ लाख-पसाव देने की प्रथा राजपूताने के राजाओं में बहुत प्राचीन काल से रही है । कवियों को सर्वदा लाख रुपये ही नहीं दिये जाते थे वरन् भिन्न-भिन्न राज्यों में कम-देशी परिमाण में हाथी, घोड़े, रोकड़ी रुपये, सिरपाव, वस्त्राभूषण इत्यादि के रूप में लाख-पसाव दिये जाते थे । उदाहरणतः— बांकीदास कृत राठौड़ों की ख्यात में एक जगह विवरण दिया गया है कि कविराज गोपीनाथ गाडण को बीकानेर के महाराजा गजसिंहजी ने संवत् १८१० में उनके काव्य-ग्रंथ "ग्रंथराज" पर लाख-पसाव दिया था जिसका परिमाण इस प्रकार

पावै । काला-गैहला[1]-रो-दातार कहांणो । इसी भांत वरस २२/२३ मांहे हूवा । मा पिउसांधी अकाईरी राड़सूं जपड़ानै झाली-दिसा[2] कोई कहै नहीं नै जपड़ानै याद नहीं । तठै आपाढ लागतै पिउसंधी आपरा मालिया[3] मांहे पोढी छः । नै पांवडा पांच-सातरै आंतरै जपड़ो आपरा मालिया मांहे पोढियो छः । तठै दिपणाधी झालावाड़-दिसी मेह बीजली सिलाव रैसी दीठी । तरै पिउसांधी मोटै साद बोली, आजरी बीजली नै मेह म्हारा जपड़ारै सासरा ऊपर छः । औ सबद जपड़ारै कांनै आयो । जपड़े सोचियो, ब्याह तो तीन छः, तिके उगूणाऊ[4] कै उतराधा छै नै माजी दपणाधू सासरो कह्यो, तिको किसी भांति । रातै निद्रा नाई । पोह पीली हूवां[5] सेतपानै[6] जाय हाथ पग ऊजला करि दांतण कीधो नै स्नान-सेवा करि माजीरै दरसण आया । मुजरो करिनै आगै बैठो नै जपड़ै कह्यो, माजी आप रातै म्हारा सासरा-दिसी कह्यो, सो इण-दिसी सासरो किसो । तरै पिउसांधी मन मांहे विचारियो, मो पापणीरी जीभ रही नहीं, बेटारै कांनै पड़ो । तरै मा दीठो भूठ बोलियां वणै तो सपरो । तरै मा कह्यो, बेटा, मैं नींद में महिक[7] नै कह्यो होसी नै थारा सासरा तीन छः, निकै तू जाणै हीज छः। तरै जपड़ै कह्यो, माजी,

---

दिया गया है—रुपया २०००) रोकड़ी, हाथी १, हथणी १, घोड़ा २, सरपाव १, मोतियों की कंठी ।

१ आपत्ति के मार्ग या समय पर सहायक। २ झाली की ओर। ३ महल । पूर्व दिशा की ओर। ५ पोह पीली होते, पौह फटते, उषाकाल में । पाखाने में । ७ महक, उन्माद, उन्निद्रावस्था

साथ होय पुग्माथो, नहीं तो आरच[1] करिस्यूं। घणो हठ हूओ। तरै माता दीठो दोनूं वातां बिगड़ै छै। तद मा कह्यो, बेटा, हठी मालारी बेटी थानें पालणै परणाई थी। तिणनैं बरस २० हुवा। तिको हिवै आ:। भोलरा भाई अकाईरा गांवां मांहे रहै छै, कोस सौ एक ऊपरै सासरो छै नै कोस ८० तांई अकाईरो सीव छै, तिण मूं हूं जायनें ले आवस्यूं, थे अठै जावना करो। भीलांसूं दोय बैर छै। तठै थांरा सिधावणरो काम नहीं। तरै जपड़ै कह्यो, वाह-वाह, भली बात कही।

हिवै जपड़ै रैबारी[2]नैं तेड़ तुछियो, घणी फरवी[3], चलाक सांढ हुवै तिका दनाय। तरै रैबारी कह्यो, महाराजा, रावलै[4] फोक[5] नव छै। तिणमें अकालगारी तिणरी नांनी बनास पांणी पिवती नै नागरवेली री पनवाड़ी चरनै घरै आवती। तरै जपड़ै उण सांढनैं सारणी[6] मांडी। तिका मास एक मांहे सम्भाई। तिका कोस पचास जायनें एकै दांण[7] पाछो आवै। तिण माथै कसणा करायनें सांवणरी तीज ऊपरै साव[8] केसरिया कसूमल पोसाप बणाय भारी गइणो पहिर सासरैनैं चलाया। तिकै आधेटे[9] पोता। तठै दिन पोहर एक चढियो छै। तिको अकाई भील आदमी सौ-दोयसूं तलावरी पाल ऊपरा वड़ांरो छाहड़ी हेठो बैठो छै। जांगड़िया[10] गावै छै। अमल गलै छै। तिण समीयै जपड़ो जाय नीकलियो। तरै भीलां दीठो नै कह्यो, श्री माताजी लूंवो[11] दीधो। इतरै भील बोल्या, जीवतो छूटो, कपड़ा गइणा उरा आप[12]। जदि

---

१ हठ। २ ऊंटों का चरवाहा। ३ तेज। ४ आपके यहाँ। ५ तेज सांढ। ६ तैयार करना। ७ एकसार तेज चाल से। ८ पूरे। ९ आधी दूरी। १० गाने बजाने वाले कमीन, ढोली। ११ प्रसाद, पुरस्कार। १२ दे डाल।

जपड़ै कह्यौ, थे कहो छो सो सगलो तयार छै, पिण हूं आसालूधो[1] झालरै सासरै पडवा[2] सीधी जावं छूं, पाछो फिरतो देस्यूं । तरै भीलां पूछियो, केही पांप[3] छै, किणरो डीकरो[4] छै । जपड़ै कह्यौ, पांप नै बापरो नांव तो रजपूताणी ले आवस्यूं तरै कहिसूं । तरै अकाई कह्यौ, वारू-वारू, जा बापा हपरू कह्यौ[5], रजपूताणी वेगो लेनै आवज्ये.बाप बोल मोटियारांरै[6] एक हीज छै । जरै जपडै कह्यौ, आवतो थांसूं जुहार करि सीप मांगि घरै जास्यूं । इतरो कहि मारग चाल्यो, तिको सासरै गयो । घणी खुस्याली हुई । वधाई बांटी । दिन १५/१७ रह्यो । घरांरी सीप मांगी । तरै झालां ओझणांरी[7] तयारी कीनी । जपड़ै कह्यौ, म्हे नैं झालोजी एकै दिन मांहे भाजीरै हजूर जास्यां पाधरै मारग नै ओझणांनैं दिन १०/१५ लागसी आवतांनैं, बीजै निरभै गलै आसी । इसौ कहि सांढ ऊपर कसणा कराया नै असवार हूवो, तिकै दिन पोहर दोढ तथा पूंणा दोय पोर चढाया छै । जठै अकाई भीलांरो झूल[8] लीयां त्यूं हीज बैठो छै । अमल गलणीय बाढियो[9] छै । कसुंभा बत्तीसा[10] नीकलै छै । कैइक भील अमलांरी झोकां[11] खायनै रह्या

१ आशालुब्ध, प्रेमातुर । २ चलान । ३ जाति । ४ लड़का, पुत्र । ५ वारू वारू जा बापा हपरू कह्यौ=भीलों की भ्रष्ट भाषा का नमूना है । अर्थ—वारी जाऊँ बलिहारी जाऊँ, बा.पू. तू ने बहुत ठीक कहा है । ६ बाप बोल मोटियारांरै—वीर पुरुषों के बाप और वचन एक ही होते हैं । ७ विदाई में घर के साथ भेजा जाने वाला सामान और अनुचरवृन्द । ८ झुंड । ९ अफीम गलने के वास्ते पीसा जा रहा है । १० बत्तीस वार पीस कर छाना हुआ अफीम । ११ झोंके, तरंगें ।

छै। कैइक सांपोला[1] करै छै। कयां इक अमल चिपटिय
छै। घणां भीला अमल कीयो छै। तिसै सजोड़ै[3] जप
दीठो। तरै भील मांहो-मांहि बोल्या, म्हारै होकरै रपचूयें[4]
दाप्युं[5] छै, कहो हनो त्यूं होज आयो। तिसै जपड़े
जुहार कीयो, सांढ झेकी[6]नै रजपूताणीनै कह्यो, थें सावचेत
हूं जायनैं पाछो आऊं तिसै थे सांढरी मोहरी[8] लेनै हाथ म
आसण बैसि जाज्यो नैहूं पाछले आसण बैसि जास्यूं, पछै दे
एक सांढ लातो होवो खड़ो[9] छो। वांसै[10] आवतो तिके हूं
हवे जांणं नै सांढ चलावणी थांनैं भलै[11] छै। इसी भांति
समझाय अकाई भील कनै आयो। तरै अकाई कह्यो, जुग
पिण मेढ़णो तो उतारे आपिनै जोर रपचूताणो[12] फाईहपरो[13]
जांणे पाबाहररो हांद[14], तो रपचूताणी अमनैं आपि नैं थाग
ऊपरां जोवतूं[15]नै हथियार वगाड़ा[16]। तरै जपड़े कह्यो, तो
म्हारी रजपूताणीरो गैहणो मेलो करि ल्याऊं छूं। इसो कहि
फिरियो, तिको सांढि कनै आयो। झालीनै कह्यो, आगिलं

---

१ नशे में मस्त होकर झिपझिपाना। २ लोहे का वह अंकुश
बंधी हुई कपड़े की छलनी में अफीम छाना जाता है। ३ वर-वधु
में। ४ भीलों की भ्रष्ट भाषा में "राजपूत" (रपचूप)। ५ एक हो
६ कही। ७ बिठाई। ८ ऊँट की नकेल। ९ चलावो। १०
११ जिम्मेवारी। १२ रजपूताणी। १३ सुन्दर। १४ पावाहर रो
पावासर (मानसरोवर) का हंस। १५ हाथ (भ्रष्ट भाषा =साथ,

बैसि जातो। तरै झाली मोहरी हाथ मांहे लेनै चढी नै जपड़े टांग वाली[1] नै कांव[2] चलाई नै सांढ पवने पवन लागी[3]। जिसै जपड़ै कह्यो, पांव भाटी, वापरो नांव भींवो,मा पिठसंधीरो बेटो छूं। थांनै वैर लेणी आवै छै तो वेगा आवज्यो। इतरा वचन सुण्या ने पोला[4] हूवा नै भील गांव-गांव खबर दैणनै,मारग बांधणनैं दोड़ाया नै अकाईरा आदमी दोवसै भील, एक मोभी[5] बेटो घेवरा, तिको साथ लेनै पोहता। तिको जपड़ो बांसले[6] आसण भीलां सांमो बैठो। तीर एकैसुं भील ७ तथा १० फोड़ै, तिके वलै पांणी न मांगै। इसी भांति पेदरै-सूया भील अढाईसै मारिया नै अकाईरै बांह में तोर लागो, तिको वेऊं बाहां फोड़ि नाषी। अरजल[7] हूवो पड़ियो। तठै जपड़ानै पण[8] छै, जिको लड़ाई करि मरै तिणनैं वासदे[9] में धालि पछै आयो जायें। तदि सांढ झेकी नै झालीनै उतारिनै कह्यो, थे मोहरी झालियां ऊभा रहो, म्हारा हथियार छै तिका संवाहो[10], सूरा-पूरा[11] भील कांम आया छै, तिकै मेला करि लाकड़ी द्यां। इमो कहिनै घींस-घींस[12] नैं सांट कनै न्हाषिया[13], नैं अकाई भीलनै सुसकनो देप धावांसुं रंज्यो[14] नांप्यो। जपड़ो दूजी दिसी गयो। × × × × ×
जिसैं जपड़ो मड़ां[15] री टांगां पकड़-पकड़ घोसियां लायौ। सैह[16]

---

१ एड़ मारी। २ चाबुक। ३ पवनै पवन लागी (मुहा० =हवा हो गई। ४ ढीले, शिथिल, हतोत्साह। ५ लाडिला। ६ पिछले आसन (बैठक) पर। ७ व्याकुल। ८ प्रण, प्रतिज्ञा। ९ अग्नि। १० सँभालो। ११ शूरवीर। १२ घसीट घसीट कर। १३ डाले। १४ भरपूर, सराबोर। १५ मृतकों को, शवों को। १६ सभी।

भेळा किया। अकाई नड़ी पाड़ियो दूर छै। तिरे अकाईरै मन मांहे ऊगनो भस इण मौके अचाचूक[1]रो वार करूं नें जपड़ानें मार झाली डरो स्यूं। जिसें घमसमूं पासदे पाड़ि[2] जपड़ो पूळा लेनै फूंक नीचो नम करि दीनो थो, तिसें अकाई तरवारि वाही। जपड़ारो माथो ढह[3] पड़ियो। झाली देपनी हीज रही, क्यूं सकियो नहीं। तरे लपेटो[4] माथे मेल्ह नें उण हीज सांढ माथे बैसि झाली लेनै अकाई गांव आयो। भीड़ांनें गलि लाया। आपरै पाटा-पीड़[5] कराई। झालीनें मेहलां मांहे रापी। तिसे दिन १५ '१६ में घाव फूई आया[6]। पाटाबंध[7]नें वधाई दीधी। मीलां निछरावळ कीधी। झाली घणो कोप कीयो नें आपघात करणी मांडी, पण अकाईरै घरवास[8] करणो कबूल्यो नहीं। तरै अकाई घणो रीसाणो होइ नें झालीनें पकड़ाई नें मेहणो डरो लीधो नें पचास जूत्यांरी दिराई। वळे, पछै, हमेसा सांपेरो गोबर भेळो करावो नें थपावो नें दोय अढाई मगरी परटी दोळी[9] बैसाणो नें सवामण धान हमेसा पीसाड़ो न अरटियै[10] पाव एक सूत कतावो, पुराणा जव सेर एक खावानें थो नें अभूने[11] नौहरै पड़ी राखो, हमेसा दिन ऊगतै पचास पैजारां[12]री थो। इमा हवाल मांहे नौहरै रापी। तिको हमेसा कह्यो जितरो करै। कपड़ा मोटसूता, तिके धोवण पावे नहीं। कांगसी केसां फेरण पावै नहीं। माथो धावण पावै नहीं, केस पराकण[13] पावै नहीं। झाली मांहे औ थोक[14] है।

---

१ अचानक। २ जला कर। ३ गिर पड़ा। ४ साफ़ा, पगड़ी। ५ मरहम पट्टी। ६ घाव मिलने को हुए। ७ पट्टी बांधने वाला। ८ गृहवास, स्त्री बन कर रहना। ९ चक्की के पास। १० तकली पर। ११ सुनसान, …न में। १२ जूतों को। १३ सुलझाने। १४ यंत्रणाएँ।

हिवे लारै ओमाणो पोहतो। तठै पिउसंधीनै जपड़ारौ घणो सोच ऊपनो, जपड़ो कुसले नहीं, विचै भीलांरै हाथ वेऊं रह्या, पिण मारियां पकड़ियांरी निचै[1] नहीं। तरै चारण एक करणीदांन, तिण जपड़ारा दांन—घोड़ा, ऊंट, सिरपाव, कुरब[2] घणा पाया था। तिण मैला कपड़ा पहिर अकाईरै गांव आयो। तिको अकाईसूं सुभराज[3] कीयो। तिसै उठारा चारण भाट अमलांरा कोट आया। आवतां हीज कह्यो, जपड़ा रा मुजारा भांजणहार, कलियां वैरांरा काढणहार[4] नै घणी आसीसां पोहचै। तरै अकाई घणो आदर दीयो। इसा सुभराज चारण वैठे-वैठे सुण्या। तिसै दरबार घडो कियो[5]। अकाई कह्यो, दूबलो-सो चारणियो छै, अगेनै[6] नोहरै डेरो दिराड़ो[7], माली-तीरै[8] बाटो करै पवराड़ो[9], रूड़ो जिमाड़ज्यो[10]। तद चारण चारणनैं लीयां नोहरै आयौ। आटो घी दीनो नै कह्यो, माली, चारणनै बाटो करै आपज्यो। तरै चारण तूटै सै मांचै बैठो। माली रोटी करै छै। चारण पूछियो, थारो रैहणो किस मंहल छै। इतरो सुण माली वेऊं हाथांसूं छाती माथो पूटण लागी, हाथ बाढ-बाढ खाण लागी। तिके हाथांरै लोहीरी धारां छूटी। तरै चारण नैड़े जाय ऊपरांसूं धूजते-धूजते[11] हाथ पकड़िया नै कह्यो, डिगमो माता, तोनें पूछियो सो कोई अनरथ कीधो नहीं। माली आपरी

---

१ खबर। २ प्रतिष्ठा। ३ चारण लोग राजाओं के सामने "शुभराज" शब्द कहकर आशीर्वाद करते हैं। ४ कलिकाल में प्रतिशोध लेने में समर्थ। ५ दरबार घड़ो कियो (मुहा०=दरबार समाप्त किया। ६ इसको। ७ दिलाओ। ८ माली के पास। ९ खिलाओ। १० जिमाओ, भोजन कराओ। ११ कांपते कांपते।

रिपन यो स्युं कह्यो, भींया भाटीरा मोभीरी परणी छूं[1]। सरब बात चारण सांभल्यो। रोटो क्युं पायो क्युं न पायो। पाछो पाटण दिन पांच म आयो। सरब मांडिनै बात करी। तरै सुपड़ै नै पिउसर्योनै जपड़ारो ध सोच हुवो, पिण काली दासीपणैं, तिणरी ओगाल[2]री घणी फिकर हुई

तरै सुपड़ै गायांरा छांग[3] मांहि टोयड़ा[4] दोय मोटा, जातीला सांडरा था, त्यांनै घणा आदता मांहि दूध धपाऊ पावै, वलै घी चूनड़ी[6] करनै दीजै। निसै बरस १५ मांहि सारिया, रातब दांणो दीजै इसो विध बरस दोय हुवा, तरै नाथिया[7]नै पेटावणां[8] मांडिया। तिवे पांच कोस जायनें बैल[9]-जूतां पाछा आवै, बिच मांहि पोटा[10] छंगास[11] करै नहीं। इसी भांत कोस ४० जायनें चालीस पाछा दौड़िया नै दौड़िया होज आवै। जरै सुपड़ै हल्को गुजरातण बैलो जोनि नै हथियार बांधि, तरगस दोय, कवांण दोय बैल ऊपरां मेलि[12] चलाया। तिके दिन एक मांहे गया। अकाईरै गांव जाय पोहतो। दरबार गयो। अकाईनैं खबर हुई, चारण एक आयो छै। तरै भीलां अकाईनै कह्यो, बापा, फूठा चारणिया कन्है केहड़ी[13] धांहपरा[14] वलधिया[15] छै; बापा, तुम्हारी अहवारो[16] जोगा छै। तरै अकाई कह्यो, वारू, नोहरा मांहे उतारो दिरावो, चारणियानैं मारै ठोके नैं उरा लेहां[17]। निसे चारण आय कह्यो, गढवा डेरो ल्यो। सुपडो बैल बैठो नोहरे आय

---

१ विवाहिता स्त्री हूँ। २ कलंक, दुःख। ३ टोला, मुंड। ४ सांड, युवा गोवत्स। ५ अच्छी जाति के। ६ घी में सनी हुई आटे की बाटियां। ७ नाथ डाली। ८ जोतना। ९ बहली, रथ, गाड़ी। १० गोबर। ११ गोमूत्र। १२ रख-कर। १३ कैसी। १४ उत्तम जातिके। १५ बैल। १६ सवारी। १७ छीन लेंगे।

उतरियो। चाकर भालीनैं आयनैं कह्यौ, चारणनैं घाटी करनैं आपज्यो। तिसै भाली मुपड़ारी सवी[1] देप रोवण लागी। तरै मुपड़े पूछियो, वेदल[2] क्यूं हुवै। तरै भाली कह्यौ, भींवा भाटीरा वडा वेटारी परणी छूं, मो पापणीरो घणो खोटो जमारो छै। तरै मुखड़े थठी-उठी जोयनैं कह्यो, भाली, तोसूं एक वात दाखूं[3] किणीनैं न कहै तो। तरै भाली बोली, मो पापण मांहे तो घणी विपत पड़ी छै, वलै अबै सूं करिस्युं। तद मुपड़ै आपरो आपो परगासियो[4] नै कह्यौ, जो थांहरै सासरै चालणो हुवै तो उठो, पिण वैल पड्ज्यो[5], वैलरो जावतो घणो करिज्यो नै वांसै आवसो तिणनैं हूं घणो ही समझायसूं। इतरो सुणत-समान[6] भाली बैठ ऊपरां वसी नै जपड़ै वेलिया जोतिया नै गांवरै बारै बैल लोधी नै कह्यौ, भाली लियां जावूंछूं, मुपड़ो माहरो नांव छै, नै आवै तिको ठाकुर वेगो आवज्यो। तरै आ वात भोलां सुणी नैं ढोल हूवो। तरै अकाई वेटा-सूवो भील २०० लेनैं चढियो। तिका मुपड़ो हलवै हलवै वैल पड़ाई। भील ताना हूवा आंण पोहता[7]। तरै मुपड़ो एकै तीरसूं भील १०/१५ फोड़ै। तिके धरती हीज पड़ै। अकाई दोय वेटां सूवो मारिया। भील पाछो एक ही न गयो। सरब भील मारिया।

इसी भांति मुपड़ै जपड़ारौ वेर काढियो नै घरै आयो। जठै भाली रांम रांम करि ऊठी नै मुपड़ासूं कह्यौ, देवर थांरी घणो वेल पसरो[8], पूतरा[9] पोनांसूं वधो, धान धीणो[10] धापो, घणो राज चढतो होज्यो।

---

१ मूर्त्ति, आकृति। २ दुःखी। ३ कहूं। ४ आत्मत्व प्रकाशित किया। ५ चलाना। ६ सुनते ही। ७ आ पहुँचे। ८ वेल बढ़े, वंश-लता बढ़े। ९ पुत्र। १० गाय बैल आदि धन।

जैतसी ऊदावत

—+*+—

संवत् १४६६ भाद्रवा सुदी ४ राव सूजाजीरो[1] जन्म। संवत १५४८ राव सूजोजी देवलोक हूवा। राव सूजारै पुत्र याघो १ नरो २ ऊदो ३ सांगो ४ प्रियाग ५। प्रथम राव सेखो देइदास। राव सूजैजी वैठां वाघैजी रोम कह्यो[2]। पछै टीकै[3] राव गांगो[4] बैठा। वीरमदे वाघावत[5] सोभत राजथान कीयो। सेखैजी[6] पीपाड़ राजथांन कीयो। इण तरा राजे रहै छै।

[अथ वारता]

राव गांगोजी जोधपुर राज करै। तरै धरतीरो वेध[7], राजरा अणेसा[8] ऊपरा नागोर दोलतियाखांन पातिसाही करै। तरै सेखैजी दोलतियाखांनसूं वनगाव[9] कीयो, जोधपुर सूधी[10] आधी धरती थांरी नै आधी धरती म्हारी, नै थे मदत करो तो राव गांगानै

---

१ मारवाड़ के राव जोधाजी की दूसरी रानी हाडी जसमादे थी, जिनके तीन पुत्र नींबा, सूजा, सातल हुए। जोधाजी के बाद सूजाजी राव बन कर राजगद्दी पर बैठे। २ मर गये। ३ राजगद्दी पर। ४ गांगो जी राव सूजाजी के पौत्र थे। ५ बाघा के पुत्र। ६ ये भी बाघाजी के एक पुत्र थे। ७ बैर। ८ ईर्षा। ९ सलाह की। १० समेत।

उठाय[1] था। तरै दोलतियाखानने हुंस जागी[2] ने हाथारो भरियो। आपरो सामान करिण लागो। तरै राव गांगाने खबर जासूसां आण[3] दीधी, था ऊपरां सेखोजी ने दोलतियाखान नागोरी सामान करि आवै छै। तरै राव गांगोजी आरावो[4]-सामान साफ करि नै घणो साथ सामान लेनै कूंच कीधो। उठीसूं[5] दोलतियाखान नागोरी दरियाजोस हाथी लेनै कूच कीयो। तिणां मांहे सेखोजी फोजरा मुखी[6] हुवा। आम्हो-साम्हा[7] डेरा दीया। संवत् १५ रा चैत्र वदी ११ रै दिन लड़ाई कीधी। जिको दोलतियाखानरै हाथी दरियाजोस[8] छै, तिण आगां फोज आगी। तिण ऊपरां र टोड़ारो साथ, सीन्हा तनतरा[9] होईने तरवारियांरा वाह ऊडाया[10]। हाथी महादन काम आयो। तरै दोलतियाखानरो साथ पिण भागो। तिण समै सेखोजी सांथा मूंडारो राड़[11], वीजो भतीजो, जिणसूं सेखोजी पग मांडिया[12]। आपरा साथसूं रहिया। जिके पूं छोड़ पड़िया[13]। साथ सहु कटागो[14]। राव गांगाजीरी फतै हुई। सेखोजी घोड़ासूं धाप[15] उतरिया[16]। तरै राव गांगाजी सखानो कहिने अमल करायो, पांणी पाया। वधूं[17] साधेन हुवा। तरै

---

१ राज में उठा है। २ ओझा आया। ३ लाकर। ४ लोवा-बाबड़ सामान तैयार करके। ५ उधर से। ६ मेना, अगुआ। ७ आमने सामने। ८ हाथी का नाम विशेष। ९ तीव्र। १० बराबर वर्षा की। ११ परिचित सम्बन्धियों के साथ युद्ध। १२ डट गये। १३ कटों के आगे [illegible] होकर गिरे। १४ सब कट गया। १५ मूर्छा होकर। १६ गिरे।

[illegible]

रावजी डूंगरसी ऊदावत, जैनसी ऊदावत, जगनाथ नैं तेजसी डूंगरस्योत थां च्यारांनै कह्यो, थे सेखाजी कनैं जावो. सचेत होय थांनै[१] क्यूं जीत-हार दिसो[२] पूछै तो थे सेखाजीरी दिलासा[३] करिज्यो। तिण समै सेखोजी आंखि खोलि नैं बोल्या, क्युं भायां, जीतो कुण। तरै डूंगरसीजी कह्यो, जीता तो राज छो, काकाजीरी फते हुई। सेखैजी कह्यो, जो म्हारी फते हुई हुती तो थे म्हारै तीरै[४] ऊभा न रहता, पिण अवस्य[५]। धरती नरवैध नीलोहो[६] री सींची रहै। इणरै डूंगरसीजी बोल्या, काकाजी, रजपूतांरो साथ घणो अबखो[७] छै, पाणीरी तिस आवै, तिणसूं राज अब मोखांतर[८] पधारो स[९] कोई साथ अनपाणी भेलो हुवै। जरै राव सेखोजी बोलिया, हां भतीज थुंजीज। म्हारा जीवणमें सचार[१०] कोई नहीं, पिण म्हारो जीव च्यार बातां मे अटक्यो छै। तरै डूंगरसीजी कह्यो, तिके च्यार बातां किसी, तिके म्हांनै कहो। तरां सेखोजी बोलिया, इनरा दिनां म्हारी] मन[११] संभालिया पछै म्हे कदेइ मांहि अकेला रसोई जीम्या न छां नै सदा-मद[१२] पांनियो[१३] दे घणा रजपूतांरा भूल[१४] मांहि जीम्या। तिणसूं डूंगरसी भतीज, थारो जीव दलेल[१५] छै, रजपूतांनै राज जाणै छै। तिणसूं थो म्हारो पण सूं मार्ग[१६], ज्यूं म्हारो जीव

---

१ तुमको। २ के लिये। ३ धैर्य बंधाना। ४ पास में। ५ भावी प्रबल है। ६ पराक्रमी अक्षय पुरुष के वशवर्ती है। ७ कठिन। ८ मोक्षांतर, मोक्ष, सद्गति। ९ जिससे। १० अर्थ, प्रयोजन। ११ बुद्धि। १२ सदा की तरह, नियमतः। १३ पंगतबद्ध। १४ समूह। १५ उदार, विशाल। १६ बरावर।

मोगो[1] हाइ। तरे इण थानरो लिग डूंगरमो उदावत हांकारो भ

पीजी थान, आपरे हथे सांग छताकड़ीजेंल[2] रहै, तिणरो नांव न

तिको तेजसी डूंगरस्योतने दीधी नै कह्यो, तेजा, आ थारे हाथ रा

तीजो थान, आपरे पहरणरो थानर 'जलहर' थो, तिको जगनाथने दु

नै कह्यो, चोथी थान कटड़ो[3] छै, जिणरी आसंग होय तिको हांकारो भ

तरै तेजसीजी बोलिया, काकाजी, कटड़ी थान जैंना भनीजने फुरमावो

जरै सेखेजी कह्यो, स्यावास जैंना भनीज, तो विना इसी आसंग[4] कुण करे

अबै सेखोजी कहै छै :—

रजपूत एक म्हारो, जाति में सूंडो, नांम राजो, मोस[5]

रीसायनै समाणसो[5] छडाणो कीयो[6]। तिको सुरगचन्द गयो।

तठै पतो चहुवांण राज करै। तिको दसरावो आयां माताजी

री पूजा करै, तिणमें माणस[7] एक चढावै। तिको राजो सूंडो तिण

दिन जाय पहुतो। आगै कोई चोर पकड़ नै माताजीनैं चढ़ावंता।

तिको उण दिन चोर कोई नहीं। तरां आदमी चाढणरी विरियां[8]

हुई। रात पोर सवा[9] आई। राजा माताजीरै देवरै पूजारो साज लेनै

बैठा छै। चाकरांनै हुकम कीयो छै, आदमी ल्यावो। तरै चाकर दोड़िया।

आगे बाजार में आवै तो सूंड राजैरो बेटो वरप सात में थो, तिको

बाजारमें रमै थो। तिणनै चाकरां पकड़ियो। टावर थो, धोधावण[10]

---

१ चित्त शान्त हो। २ छः तराजू के वजन का, छः घड़ी तौल का एक घड़ी कम से कम ५ सेर की गिनी जाती है)। ३ कठोर। ४ सामर्थ्य। स्त्री-पुत्र सहित। ६ छोड़ चला। ७ मनुष्य, नर-बलि। ८ के समय। सवा प्रहर। १० दहाड़ मार कर रोने लगा।

लागो । तरै राजा दोड़ चाकरांरो हाथ पकड़ बोल्यो, क्यूं भाया, आजरो दिन भूखो सिपाई आय बाजार में बासो लीयो छै, म्हांनो थांरा देसरो बिगाड़ कीयो सूझै नही नै इण टाबर नै पकड़ियो तिको कासूं कहो छो। तिरै बाजाररा बाण्यां बोल्या, अरे परदेसी, थारा बेटानै माताजीनै चढावसी। तरै राजा सूंडो आपरा बेटानै छोडाय माताजीरै थांनक[१] जाणनै साथे हुवो। आगै राजारै हजूर ले गया, मालुम कीयो। तरै राजा कह्यो, तयारी करो। इसो राजै सुणीयो। तरै कह्यो, राजाजी, हूं सूंडो रजपूत छूं, सेखा सुजावतरै वास बसूं छूं नै म्हारा धणी[२] सूं आंमनो[३] कर दांणो-पांणो[४] अठै लायो छै नै थे विना खून-तकसीर[५] विना मानै मारो छो, पिण ठाकुरे म्हारो धणी छै तिको वैर लीयां विना रहैलो नही, पछै थांरो खातर में आवै ज्यूं करो। अबार तो जोर नही, पिण पगपीटो[६] तो सेखोजी करसी। तरै राजा कह्यो, सेखो सूजावत पहुंचै तिण दिन वेगो मोनै मारिज्यो। इतिरो कहि राजा सूंडानै माताजीनै चाढियो। राजारी रजपूताणी नै मोटियार[७] पीपाड़ अपूठा[८] आया। तरै सेखेजी सूराचन्द ऊपरा दोड़ण[९] रो मनसा घणो कीवी, पिण जोग कदेहो मिलियो नही नै अठ सेखोजी कांम आया लोहे भर पड़िया। तरै कह्यो, जैतसी भतीज, तूं रजपूताई में सखरो[१०] छै, कलियां वरांरो बाहरू[११] छै, तिको ओ वैर

१ देवालय। २ स्वामी। ३ रीस, क्रोध। ४ अन्नजल। ५ कसूर। ६ पैर पीटना, उपेत। ७ आदमी। ८ वापिस। ९ आक्रमण करने को। १० अच्छी, बड़ा। ११ कलिकाल के अथवा पुराने बैर का प्रतिशोध करनेवाला।

पहिर[1] । तरां जैतसी हांकारो भरियो । सेखोजी तो मोखंतर हुवा । तरां संसकार करि नै रावजी सहिर जोधपुर पधारिया नै जैतसी उदावत छिपीयें आया (राजथांन छिपीये[2]) । तिको पांचा मांहे वैर पैहरियो । तिण वैर काढण[3] री घणी फिकर रहै । राते नींद आवै नहीं । ढोलिया ऊपर ढाल गोडां[4] मांहे देने योगेसर-ज्यूं बैठो रहै । नीसासा चतुर-पोहर मेलै । इसी तरै जैतसी रहै ।

एकै दिन प्रस्तावे[5] सोलंखणीजी जैतसीजीरी मासू कह्यो, बहूजी साहिब[6], राजरा बेटाने मोसूं मूंढे बोलियांने मास च्यार हुआ, न जांणी-जै देही चाक[7] छै कै न छै; कनां कोई मोटो सोच छै, जिणसूं म्हारी तो आसंग[8] पूछणरी नहीं, राज आरोगणने मांहे पधारै, तरै पूछज्यो । इतरो कहि नै काम लागा । तितरै जैतसीजी मांहे आरोगण[9] नै पधारिया । तरां बहूजी बोल्या, बेटा जैतसी, थारो डील तो गाढो[10] चाक दीसै छै नैं थे रातै पोढो नहीं, सुख न करो छो, तिको कासूं जाणीजै । तरै जैतसीजी नीसासो[11] मेल नै कह्यो, बहूजी साहिब, काको सेखोजी काम आया, तरै राजा सूं हारो वैर पहिरियो थो, सो दसराहो पिण दिन २० में आयो नै बोलरो लटक[12] दीसै नहीं

---

१ स्वीकार कर । २ राजस्थान के ठिकाने "छिपिये" में । ३ प्रतिशोध करने । ४ घुटनों में । ५ के समय । ६ राजपूत घरों में माता को बच्चे 'बहूजी सा', 'बहूजी साहब', 'बहूजी' इत्यादि सम्बोधन से पुकारते हैं, बच्चा अपनी दादी और दाई का अनुकरण करके ऐसा कहता है । ७ स्वस्थ । ८ हौसला, हिम्मत । ९ भोजनार्थ । १० खूब तन्दुरुस्त । ११ निःश्वास, दुःखभरी दीर्घ श्वास । १२ निकलने का ढंग ।

छै। भायां में हासो[1] होसी। सुराचंद पिण अलगो[2] नै राजासूं मामलो करणो, तिणसूं फिकर घणी। दीहां[3] आवड़े[4] नहीं, राते नींद आवै नहीं। इण सोच मांहे सुझै नहीं। इण भांति कहिनै बारै आयो। साथ लेनै तलावरा वड़ां पीपलां हेठै बैठा छै। जांगड़िया उलो[5] छै। अमल गलीजै छै। कसुंभो निकलै छै।

तिण समै रजपूत एक, सात पंवार, नांम राघोदे। तिणरो वास रातां-दूंदो[6] छै। तिको दोयनड़ो[7] चहुवांणरै परणियो थो। तिको सासरै जातो थो। तिणरै फाटो वागो[8], फाटी पाघ, तूटी-सी पैजार[9], तूटा-सा हथियार। तिणसूं अलगो लाजतो[10] कैरां[11] मांहे छांनो[12] नीकलियो। तिको जैतसीजीरै निजरां चढियो। तरां आदमी मेल बुलायो नै पूछियो, कठै वास, कठै जास्यो, नै छांना अलगा टलता थूं निकलो। तरै राघवदे कह्यो, महाराजा, लूटो[13] सिपाई सांमान विना छूं, तिका दोयनड़ी जैतारण[14] रो गांव छै। तठै ओभूणो[15] लेणनै जाऊं छूं। तरै जैतसीजी कह्यो, भली वात। तिण हीज वेला आपरा कड़ा, मोती, सिरपाव दीधा, नै अमलरी गोटी[16] एक, मिठाईरो करदियो[17], दारूरी वतक, पानांसूं भरनै पानदान दीधो, और

---

१ हंसी। २ दूर। ३ दिन में। ४ मन का लगना। ५ ढाढी लोग गाते हैं। ६ लाल मिट्टी से पुते हुए टूटे-फूटे कच्चे मकान। ७ गांव का नाम। ८ अंगरखी। ९ जूते। १० लज्जित होता। ११ कबीलों। १२ छिपता हुआ। १३ गरीबी का मारा। १४ मारवाड़ के जैतारण परगने में दोयनड़ो नामक गांव। १५ गौना, स्त्री को अपने पीहर से लाना। १६ टिकिया। १७ दस्ती।

सेमरवाळो[1] जोताय आदमी च्यार साथे देनै विदा कीयो। जांगड़ियांरो[2] जोड़ी साथे दीधी। इवरा देनै विदा कीयो नै कह्यो, रावजी, सासरै जाईजै तिको इण भांति जाईजै, सासरारा सुख नै सरगापुर[3]रा सुख सरीखा छै, पिण दिन पांच तथा दस रहै तो घणो आव[4] घटै। इण भांति कहि रुपिया सौ-एक खरचीरा वंधाया सासरै गोठ सारू। असै तरै सूं विदा करि आप दरबार आया। अवै राघवदे सासरै गयो। दिन पांच रह्यौ। आणो[5] करि छिपीयै आयो। तिको जैनसीजीरै वास वसियो।

अवै जैतसीजी सूराचन्द ऊपरै चढणरी तयारी कीयी। चोवीस तो आपरा रजपूत, पचवीसमो राघवदे नै छावीसमा आप चढिया। तिकै आछा सांवण[6] मांग्या। तरै पहिली हिरण मालाला हुवा[7]। तिण ऊपरां रूपां[8] मालाली हुई। तरां पछै गोरहर[9] मालालो हुवो। तरां पछै नाहर[10] वडाक[11] उवेड़ो[12] हुवो। तरां सांवणियां[13] सावण वेध्या[14]नै कह्यो यां सांवणां सूराचन्दरो राजा तो हाथ चढै नै आपां मांहि कुसल् वरतै नै वेढरो मांमलो छै, खित्रीरो धरम छै, पिण सूराचन्दरो राजा तो मारियो। इसी तरै सूं उछाह करता उंमंग मांहि घोड़ा धीमा-धीमा खड़ै[15] छै। तिकै पहिलो मंहिलांण[16] घीलाड़ै[17]

---

१ रथ, रखपाल। २ ढोलियों की। ३ स्वर्ग-भूमि। ४ मान, आदर ५ गौना लेकर। ६ शकुन। ७ सामने से गुजरे। ८ एक प्रकार का पक्षी ६ वन का एक प्रकार का पशु (?) १० बैल, सांड। ११ दीर्घकाय। १२ भेंट हुवा। १३ शकुनियोंने। १४ विश्लेषण किया, अर्थ किया। १५ चलाते हैं १६ पड़ाव। १७ मारवाड़ का एक प्राचीन नगर।

कीयो। बीजै दिन कूच कीयो। जरां[1] वले[2] सावण हूवा। तिणमें फूलो[3] डावी-धकी बोली। दहियापूछि[4]रो दिठालो[5] हुवो। रूपां मालाली हुई नै वले कोड कीयो[6]। आगै नाहर चवेड़ो हूवो। जरै मन विवणो[7] हूवो। सारां सिरदारां सांवण वांद[8] आघा चलाया। तिको कोस दसरै माथै मेलांण कीयो। तीजै दिन चढिया। तरै सांवण हूवा, सांड धडूकियो[9]। आगै देवसादी तठा आगै वोहपूरै ड़ावो राजा सादियो। तारां जैतसीजी सांवण वांद घणा राजी थका चढिया। दिन सातमै मारग जातां मांहे सारा साथनें त्रिस लागो नै सूराचन्दसूं कोस च्यार तथा पांच ऊपरां पोहता। तिसिया[10] पांणी जोवै छै। तरै कोहर[11] एक निजर आयो। तिण ऊपरां लुगाई एक पांणी भरै छै। तिका देखनै जैतसी आपरा साथसूं[12] कोहर आया नै कह्यो, बाई रांम-रांम, पांणी पावो। तरां आसीस दे डोल भरी नै काढियो। तरै जैतसी जी आपरा घोड़ारै पताका[13] भारी थी, तिण ऊपरां जल आरोगणरो रूपैटो[14] थो। तिको भरनै जैतसीजी जल अरोग्यो। तिणहीज रूपोटास्यूं सर्व साथ जल आरोगियो। जारां[15] कूवा ऊपरै ऊभी थी, पाणी पावै थी, तिण देखनै कह्यो, रावतां भायां, साच बोलज्यो, थां मांहे जैतसी ऊदावत किसो? तारां इसो सांभल सर्व साथ चमक[16]

---

१ जब। २ फिर। ३ एक जानवर। ४ एक जानवर। ५ दिखलावा, दर्शन। ६ हर्ष किया। ७ चिन्तित हुआ। ८ शकुनों का स्वागत करके। ६ दहाड़। १० तृषित, पियासे, प्यासे। ११ कुँआ। १२ साथियों सहित। १३ जीन का पिछला भाग। १४ प्याला। १५ जब। १६ चमत्कृत होकर।

... जैनसी कार्ं सगत[1] देवो छै। तरै जैनसीजी बोल

पाई, म्हे तो रामामोरा उमराव छां। थारां पितदारी कहो, हां वीर

पै कहो तिको सोर[2] माथ छै पिन, एक म्हारी वात सांभलो। जैना

रणरे पड़गने गांव मलाड़ो छै, जठे सीलगो करमाणंद[3] छै, तिणरी हूं

पंतीहू, म्हारो नांव हरकुंवरी छै। तिको मोने आईदान खड़िया[4]रा

पंतानै परणाई छै। तिको गांव रामानासरो सामरो छै। तिको अठायी

भवक्कोस ऊपरा छै। को कोहर राजानासरो छै। तिणसूं मैं जैनसी

ऊदावनरो नांव लीयो छै। नैं थे छो इसा असवार, एक रूपैटे अल

आरोगियो, तिको यूं हीज इसा इकवालिया[5] होसी, त्यांरो हीज

कारज सुधरसी। नै वले एक वात सांभलो। अठे थांहरो क

घणो होय रह्यो छै; जैनसी ऊदावन दसराहा ऊपरां राजा सूंडा

मैं सूराचन्द ऊपरां दोड़ करसो, तिणसूं सूराचन्दरा राजारै

दसराहेरो घणो जतन करै छै। पांच-पांच सै रजपूतांरी चोकी

बैठी छै। घणो गाढ[6] हुवै छै। बाहिरलां-मांहिलांरो घणो निघै[7] क

छै। सो थे उठीने सूराचन्दरा भाड़ां खेह लगावण[8]नै जावो छो तो

...री धरमरी पीपली[10] हूं। राज मो आगै आपो परगासो[11],

---

१ शक्ति। २ सभी। ३ चारणों की सीलगा शाखा का करमानन्द ...क चारण। ४ खड़िया नामक शाखा का आईदान नामक चारण। ...ता, प्रेम का बर्त्ताव करने वाले। ६ आतंक। ७ विचार, खोज, ... ८ खोज। ९ भाड़ां खेह लगावणनै (मुहा०)=के मानमर्दन करने ... १० बहिन, 'कूंकूंकन्यां', 'पीपल-कन्या', 'सुआसणी'—ये नाम ...ों में बहिन के वास्ते आते हैं। ११ आत्मत्व प्रकाशित करो।

ज्यूं हूं पिण थांनै मांहिला भेदरी बात कहिनै सुंणाऊं। तारां जैनसीजी जैतारणरी बोलोरी पारिखा करिनै जांण्यो करमाणंद सीलगासूं घणो रांम-रांम छै। तरां जैनसीजी कह्यौ, बाई, हूं जैतो नै आयो तो राजा सूंडारा वैर ऊपरां छूं, पगपोटो-सो करण सारू[1], पिण बाई, थे तो घणो गाढ बतायो, म्हे मूंव[2] किसी विध करां। तरां बाई बोली, आज दसराहो छै, थे म्हारै सासरै आयनै उठै म्हारो नांम पूछता आवज्यो। आगै थांनै म्हारै सासरिया[3] पूछसी, कठै वास, आगै किनरेयक काम, कुण साख। तरै थे कहिज्यौ, साख तो गोड़ छां, वास तीवीजी[4], म्हारो नांव सरवण, आगै सूराचन्द चाकरीनै जावां छां, म्हांनै परवांनो दे बुलाया छै, आज घणा कोसांरा खड़िया आया छां दसरावारा जुहार सारू[5]। अठै आईदांन खड़ियारो बेटो परणियो छै, तिण बाईसूं दोय संदेसा कहिणा छै। तरै म्हारा सासरिया पूछसी, राजरै बहूसूं कठारी सैंध[6]। तरै थे कहिज्यो, म्हारै पीळी आंखांरो धणी[7] सांमदांन आसियो[8] छै। तिणरी भाणेजी छै। तिका नांनेरै[9] आवणेसूं दरबारसूं घणो विवहार छै नै म्हारै पिण भाणेजी छै, नैं म्हे बाईनैं पूछियो थो, थारो सासरो कठै किसै गांव छै, तारां बाई राजावासिया-दिसा कह्यौ थो। नै वळै अबार म्हांनै राजाजीरो परवाणो आयो। तरै सांमदांनरै तो खेतपात[10] ल्यैण-दैणरो काम

---

१ निरर्थक उद्योग मात्र करने के लिए। २ आक्रमण। ३ ससुराल वाले। ४ गाँव का नाम। ५ दशहरे के अभिवादन के लिए। ६ पहिचान। ७ पीली आँखोंवाला। ८ आसिया शाखा का सांमदान नामक चारण। ९ ननिहाल में। १० खेती-बेती का काम।

...रा म्हांनै सांमदांन कह्यो, थे बाईसूं बिगर-मिल्यां[1] ज...
क्युं[2] सवागारो सांमांन[3] मेलियो छै। तिणसूं म्हांनै आज ...
जावणो नै महाराजसूं मिलणो। तिणसूं अठै घोड़ांनै सास खव...
म्हे पिण घड़ीयेक कड़लोला[4] करां। पछै आपा चढिस्यां।
इसी भांति समझाय घड़ो भरिनै आप तो घरांनै आई
तेजसीजी घड़ी दोय वीती पछै घोड़ांनै धीमा-धीमा खड़तां राज...
...वासियै आया नै पूछियो, अठै आईदांन खड़ियैरो कोटड़ी कठीनै छै
...रां चारणांरो साथ असवार तरैदार[5]-सा देखनै हथियार बांधि...
...धि नै भेला हुवा नै पूछियो, कठारा असवार, कठै वास, आगै
...जास्यो नै आईदांन खड़ियारो नै थारै कठारो ओळखांण[7]।
...तेतसी कह्यो, तिवीजो वसां छां, सास गोड़ छै, म्हारो नांम
...ण छे नै म्हारो चारण सांमदांन छै, तिणरो भांणेजो सोलगा
फरमाणंदरी बेटी छै। अठै परणाई छै। जिकणनै क्युं वेस-वागारो
मेलियो छै। नै आगै तो राजाजो परवांनो दे बुलाया छै, जिको
आज दसराहो छै, जुहार करण सारू हजूर जाणो छै। नै घणो दूर
...रा खड़िया आया छां, नै बाईसूं मिलणो छै। तारां खड़ियांरा साथ
...नै परतीत आई। सगांरा नांम-ठांम ठीक पड़ता, वैसास्या[8]।
...सरै खड़ियै आईदांन आय सुभराज कीयो। तरै जैतसीजी घोड़ासूं
...उतरिया। बांह पसाय[9] करिनै मिलिया। आईदांन साथे होय

---

१ बिना मिले हुए। २ कुछ। ३ सुहाग-सामग्री। ४ सांस लिवाने...
...। ५ कमर सीधी करें। ६ तरहदार से, ओजस्वी से। ७ नाम पहिचान।
...विश्वास किया। ९ भुजाओं से आलिंगन करके मिले।

कोटड़ी आया। आयनै कोटड़ी में एक अलायदो[1] नोरो[2] छै, तिणमें डेरो दिरायो। हथियार छुडाया। मांचा[3] ढालिया। मांहि खबर दीधी। जैतसीजी मांहि जुहार कहाड़ियो[4]। आईदांन मांहि जाय कहनै पूछियो, बहू, थे इयां रजपूतांनै ओलखो छो। तारां बहू बोली, बापजी, तिकोजी मुसाल[5] छै, गांवरो धणी सरवण गोड़ छै। ताहरां निसंदेह वात मानी। जीमणरी उतावळ[6] कीधी। जरै जीमणनैं पंच-धारी लापसी[7] मोकळी[8] मंगळीक[9] कीधी। घणा दाळभात बणाया। घणा वेसवारां[10] रांधिया सालणा[11] बणाया। जीमण तयार हूवो। तरां आईदांन जैतसीजी कनै गयो नै कह्यो, पधारीजे, रसोड़ो तयार हूवो छै। तरां जैतसीजी मन मांहे सोच कीधो जे म्हांनै तो चारण, भाट, बांमण[12] सवासणी[13]रो खाणरो पण[14] छै, पिण वेळ्यां देख विणजै सो वाणियो[15], नहीं गिंवार। इसो आलोच[16] करिनै मन ऊपरलो गाढ[17] कीयो, पिण मांहि अरोगणनै पांतियै बैस आरोगिया। जीम चळू[18] भरि पांन-बीड़ा आरोगनै नोहरै आया। कड़लोळा

---

१ एकान्तवर्ती। २ नोहरा, वासस्थान। ३ चारपाई। ४ कहलाया। ५ ननिहाल। ६ त्वरा, शीघ्रता। ७ एक प्रकार का मीठा पकवान। ८ खूब। ६ मांगलिक—'लपसी' मांगलिक अवसरों पर राजस्थान के सभी गृहस्थों में पकाई जाती है। १० मसालों से मिश्रित। ११ शाक, चटनी आदि। १२ ब्राह्मण। १३ बहिन, बुआ इत्यादि। १४ इन सब के घर का अन्न न खाने का प्रण। १५ वेल्यां······वाणियो (मुहा०)=समय देखकर उचित व्यवहार करे वह तो चतुर वणिक अन्यथा···। १६ विचार। १७ ऊपरी मन से घनिष्टता दिखलाई। १८ आचमन करके।

कोगा। नै कह्यो छै,—'जीम्या जद ही जाणियै दुक
तांणियै'[1]। इनरै आदेशन आपरा समस्त साथ ले मांहि ओ
पांतियै[2] बैठा। तरै थाई थारै आई। जैनसीजोनैं हेरो दीयो
आसीस देनै धरती बैठी। तरै जैनसीजी बोल्या, बाई, म्हनै
ामण, चारण, भाट, सवासणी—इनरांरो विस्वो[3] सांणरो पण
.ग भाग्यो थारा दाखीण[4] सूं। इनरो कहि कटारीरी पड़दड़ी[5]
सूं मोहर च्यार काढि छानी-सी हाथ मांहि दीनी नै कह्यो, बाई, र
छूं तो थारो अवसाण[6] कदेही भूलूं नही, पिण अबै काई सला[7] दो
कह्यो, म्हे किसो भांति सूराचन्दसूं झूंझ[8] करां। तारां बाई बोल
सूराचन्दरो राजा छै सो तिको लाखेरीरो गोड़ रांमजी तिणरी
बेटी परणियो छै। तिकणरो नांम विजैकुंवर छै। तिणनै बरसा-
बरस[9] व्यास तथा प्रोहितरै साथे सवागो मेलै छै। तिके असवार
पचीस तथा तीसांसूं आवै छै। तिके कदेही दिन आथमियै[10] आवै छै,
कदेही घड़ी च्याररी रात गयां आवै छै। तिके अठै होयनै नीकलै छै।
करै छै। वल[11] करनै दिन आथमतै चढै छै। सु कदेहीक इण गांव में वल
जास्यो तरै चोकीदार खड़भड़सी[12]। उवे जांणसी जैनसी ऊदावत

---

१ जीम्या···तांणियै (मुहा०)=भोजन किया हुवा सभी समझना
चाहिये जब थोड़ी देर ठहरा जाय। २ पंक्ति में। ३ भक्ष पदार्थ आदि
यत्किंचित्। ४ दाक्षिण्य से, चतुराई से। ५ कोष में। ६ अहसान, उपकार।
७ सलाह। ८ युद्ध। ९ प्रतिवर्ष। १० अस्त होते समय। ११ भोजन।
१२ चौंक जावेंगे।

गमसूं सूरापन्दरै गोरवै[1] चोनालै[2] असैंधा[3] असवार देखै,त
गाढ़ घणो करै। तिण ऊपरां राजसूं पूछणरो गाढ़ कीयो। र
ग सरदार छो,मोटां राजांरा सगा छो नै राज इण दिन इण
रिया तिको राजरो घडो सो सुजरो सक्रियो। अबार दिन
ां सुणियो छै, जैनसी ऊदावतरै आवणरी तयारी कीधी छै।तिण
धारिया,घडो अवसांण[4] पूगो। जैनसीजी बोल्या,तो म्हांनै सि
ताब[5] जाय भेलो हुवणो नै राजाजीरै चोकी पोहरारो जावतो करिणो,

इनरी वात करतां तीजो पोहर आयो। तारां जैनसी जी
नै सारो साथ फेरां-सारां[6] गया; हाथ पग ऊजला कीया, अमल
गलिया, निकै करड़ा अमल[7] कीया। पछै आख्यांरा गोखा[8], कानांरा
मोर[9] छांटिया, तोखा कुरला कीया, घड़ी एक अमलनै पोढाड़ियो[10]।
पछै सिनांन-संपाड़ो करि पाघ बांधी, तुलछीदल पाघ मांहे मेल्यो,
कया श्रीनारायण प्रीत संकलपी[11]। अबै सारो साथ हथियार बांधे
छै। तिको हथियार किसा-एक छै—तरवारियां किसी-एक छै—
थेट[12]री नीपनी[13], सीरोही दांणादार[14], दोय आंगल बाढ[15]
फेरियां छक्कड़ामें वाहै तो एक घाव दोय टूक करै—तिसड़ी तरवारियां

---

[1] शहर के पास कोस २/३ की दूरी पर की गोचारण की भूमि या चरागाह। [2] चौताल, बड़ा ताल, मैदान, चौगान। [3] अपरिचित। [4] औसान हुवा, कार्य सिद्ध हुवा। [5] जल्दी। [6] घूमने-फिरने। [7] अफीम का नशा। [8] आंखों के पलक (गवाक्ष)। [9] कानों के छिद्र। [10] जमाया। [11] ... के प्रीत्यर्थ समर्पित की। [12] ठेठ की, खास। [13] उत्पन्न, ... दानेदार किस्म का असली फौलाद, जो सिरोही की ... था। [14] ... [15] काट करने पर।

चेवड़ी[1] कड़यां[2] वांधी। पछै कटारी वांधी। तिका कटारी किसी-एक छै—थेट बूंदीरी नीपनी, फड़कती बीजली, छेड़ो सांपण[3], घणा सोना में गरगाव[4] कीधी, सकलात[5]रा म्यांन मांहे लपेटी, उचाढा[6] में गरकाव कीधी थकी वांधीजे छै। तरां पछै तरगस कड़ियां लगावै। तिकण में कालबूत[7]री नीसरी, सांठी[8] फांकरै[9] गजवेलरा भलका[10], सोनेरी नखसी[11], तिके वांधीजे। पछै कवाणां चाक[12] कीजे छै। तिके किणहेक भांतरी कवांण छै—असल सींगण[13], सेर-जवांन खांचतां धड़वड़ाट[14] करै, कायर देख भागै, अढारटांकरै[15] चिले लागी, लंकी कबूतररो गरदन ज्यूं थांकी। तिके थांडा में घालीजे छै। तठा पछै ढालां बांधीजे छै। तिके किसी-हेक छै—असल साखी[16] गेंडारी, घणारी मारी बधै, मोहर-तोलै[17] रंग लागै। तरवार, तीर, बरछीरो दाव[18] लागै नही। इसी ढालां अलीवंध नाखीजे छै। तठा पछै सेल, तिके किसाहीक[19] छै—सोपारीरै छड़[20], सार[21]रै फल सूधी सवारी भलमलाट करै, वैरियांरा रगतरी भूखी। तिका हाथ में झाल फेरीजे छै। इसी भांति सांमान करतां दिन घड़ी एक पाछलो आय रह्यो।

---

१ दुहरी। २ कमर में। ३ छोड़ने पर सर्पिणी की तरह वार करने वाली। ४ जड़ी हुई। ५......?। ६......(?। ७ कलाबुत्। ८ मजबूत, सुन्दर (दृढ)। ९ दानेदार, उभरी हुई। १० दमक। ११ नक्काशी। १२ तैयार। १३ सींग की बनी हुई। १४ टंकार। १५ अठारह टंक भार वाले चिल्ले पर चढ़ती है। १६ साक्षात् असली, बिलकुल असली। १७ मोहर के बराबर तोले जाने वाले अर्थात् बहुमूल्य। १८ प्रहार, घाव। १९ कैसे-एक। २० सुपारी के पेड़ की लकड़ी से बने हुए डंडे वाली। २१ लोहा।

सूरज रसणा[1] मांहे जाय पोतो। तिण समै श्रीमाताजी
श्रीनारायणजीनै नमस्कार करि घोड़ासूं असवार हुवा। ता
मिलिया, मोहर चार सिरपाव, सवागारो[2] वीधी नै सीख मांगी
बाई आसीस दीधी, मनोकामना सिद्ध। इतरो कह्यो, असवार
आईदांन खड़ियो पोहचावण सारू साथे हुवो, मारग
तारां जैनसोजी ऊभा राखिया, मुभराज कीयो। तारां आपरा
जोड़ी, मोती सिर-पाव देनै सीख दीधी। आप आपा खड़िया—

श्लोक

उद्यमं साहसं धीर्यं बलं बुध्य पराक्रमं
षड़ेते जस्य होरंती तस्य देवापि संकती ।[3]

वारता—

इसी भांति घोड़ा धीमा-धीमा खड़िया, हथियार चलावता जावे छै।
रात्रि पोहर एक वितीत हुवो थेट[4] सुरतान्दरे गोरमे पोना। आगे
कोस ऊपरै घोड़ा मारवाड़-सामो पांचसे सूं[5] ऊंचा छै। तिके साथ
आवतो देख भड़भड़या; हाका हलहलो[6] पड़ियो। तारां असवार एक
आगे दोड़ने कह्यो, साथ मांहिलो[7] छै, आनंदोसूं मोहिल हरदेवजो

---

१ पृथ्वी, क्षितिज। २ सौभाग्य-सामग्री। ३ यह श्लोक बोलचाल की भ्रष्ट संस्कृत में लिखा हुआ है—शुद्धरूप ऐसा होगा।

उद्यमं साहसः धैर्यं, बलं बुद्धि पराक्रमम्।
षड़ेते यस्य वर्तन्ते, तस्य देवापि शंकिता॥

४ ठीक, ठेठ, ठेठ। ५ के साथ। ६ हमला। ७ अन्दरूनी, अपने ही।

थाई सारू सवागो ल्याया छै। तारां उठी[१] रा साथमें खबर मेलाई[२] जो लाखेरीथी प्रोहितजी आया छै। मांहिसू हुकम आयो, प्रोहितजी छै तो आवण द्यो। तारां जैतसीजी आपरा साथसूं घणो सावधान हुवा थका मांहि गया नै चलाया[३]। तिके चोकी साते ही लांघी। कोठड़ी प्रोल गया। पोलियां नै पूछिया, राजाजी कठीनै[४] छै। तारां पोलियें कह्यो, मातार्जीरै देवल मांहे छै नै गोड़जी पिण हजूर छै, तिके पूजा में छै, और तो सारी पूजा हुई छै, पिण मांणस चढावणरी तयारी करै छै सो राज सांमला[५] महिलां मांहे डेरा दिरावो। तारां जैतसीजी देवल-सामां चलाया, सूधा देहरै ही गया। घोड़ासूं उतरिया नै दोढी लोप[६] मांहे गया। आगै देखै तो राजाजी उघाड़ै माथै माताजीरै आगै हाला-दोली[७] करै छै। चोर एक बांध्यो छै। तिणनै चाढ़ण[८] री तयारी कीधी छै। तिण समैं जाय जैतसीजी राजानै वकारियो[९]। कह्यो, राजा सुराचन्द, थांहसूं[१०] सूंढा राजारो बैर मांगूं, तोमें रजपूती होय तिका करि। तारां[११] सुराचन्दरा राजासूं तो काई हुवो नहीं। राघोदे आथा बधतो थको[१२] सेलरी राजारै घमोड़ी[१३]। तिका पैलै[१४] पार नीकली। तरै गोड़[१५] दीठो, दीखै तो

१ उधर के। २ पहुंचाई, भिजवाई। ३ चल पड़ने की आज्ञा दी। ४ किधर। ५ सामने वाले। ६ उलांघ कर। ७ स्तुति-प्रार्थना। ८ बलिदान करने को। ९ प्रचारा। १० तुझसे। ११ [illegible] बधतो थको= आगे बढ़ते हुए। १३ मारी। १४ [illegible]।

नोटः— [illegible] पोथी

वेरायत[1]। जरै सुराचन्दरा राजारै हाथरो सेल देहरैरै खूंणं[2] ऊभो थो, तिको गोड़ हाथ में लेनै राघवदेरै घमोड़ी। तिको पँवार काम आयो। तिण समै चोर बांध्यो थो, तिण जैतसीजीनै माहराज, मोनै बांध्यो छै, तिको म्हारा हाथ छोडो ज्यूं मोसूं ध हुवै तिका करूं। तरां चोर बांध्यो थो, तिको छोडियो नै तर हाथ में दीधी। उण चोर गोला[3], माहिलवाड़ियां[4] रो साथ स घादियो[5] नै जैतसीजी कोट मांहिला[6] रजपूत चोकी बैठा था र ऊपरां पाड़िया[7]। मांहिलो साथ हाकियो-वाकियो[8] हुवो, रंग मांहि भंग कीयो। इणां सो ढोल बजायो। आदमी सौ-दोढ मारिया। तरां घोर कनासूं मड़ांरा[9] माथा मँगाय माताजी आगै थावर-कोट[10] करायो नै जैतसीजी कह्यो, माता, धाई[11] कै न धाई, जो धाई न होय तो बलं चढाऊं। तरै माताजी प्रभ[12] होय नै कह्यो, इसरा दिन आदमी मांगती, सबै आजसूं हीज धाई नै थारै साथ सहाई हूं। इसो वर दीयो।

अबै सूराचन्द मांहि रोल[13] पड़ी, कूकबो[14] हुवो, चोबोवाला नै खबर दोड़ी, वेगा आय मेला[15] हुवो, जैतसी आयो—ढांनो नायो, राजासूं घोह[16] हुवो। इसो सांभल नै सगलो साथ दोड़ मयो[17]। घादिरला-मांहिलारी कांई खबर पड़ै नहीं। आपधक[18] लागो। निग

1 बैर-प्रतिशोध लेनेवाला है। 2 कोने में। 3 सेवक-चाकर। 4 राज-महल में रहने वाले नौकर-चाकर। 5 काटा। 6 अन्दर वाले। 7 पड़े। 8 हक्के-बक्के। 9 मृतकों के। 10 ढेर, ढेर। 11 तृप्त हुई। 12 प्रसन्न। 13 शोरगुल। 14 रुदन, रोना। 15 एकत्रित। 16 धोखा। 17 दौड़ी मची। 18 घबराहट।

समै जैतसी ऊदावत आपरा साथसूँ पाछा मारवाड़नै चलाया। तिके दिन च्यार में छिपीयै आया। जरै आगै वधाईदार आयो। तरै गांव मांहिसूं ढोल नगारा ले बधायनै मांहे लीया। कल्हियां वैरांरो वाहरू, इसो विरुद[१] लाधो।

इसी भांति जैतसी ऊदावत सेखा सूजावत कनांसं वैर ओढ[२] नै वीयो। सम्वत १८६८ मांहे जैतसोजी हुवा।

॥ इति श्री जैतसी ऊदावतरी वात संपूर्णम् ॥

---

१ प्रशस्ति, यश प्राप्त किया। २ लेकर।

जू देखाँ, अपछरा कही हती जू म्हारो पीछो सँभालें मती, सू आज तो जाय देखीस, देखाँ कासूँ करै छै। तद पाछले पोहररो धाँधल अपछरारे मोहल गयो। ना पछे आगे अपछरा सिंघणी हुई छै अर पाबू सहजे सिंघणीनूँ चूँघै छै। तद धाँधल दीठो। इतरे अपछरा फेर आपरो रूप कीयो, पाबू मिनख हुवा। तद धाँधल मोहल भीतर गयो। ताहराँ अपछरा कही—राज, म्हाँ थाँसूँ कवल[1] कियो हंतो जू जींही दिन पीछो सँभालियो तेही दिन हूं थाँसूँ परी जाईस, सू आज दिन थाँ पीछो संभालियो छै सू म्हे जावाँ छाँ। इतरी कहनै अपछरा उडी सू पाधरी अकास चढ गई। धाँधल देखतो हीज रह्यो।

तद वाँसे[2] धाँधल पाबूने उठे हीज राखियो छै। धाय पास रहै। अर छोकरी[3] हती सू राखी। तठे धाँधलजी तो कितरे दिने देवलोक हुवा। अर पाबू अर बूडो दोय बेटा। तद बूडो टीके बैठो। लोक-चाकर सरब[4] बूडेरा हुवा। पाबूजी पासे कोई नै[5] रह्यो।

तठे धाँधलरी दोय बेटी। नैंमें पेमा तो जीदराव खीचीने परणाई अर सोना देवड़े सिरोहीरे धणीने परणाई।

तठे बूडो तो राज करै अर पाबू बरस पँद्रेक मांहे, पण करा-मातीक[6]। सू एके साँढ चढियो सिकार ले आवै। तद इये भाँत रहतो सात थोरी—चाँदियो, देवियो, खाबू, पेमलो, खलमल, खाँधारो, बासल—अै सात भाई। सु अै आने चाकरेरे चाकर। सू आनेरे देस माँहे काल। तद थोरियाँ एक जिनावर विणासियो[7]। तद आनेरे

---

१ कौल, प्रतिज्ञा। २ पीछे। ३ दासी। ४ सर्व, सब। ५ नहीं। ६ बड़ा करामातवाला। ७ विनाश किया, मारा।

फ्वरनूं खबर गई जू[1] थोरियां जिनावर मारियो छै। ताहरां[2] कंवर आयने थोरियांने हटकिया[3]। तठै[4] थोरियां अर कंवररै खानाजंगी[5] हुई। तेसूं कंवर काम आयो। ताहरां अे थोरी कंवरनूं मार गाडा जोड़ने टाबर लेने नाठा। तठै आनेनूं खबर गई जू थोरी कंवरनूं मार अर नाठा जावै छै। तठै लारांसूं आनो चढियो। तद आनो आय पहूंतो[6]। ताहरां अे लड़िया। तेसूं थोरियांरो बाप काम आयो। आनो इहांरो बाप मारने पाछो फिरियो। तद अे थोरी जैरै ही वास[7] जावै तिका ही राखै नहीं। कहै—आनै वाघेलेसूं पोहचां[8] नहीं। तद चालिया-चालिया पमेरै आया। ताहरां पमे थोरियांनै राखिया। तद कामदारां-परधानां कही—राज, अे थोरी आनेरै बेटेनूं मार-अर आया छै, जो थां राखिया तो आनेसूं वैर पड़सी, आपां पोहचां नहीं। तद पमै पण आनेसूं डरतै थोरियांनै विदा दीवी। कही—धांधल[9] जावो, थांनै राखसी। ताहरां अे थोरी गाडा लेने बूडेजी पासे आया। आय बूडेजीसूं मुजरो कियो। कही—राज, म्हांनै राखो तो म्हे रह ताहरां बूडै तो नीठो[10] दियो। कही—राज, म्हांरै तो दरफ काई[11] नहीं, पाबू भाईरै चाकर न छै, सो थांनै राखसी।

तद अे गाडा छोडने पाबूजीरै मण्डप आया। पूछो—पाबूजी कठे? ताहरां धाय कही जू पाबूजी सिकार गया छै। तद अे पण वांसै[12] सिकार गया। आगे पाबूजी हिरणनूं तीर लगियै

---

१ कि। २ तब। ३ डांटा। ४ उसके बाद। ५ लड़ाई। ६ पहुँचा ७ गांव। ८ पार नहीं पा सकते। ९ धांधल का देश या राज्य १० इनकार। ११ कोई। १२ पीछे पीछे।

छै । सांढ बैठी छै । इणरै थोरियां पूछियो । कह्यो—रे छोकरा, पाबूजी कठै छै ? तद पाबूजी बोलिया । कह्यो—पाबूजी आप सिकार खेलणनूं पधारिया छै । तठै थोरी पण उठै ऊभा । तद थोरियां आपस में समस्या बोली[1] । कहियो—छोकरो ऊभो छै, जो आपां सांढ लेवां तो आजरी आपणी वल[2] करां । इणरी थोरियां विचारी । तठै पाबूजी तो कारणीक मरद[3], पाबूजी इणांरै जीवरी रुखी । तद पाबूजी बोलिया । कह्यो—रे गा सांढ थे ले जावो, थांरै डेरै आजरी वल करो, पाबूजीनूं हूं कह लेइस । तद थोरिया सांढ लेनै डेरै गया । तठै इणां सांढ मारनै डेरै वल कीवी । अर पाबूजी हिरण लेनै डेरै आया ।

तठै पाछलै पोहररा थोरी पाबूजीरै मुजरै आया । आगै पाबूजी बैठा छै । तठै थोरियां विचारियो । कह्यो—रे ओ तो ओ हीज, जे[4] आपांनै सांढ दई हती । तद थोरियां धायनै पूछी । कह्यो—पाबूजी कठै ? ताहरां धाय कह्यो—रे बीरा, ओ बैठा, तूं ओलखै नहीं ? तद इणां पाबूजीसूं सिलाम कीवी । तद पाबूजी थांदेनै कह्यो—रे थांदा, म्हारी सांढ थनै मठाई दीनी सू कठै ? ताहरां थांदै कह्यो—राज, दो म्हांनै दीवी वल कीवी, सू म्हां खाधी छै । ताहरां पाबूजी कह्यो—रे ऐसी किसी हुई छै सू सांढ खाधी, वलनूं सौंपी दिराती, पण सांढ किसी भांत खाधी छै ? ताहरां पाबूजी कह्यो—सांढ थां खाधी कांई नहीं । ताहरां थांदै कह्यो—राज, खाधी, सू इसे[5] बढैनूं टे साथी ?

---

१ समस्या बोली—संकेतमें बात की । २ भोजन । ३ कारण-वश मनुष्य बने हुए, अवतारी, सिद्ध-पुरुष । ४ जिसने । ५ इस ।

हरां पाबूजी साथे माणस[1] देने[2] कही—घरे जाय खबर तो करो
हरां धोरो माणसरे साथे हुवने डेरे जाय देखै तो कासूँ[3] ? सांढ दे
जीवै छै। तद थोरियां आपरो वैरांने[4] पूछो। कह्यो—हे, आ सां
के[5] बांधो ? ताहरां वैरां पण[6] कही—राज, आगे तो नहीं थं
हणे हीज[7] म्हारे निजर आई। ताहरां थोरियां विचारी जू को पह
जून करामातीक छै, आपांने भो राखसी। तद औ सांढ लियां-लिय
जी पासे आया। तद पाबूजी कही—रे, सांढ थे कहता हना ज
? तद थोरियां कही—राज समथा[8], म्हांनूं राज परचो[9] देखायो।
ां पाबूजी कही—ना थे रहसो ? ताहरां थोरियां कही—राज,
हसां। तद थोरी पाबूजी पासे चाकर रह्या। औ इये भांत रहे छै।
पछे दूडेजीरो बेटी पेम्हण गोगेजी चवाणनूं परणाई। तद
[10] गायां सेंकलपियां, केई बई[11] संकलपियो, अर पाबूजी कही
ई, हूँ तने दोदे सुमरेरी सांढांरा करग[12] आण देईस[13]। तद
जो हँसिया। कही—ओ दोदो सुमरो छोटो रावण कहीजै, तेरो
किसी भांत ले आसी ? तरे पाबूजी बोलिया। कही—सांढां
देईस। गोगाजी सो परणोजनै हलाणो[14] ले गांव गया छै अर
पाबूजी हरिये थोरीनूं कही—रे हरिया, दोदेरी सांढां हेर
, सांढां माईनूं आण देसां, माईने सासरिया हँससी, कहसी
सांढां कद आण देसी।

आदमी (नौकर)। २ देकर। ३ क्या। ४ स्त्रियों को। ५ किसने।
७ अभी। ८ सामर्थ्यवान। ९ चमत्कार। १० किसीने। ११ झुंड।
। १३ लाऊँगा। १४ दहेज आदि।

तठे हरियो तो सौदोंरो हेरू[1] गयो छै अर चाँदियो रोज पाबूजीने कहै जू आने वाघेलेंरे माथे म्हारो वेर छै, मने वेर दिरावो।

तठे एक दिन सिरोहीमें देवड़ेरी वाघेली राणी अर सोना महलायत में बैठा चौपड़ खेले छै। सू वाघेलींरे बाप गइणो दियो हंतो, तैसूं वाघेली गइणेरी बडाई करै, आपणो गहणो बखाणैं, अर सोनल रूपरी फूटरी सू आपरो रूप बखाणै। तठे अ आपसमें बोलियाँ[2]। ताहरां वाघेली सोनानूँ मेहणो दियो। कही—थारो भाई थोरियाँसूँ भेलो जीमै। तठे सोनल रीस कीवी। तैसूँ देवड़े पग कही जू थे रीस क्यों करी, साच कहै छै जू पाबू थोरियांसूँ भेलो तो बैसे छै। तद सोना कही—थे कहो सू खरी, पण जिसा भाईंरे थोरी छै तिसा थांरे अमराव[3] ही कोई नहीं। इतरो सोना कही। तैसूँ देवड़ो रीस कर उठियो। तठे ताजणो[4] देवड़ेरे हाथ हंतो। तैसूँ देवडै तीन ताजणा मारया। तद सोना कागद लिखनै पाबूजीनूँ मेल्हियो। लिखियो जू इमैं भांत वाघेलींरे कहे देवड़े मोनूँ चोट वाही। कागद आदमी ले जाय नै पाबूजींरे हाथ दियो। तद पाबूजी कागद वाँचने चाँदेनूँ बुलाय अर कही जू तयारी करो, आपाँ देवड़े ऊपर जासां, बाईरो कागद आयो छै।

तठे अ सात असवार थोरी ने[5] अेक असवार पाबूजी। पाबूजीरे चढण कालवी[6]। काछेला चारण समुंद्र खेप भरण[7] गया हंता। सू

---

१ खोज में। २ बोलचाल हो गई, बात-ही-बात में छेड़छाड़ हो गई। ३ उमराव, सरदार। ४ चाबुक। ५ और। ६ घोड़ी का नाम। ७ व्यापार के लिए सामान।

डो गीतरने घोड़ीनूँ लागो । मेरी कालवी घोड़ी नोपनी[2] । सु
ो काछेली पामी जींदराव खीची मांगी । सद चारणी न
ार बूंदे मांगी सद पन न देवी । काछेली घोड़ी पाबूजीनूँ
द कही—राज, थांनै घोड़ी देवां छां सु थे म्हारी परवर-
णी करज्यो । सद पाबूजी कह्यो—थांनूँ काम पड़ियां जूनी
नीं । भो मोल कर लीवी । तैसूं जींदराव अर बूंदे दोनां ही
रीस घींची, दुख पायो ।

पूजी असवार हुयनै बूंदेरै डेरे आया । बूंदेसूँ मुजरो
पाबूजी भीतर भाभीनूँ मुजरो कहायो । ताहरां छोकरी
नै डोड-गहेल्ड़ीनूँ कही जू बाईजी राज, पाबूजी थांनूँ
ो छै । ताहरां डोड-गहेली छोकरीनूँ कही जू देवरने कह
जी भीतर बुलावै छै । ताहरां पाबूजी भीतर गया । नद
पाबूजीनूँ कही जू पाबू, थांनै चारण पासे घोड़ी लेणी न
ई मांगी हुंती तैने लेणी नहीं । ताहरां पाबूजी कही जू
' लेणी छै तो आ हाजर छै । ताहरां भोजाई कही जू
लेवै, पण तूँ घोड़ीरो कासूं[6] करीस, लेन बाह अर
दीसे छै घोड़ी लीधी छै तो धाड़ा करसी । ताहरां
तू जो बूडेजीरे घोड़ी लेणी छै तो लेवो अर जो थे

२ जननी । ३ रक्षणा, रक्षा । ४ जूती तक पहनने की
मातिरीज्ञ आवेंगे । ५ बड़े भाई के । ६ किस लिए ।

मेहमा बोलो छो तो म्हे रजपूत, घोड़ा म्हांने ही चाहीजे छै, अर धाड़ेरो कहो छो तो डोडवाणेरा[1] होज धाड़ा ले आसां।

इनरो पाबूजी कही तद डोड-गहेली बोली। कही—आसो तो सही पण म्हारा भाई असा न छै जिके थांने धाड़ो ले आवण देवै, का तो पोंहच अर राखै अर जो जाणे जू बहनोईरो भाई छै तो मारै नहीं तो अम्मल आंसुवे गेलावै। तठे पाबूजी कही—म्हे राठोड़ छां, डोडां म्हे राठोड़ कोई मारियो सुणियो नहीं।

डोडवाणे डोड राज करता हंता। तठे बूडोजी परणिया हंता। तठे पाबूजी भोजाईसूँ वाद करनै उठे डेरे आया। उठे चांदेनूँ बुलायनै पाबूजी कही जू चांदा, आपां देवड़े पछे जासां पण पहली डोडवाणेरो धाड़ो ले-अर आसां। तद अे चढिया। पाबूजी असवार नै थोरी साते भई था। उठे अे चालिया सु डोडवाणेरे निजीक आया। ताहरां पाबूजी तो अेक थल मांदे नरगस ऊँचो नाखनै, आप घोड़ी बांधनै, गोठी[2] खाय बैठा अर थोरियां सांढीरा वरग लिया। तठे थोरियां जायनै सान-सान आपड़नै चढ़-अर सांढां चलाई। तद रैबारियां जायनै डोडां आगे पुकारियो। कही—सांढां लीवी, वाहर[3] चढो। तद डोड पूछी। कही—रे किनरा एक असवार छै। ताहरां इयां कही—राज, सात प्यादा थोरी चोरटा छै, तिके लियां जावै छै। ताहरां वाहर चढिया। तठे थोरी तो सांढां लेनै आघा निसरिया अर वांसेसूँ वाहररा असवार जे थल पाबूजी बैठा हंता ने थलरी बराबर

१ डोडवाणे में डोड राजपूतों का राज्य था, डोड गेहली वहीं की राजकुमारी थी। २ घुटने के बल। ३ रक्षार्थ।

धाला। तठे पाबूजी तीर-कारी[1] कीवी। नेमूं अमजार दमैक मार दियो। तठे पाबूजी घोड़ांनूं अर बीझा थोरियांनूं सद[2] कियो। कही—पाछा आवो। ताहरां थोरी पाछा फिरिया। तठे घोड़ा ठेनै थोरी चढिया[3]। इतरे वांसे सिरदार डोड आय पहुंता। ताहरां इयां पाबूजीरे सायरा थोरियां डोडांनूं आपड़ लिया। ताहरां बाकीरी फौज पाछी फिरी। तद पाबूजी कही—रे सांठां छोड देवो, आपांनै इयां डोडांसूं काम हुंतो सु ले हालो। ताहरां अे डोडांनै लेनै रातूं-रात चालिया सु कोलू आया। तठे डोडांनूं तो कोटड़ी मांहे राखिया अर आप मोहलमें जाय पोढिया।

तद परभात हुवो। ताहरां पाबूजी जागिया। तद पाबूजी धायनूं कही—धायजी, थे डोड-गहेलीनूं जाय अठे ले आवो, कहो जू पाबूजी कह्यो छै जू थे भाभीजी आयनै म्हारो मालियो देखो, मैं नवो करायो छै। तठे धाय तो दूडेरी बहूने लेण गई अर पाबूजी थोरियांनूं कही—थे डोडांनै पायसूं मुस्कियां बांधनै चूंटिया तोड़ रोवाय झरोखे नीचे लाय ऊभो। इतरे धायजी डोड-गहेलीनूं कही—राज, थांनै पाबूजी बुलावै, कहै छै जू म्हां नवो मालियो करायो छै सु थे पधारनै देखो। ताहरां डोड-गहेली बहली बैसनै पाबूरे महल आई। आगे पाबूजी बैठा हुंता सु उठ मुजरो कियो। कही—भाभीजी राज, झरोखे नीचे ख्याल[4] छै, देखो। ताहरां आ झरोखे नीचे देखण लागी। नीचे जैसो ही देखियो तैसो थोरियां डोडांरे चूंपी तोड़ी। तैसूं

---

१ तीरंदाजी। २ शब्द किया, पुकारा। ३ थोरियों के पास अभी तक चढ़ने को घोड़े नहीं थे। ४ तमाशा, खेल।

डोड रोवण लागा। तद डोड-गहेली देखै तो कासूं ? भाई नीचे बाँध्या छे अर रोवे छे। ताहराँ डोड-गहेली कही—पाबू, ओ कासूँ सूल[1] छे, मैं तो तोनूँ हँसती वात कही हुती। तद पाबूजी कही—भाभीजी, हूँ पण हँसतो ले आयो छूँ, पण रजपूतानूँ देण बोलजै नहीं, महणा कपूतानूँ कहीजै। तद डोड-गहेली कही—भली कीवी, हमें छोडो। ताहराँ पाबूजी डोडाँनूँ भोजाईनूँ दिया अर आप डेरे बैठा। तठे डोड-गहेली भायाँनूँ ले जाय दिन च्यार राखने पछे घराँरी सीख दीवी छे।

अर पाबूजी देवड़े ऊपर चढण लागा। तठे पाबूजी असवार हुवण लागा। इतरे हरियो साँढो हेरने आयो। पाबूजीनूँ कही-राज, देवेरी साँढो आपरै हाथ न आवे, देवो जोरावल छै, देवेरो राज वडो राज छै, बीच पंचनद[2] वहै छै, ओ दूजो रावन याजे छै, आपाँ उठे जावणरा नहीं। इतरी हरिये थोरी आपने कही छै, आपाँ उठे जावणरा नहीं। तठे पाबूजी कही-तो भले पिरला समक्ष देसाँ, हमे तो देवड़े ऊपर हालो। तठे अे आठ असवार नैं एक हरियो प्यादो नवै आदमी सिरोही ऊपर चढिया। तठे बीच आतो कांकड़ो रहतो। आनेरो वडो राज हुंतो, पण अे तो करामातीक। तठे बीच जावताँ चांदै कही-राज, ओ तो पड़े रहै छै, अर म्हारो वैर छै। ताहराँ अे चालिया। आनेरै सहर आया। आनेरो काम हुंतो जू जिको पण आय उनरनो नेड़ूँ जीवतो जीवण देतो नहीं। तठे आनेनूं मारो आवने कहो जू राज, वेई

1 सूल। 2 सम्भवतः सिन्धुनदीसे तात्पर्य है।

डारी सुनने कनकारी करने, भड़ियो। तठे पाबूजी अर आनेरै लड़ाई हुई। तैसूं आनेरो सरब साथ मरांणो। आनो एग कम आयो। तद पाबूजी आनेनूं मारने आनेरै कंवरनूं कही-तने एग नागीस। तठे आनेरै रंटे आपरी मारो गढणो पाबूजीरी निजर कियो अर पाबूजी कंवरनूं टीकै बैसाणियो। आनेरै बेटेनूं टीकै बैसाणने आप आय देवड़ै ऊपर गया।

रातूं-रात जायने सिरोही घेरी। तठे देवड़ैनूं पाबूजी कही जू देवड़ा, तूं जाणीस जू पाबूजी मैसूं मिलण आयो छै, सू हूँ मिलण नायो[1] छूं, मैं बाईने वासता बाछा छै तेरे वास्ता आयो छूं। तठे देवड़ो एग असवार सरब भेला करने पाबूजीरै साहमो[2] आयो। तठे लड़ाई हुई। तद पाबूजी चांदेनूं कही जु चांदा, देवड़ो आपां मारो मती, आपड़[3] लेवो। तद औ लड़िया। तैसुं देवड़ेरो साथ सरब मरांणो अर देवड़ानूं आपड़ आ कही—देवड़ेरै खांडो········मारो मती। तहरां पाबूजीरी बहन वहली बैसने भाई पासे आय कही—भाई, देवड़ानूं मने कांचलीरो[4] दे। तठे पाबूजी देवड़ानूं बहननूं कांचलीरो करने छोड, आनेरी बंदो बाघेलोरो मारो गढणो बहननूं देने कही-बाई, ओ गढणो थने कापड़ेरो छै। तठे सालो-बहनोई आपसमें रस हुवा[5] छै। ओ पाबूजीनूं लेने सिरोही गढ मांहि गयो छै। तठे

---

१ नहीं आयाहूँ। २ सामने। ३ पकड़। ४ बहिन को बड़ा भाई कांचली (अंगिया) पुरस्कारस्वरूप में देता है, ऐसी कौटम्बिक प्रथा है। ५ मित्र होगये।

सोनलने पाबूजी साथ लेने बाघेलोनूं बाप सलावणने[1] गया छै। अठे सोना बाघेलोनूं कही जू बाईजी, थे लोकचार करो, थांरे भाने बाघेले बापनूं मारो गई मार आयो छै—धोरियांरे बेर मांहै। अठे बाघेली बापरो मोटो बदायो छै[2]।

पाबूजी कहे परनने आज दारने जीम-भर आप अठेसूं चढियो। तद चांदेनूं कही, थांरे बापरो पण बैर लियो छै अर डाईरो पण बैर पाछिलो छै, हमें[3] चालो दांदेरी सांढां ले आपने भाभीजीनूं देवां, उवेनूं पण सामरिया मङणा[4] देसां। अठेसूं चढिया सू औ दोदेरे चालिया। हरिदेनूं आगे किनो। तद बीच निरजो स्नान रहै। अठे इंदेरे पण एक बाग। तेनें अन्दर सकै कोई नहीं। जिको अन्दरै तेनूं मारे। इंदेरो पण बडो राज। आहरां पाबूजी चालिया। तिरजे सनरो लहर-बाग आयो। अठे बागमें जायने बाग सौ[5] मोड़ उजार[6] कियो। तारां[7] माली उठे जायने पुकारियो छै जू असवार अेक उतरियो छै सू बाग सरब विधूंसियो[8] छै। तद इंदे पूछो। कहो-किसो एक रजपूत छै। तद मन्त्री कही—राज, हिंदू छै, हाथी साथ बांधे छै जी, इंदेसूं आपां पोहचां नहीं[9], जे आगो बाघेलो मारियो तेनूं आपां पोहच सकां नहीं, साहमो रसाल[10] ले हालो। अठे लियो घोड़ा, कपड़ो, मेवो लेने साहमो बाग आयने

---

१ अमुक मनसबदारों को सलाम करना राजस्थानी में 'सलावणो' कहलाता है। २ अन्तिम नमस्कार किया है। ३ अब। ४ ताने, व्यंग्य। ५ समस्त, सब। ६ उजाड़, बरबाद। ७ तब। ८ विध्वंस किया है। ९ बराबरी कर सकते नहीं। १० सन्धिसूचक हरा पान, डाली, सौगात।

पाबूजींसूं मिलियो। अठे पाबूजी इदेनूं नाजो हुआ। तद
गो सारव पाळो दियो नै अेक घोड़ो राखियो। नै ऊपर ह
चाढ़िये।

अठे इणसूं भेट करनै पाबूजी आप चढ़िया छै तिके पंच
ऊपर आय ऊभा। तारां पाबूजी चांदेनूं कही—चांदा, प
थाग[1] छै, देखो किनरोइक ऊंडो छै। तारां चांदेने थग
नहीं बांसांरि डोभ[1] पड़े। तद चांदै कही—राज, पार हुई सकां
सर अठै हेरो करो, परै उठे[2] पार सांढां आसी तद आपां ले
इये भांत बात करतां पाबूजी माथा फेरी तेसूं पेठे[3] पार जाय
रह्या। तारां चांदै फेर परचो[4] पायो। तारां चांदैनूं कही
चांदा, सांडोरा वरग[5] घेरो। तद थोरियां जायनै सांढां स
लेने टोळेनूं चोथ लियो। अे सांढां लेने पाबूजी पासे आय
अठे पाबूजी टीको रेबारी हतो तेने छोडनै, बांडि[8]ऊंट चाढने कही
रे तूं दादेनूं कही जू सांडोरा टोळा राठोड़ लियां जावे छे, जे चे
सके तो वेगो आये। तठै रेबारी तो जाय पुकारियो। कही—राव
सिलामत, सांडोरा वरग सरब लिया। तारां दोदे कही—रे भां
रचो छै नहीं, इसो आज कुण छै जो दोदे सूमरे[9] सूं वैर करे, सांढ

---

१ पंजाब। २ गहराई, थाह। ३ बांसोंभर डूब जाने वालो थाह
(गहराई)। ४ इस तरफ, इधर वाले। ५ परले, उधरवाले। ६ पराक्रम का
प्रमाण। ७ वर्ग, झुंड। ८ अगन-भग वाला ऊंट, शैतान ऊंट। ९ सूमरा
अथवा ऊमर-सूमरा भाटी जातिके क्षत्रियों की एक शाखा का नाम है जो
से पश्चिमी राजस्थान में रहते थे।

लेवै ? ताहरां रेबारी कही—राज, इतरी कही छै जू राठोड़ सांढां लियां छै, जो आय सकै तो वेगो आये।

इतरो सांभलनै दोदो सूमरो साथ भेलो करनै चढियो छै। अर पाबूजी सांढां लेनै मेल्हनै धाकली[1] सू पांणी मांहे दीवी। तेसूँ सांढां जैसो आड[2] तिरै ते भांतरो तिरनै साथ पार नदी करी। करनै आघा चालिया। तठे दोदे मिरजो खानरे सहर आयनै मिरजेनूँ कही जू राठोड़ सांढां लीवी, तूँ पण बाहर आव। मिरजो दोदेरो चाकर हुंतो। तद मिरजो पण चढ दोदेरे साम्हो आयो। ताहरां मिरजे कही जू दीवान, थे आघा मनो जावो, सांढां पाबू राठोड़ लियां छै, आपां घोड़ा मारियां पोंहचां नहीं, पाछा हालो, नै आनो बाघेलो मारियो छै सू थांसूँ पण मरै नहीं। तठे मिरजे इतरी कही तेसूँ दोदो पाछो फिरियो।

दोदो तो फिरनै घरे आयो। अर पाबूजी सांढां लियां सोढांरै सहर मांहे निसरिया। तठे कोटरै नीचेकर निसरिया। तठे सोढी झरोखे मांहे बैठी पाबूजीनूँ दीठी। तद सोढी मानूँ छटी जू पछै हो मनै परणासो तो पाबूजी आवै छै, मनै परणावो। ताहरां इये आपरे मांटीनूँ[3] कहाई। तठे सोढे आदमीनूँ वांसे[4] मेल्हियो नैं पाबूजीनूँ कहायो—राज, म्हारे परणीजनै पधारो। ताहरां पाबूजी कही जू आज तो धाड़ो[5] लियां जावां छां, पाछे आय परणीजस्यां। ताहरां सोढे आदमी साथे नालेर मेल्हियो[6]। ताहरां आदमी टीको काढ,

---

१ हांक लगाई। २ ज्वारभाटा। ३ पतिको। ४ पीछे। ५ धाड़ा, डाका। ६ नारियल भेजा, सगाई करते समय राजस्थान में लड़की की ओरसे लड़के को नारियल भेजे जाने की प्रथा है।

जठे चढसां जठे फने फर आसां। तो पण गोगेजी कही—आपरो घरती मांहि सौण हीज छै। तठे रात तो अे पोढ रह्या छै अर परभात हुवां गोगोजी पाबूजी वेऊं[1] घोड़े चढ़नै सोणनूं निसरिया। तठे सौण तो कोई हुवो नहीं। ताहरां अेक रूख नीचे जाय जाजम बिछायनै सुता अर घोड़ो-घोड़ी दोनांनै कायजो[2] दाख्नै चरणनूं छोडिया छै। इतरं ठंडो वखत हुवो। ताहरां अे जागिया। तठे गोगोजी उठिया। कही—घोड़ा ले आवां, पछे आपां घरे जावां। तद पाबूजी कही—राज बैसो, हूँ ले आईस। ताहरां गोगेजी कही—थे छोटा तोई सुसरा छो, पण बडा छो, थे बैसो, हूँ ले आईस। ताहरां पाबूजी कही—आ तो सांची, पण थे बूढा छो अर म्हे मोट्यार[3] छां। ताहरां पाबूजी घोड़े-घोड़ीरी खबर करणनै गया। आगे जाय देखै तो कासूँ? नाग दोय छै तिके खड़ा-खड़ा घोड़ो-घाड़ी चारे छै अर दोयां नागांरी घोड़ांरे पगा मांहि दावणो छै। तठे पाबूजी देखनै विचारी जू आ मने गोगेजी करामात दिखाली छै। तठे पाबूजी पाछा आया। पाछा आयनै गोगेजीनूं कही—राज मने तो घोड़ा दीसै नहीं, कठे निसरिया, मने तो मिलिया नहीं। ताहरां पाबूजी जाजम बैठा अर गोगोजी वरछी लेनै खबर करणनूं गया। आगे देखै तो कासूँ? पाणीरो बडो हृद छै, भरियो छै, तेमें एक नाव छै, तेमें घोड़ा दोनूं छै, सू नावमें तिरै छै, हृद ऊंडो बहोत। गोगेजी विचारी जू आ मने पाबूजी करामात देखाली छै। आ जाणनै

१ दोनों। २ जानवरों के पैरों में बन्धन अथवा अर्गला डालना, जिससे वे भागकर न जा सके। ३ जवान।

ताहरां पाबूजी घड़ी दोय रात गयां धाट[1] जाय पहूँता। चठे सोढां भली भांतसूं विवाह कियो। ताहरां पाबूजी फेरा लेनै हालण लागा। ताहरां सोढां कही—राज, म्हांमें चूक किसी जू जीमो नहीं नै कोई भगत लेवो नहीं सू किसे वासते, दिन दोय च्यार रहज्यो, जान दायजो देनै विदा करां। ताहरा पाबूजी कही जू म्हांने सौण लावा[2] हुवा छै, तेहूँ रातेरात घरां जाईस, पाछे मासेकनूं[3] भगत दायजो ले जाईस। ताहरां सोढां कही—तो चढो। तद पाबूजी चढिया। तठे सोढी पण कही—हूँ पण नहीं रहूँ, साथे हुईस। तठे सोढीजी पण वहली बैस साथे हुवा छै। ताहरां वहली वांसे[4] राखी। पाबूजी सोढीनूं आपरे वांसे कालवी ऊपर चढाय लीवी। उठेरा चालिया रातों-रात कालू आया। पाबूजी अर सोढी जाय मोहलमें पोढिया छै अर देवो आपरे घरे जाय सूतो छै।

तठे जानी जींदराव आयो हुंतो। तठे पाबूजी बूडेजी जींदरावनूं सीख दीवी। ताहरां जींदराव जांवते मारगमें काछेलांरो धण सरब लियो। ताहरां गोरी[5] आय पुकारियो। कही—जींदराव खीची धण[6] सरब लियां जावे छै। तद विरोड़ी चारण आयनै बूडे आगे कूकी। कही—बूडा, बाहर धाय, खीची गायां घेरियां। ताहरां बूडे कही—हे चारण, म्हारी आंख दूखी छै, आज तो कोई चढां नहीं। ताहरां चारण कूकती-कूकती पाबूजीरे महल आयनै चांदेनूं कही—चांदा, पाबूजी नहीं अर खीची धण सरब लियो, तूं चढ। ताहरां चांदे कहो—हे कूक ना,

१ सोढोंका देश। २ खराब। ३ एक महीने के लगभग। ४ पीछे। ५ गाय बैल चरानेवाला। ६ गाय-बैल।

पाबूजी आया छै। इनरे पाबूजी पण झरोखे मांहि गलो काढियो। कही—कासूं छै? ताहरां चांदे कही—विरोड़ी चारणरो धण जींदराव लियो अर बूडो चडै नहीं। ताहरां पाबूजी घोड़ी जीण करायने चढियाने माहेड़ी[1] पण सरब चढिया। सातबीस जानी नै सात चांदेरा भाई अै पाबूजी साथे चढिया। तिके जाय पहूँता। उठे लड़ाई हुई। ताहरां खीचीरो लोक सरब घिरियो। पाबूजी धण सरब लेने चालिया अर धणने गूजवे कोहर[2] चाढियो। पण पाणी नीसरै नहीं। तद विरोड़ी कह्यो—वडा राठोड़, ज्यों फेरिया[3] त्यों पाय[4]। तठे वांसे कोहर मांहे घातने पाबूजी आप वारो लेवण लागा। तठे अेक वारो काढियो। तेरे काठा कूंडो खेली अेके वारेसूं सरब भरिया। धण सरब पायो।

अर वांसे वीरोड़ीरी छोटी बहन बूडेनूं जाय पुकारी। कही—बूडा, हमे तू छिनरा-एक काल जीवीस, पाबूजी तो काम आया। इतरी इये कही तेसूं बूडेनूं छोह[5] छूटो। बूडोजी असवारी कर चढिया। तेसूं पहूँता ताहरां जींदरावनूं कही—रे खीची, ऊभो रह, पाबू मारने कठे जाईस। तद खीचो सोस[6] कियो। कही—राज, पाबूजी तो धणले पाछा फिरिया, थे लड़ो मतो जोणे। पण बूडो मानै नहीं। तठे लड़ाई हुई। बूडोजी काम आया। ताहरां खीची आपरे लोकांनूं कही जू आज आपां पाबू मारियो नहीं तो पछे आपांने नहीं छोडेलो, मारो। ताहरां, जींदराव कुड़ल[7] पण पंमे धोरंधारनूं कह्यो जू मे

1 धोरी, जो चांदे के यहां बराती होकर आये थे। 2 गूजवा नामका कुँआ। 3 घेरा लाया (गाय-बैलोंको)। 4 पिला। 5 प्रेम। 6 आवाज। 7 पंमेकी राजधानी।

राठोड़ छै, थारी धरती दबाँवता-दबाँवता सरव राज लेसी अर जो आवै तो आज दाव छै, पाबूनूँ मारो। ताहरां पँमो पण चढियो। अै मेला हुयनै पावूजी ऊपर आया। तठे पाबूजी गायां पायनै छोडी छै। इतरै खेह दीठी। कही—रे चाँदा, आ खेह केरी ? तद चाँदै कही— राज, खीची आयो। अर पहलड़ो लड़ाई मांहे चाँदे खीचीनूँ तरवार वाही हंती। तद पाबूजी तरवार आपड़ लीवी। कही—मारो मती, बाई रांड हुसी। तद चाँदै कही—राज, आप तरवार आपड़ी सू बुरो कीवो, अै छोडै (?) छै, मराया भला। पण पाबूजी मारण दिया नहीं। तठे फोज आई। तद चाँदै कही—राज, जो मारियो हुवै होत तो पाप कटियो हुत, हरामखोर आयो। तठे पाबूजी तो बुहा[1] ने लड़ाई कीवी। बडो रिठ वाजियो[2]। तेसूँ पाबूजी काम आया। सात-बीस अहेड़ी हंता सु सरव काम आया। खीची तो लड़ाई करने आपरे घरे गयो अर पाबूजीरे सोढी सती हुई। अर डोड-गहेलोरे सात मासरो गरभ सू आ सती हुई तद लोकां कही—थारे पेट मांहे बेटो छै सू सती मती हुवो। ताहरां डोडगहेली छुरी लेनै पेट फाड़नै[3] मांहे बेटो काढियो अर धायनूँ दियो। कही—इयेनूँ पालं, ओ वडो देवनीक[4] मरद हुसी। तठे नांव झरड़ो दियो। पछे झरड़ो बरस बारहरो हुवो। ताहरां झरड़े काके-बापरो वैर लियो, जींदराव खीचीनूँ मारियो। तिको झरड़ो अजे जीवै छै। तेनूँ गोरखनाथजी मिलिया।

---

१ चले। २ घोर युद्ध हुआ। ३ काटकर। ४ देव-तुल्य।

टिप्पणियाँ
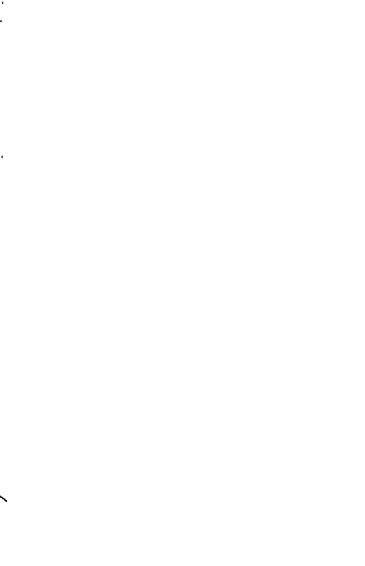
(१) जगदेव पँवार

(१) प्राचीन काल में परमार जाति के राजपूत बड़े प्रतापी हुए। सिंध से लेकर मालवा तक का विस्तृत देश उनके अधिकार में था। उनके बड़े भारी प्रताप और महान् साम्राज्य के कारण ही यह कहावत प्रसिद्ध हो गई कि—

पिरथी-तणा पँवार, पिरथी परमारौं-तणी।
एक उजीणी धार, बीजो आबू बैसणो॥

उस समय परमारों के दो राज्य थे। पश्चिमी अर्थात् राजस्थानी राज्य की राजधानी आबू में थी और पूर्वी अर्थात् मालवीय राज्य की राजधानी धारा।

(२) राजस्थान के प्राचीन इतिहास-ग्रंथों, ख्यातों और कविपरंपरा में अणहिलवाड़ पाटण के राजा सिद्धराज सोलंकी जयसिंह और जगदेव पँवार की बात प्रसिद्ध है। नैणसी की राजस्थान की ख्यात में सोलंकियों की वंशावली दी हुई है। वहाँ लिखा है कि सं० १०१७ विक्रमी में मूलराज सोलंकी ने चावड़ों से पाटण का राज्य छीन लिया और ५५ बरस तक राज्य किया। इसके बाद ४० बरस तक उसके दो उत्तराधिकारियों ने राज्य को अपने बाहुबल से खूब बढ़ाया। सिद्धराज जयसिंह देव विक्रमी संवत् ११५० में

पाट बैठा और उसने ४६ वर्ष तक राज्य किया। इसने अपने समय में रुद्रमाल का प्रसिद्ध शिवालय बनाया था जिसको बादशाह अलाउद्दीन ने गुजरात-विध्वंस के समय नष्टभ्रष्ट कर दिया था। सरस्वती नदी के तट पर माधव का प्राचीन मंदिर और सिद्धपुर नामक छोटा सा नगर भी इसी राजा ने बनवाया था। लगभग २२५ वर्षों तक सोलंकियों का राज्य पाटण में रहा। बाद में सं० १२६३ में वहाँ सोलंकियों की दूसरी प्रबल शाखा बघेलों का अधिकार हो गया। सोलंकियों के राज्य का विवरण ख्यात में इस प्रकार दिया है—

कवित्त—

मूलू पैंताळीस, वरस दस कियो चन्दगिर।
वलभ अढाई वरस, साढ बारह द्रोणागिर॥
भीम वरस चाळीस, वरस चाळीस करणगह।
एक घाट पंचास, राज जयसिंह वरणह॥
कुंवरपाल तीस त्रिहुं, आगल वरस तीन मुलराजंह।
विलसी भीम सत्तर सहरस वरस साठ अगलीक वह॥

(३) जगदेव पंवार के सम्बन्ध में नैणसी की ख्यात में परमारों की एक वंशावली में लिखा है कि उदंबंध (बंद) अथवा उदयादित्य नामक पंवार के दो पुत्र रणधवल और जयदेव (जगदेव) हुए जिनमें रणधवल तो राजधानी (धार) में राज्य करता रहा और जगदेव ने सिद्धराव सोलंकी की चाकरी ग्रहण की और कंकाली (देवी) को अपना मस्तक दिया।

(४) उदयादित्य प्रसिद्ध दानवीर भोज के उत्तराधिकारी जयसिंह के पीछे मालवे का अधीश्वर हुआ। उसका शासनकाल शिलालेखों से ११११६ से ११४३ वि० सं० तक ठहरता है। संभव है उसने और आगे तक राज्य किया हो। शिलालेखों के अनुसार उसके दो पुत्र थे—(१) लक्ष्मदेव, और (२) नरवर्मा। जगदेव का उल्लेख नहीं मिलता। उदयादित्य प्रतापी राजा हुआ है। उसका मांडू के सुलतान के अधीन होने की कथा भाटों की कल्पनामात्र है। जगदेव का उल्लेख मालव-नरेश अर्जुन वर्मा ने अपना पूर्वज कहकर किया है जिससे उसका ऐतिहासिक व्यक्ति होना सिद्ध है। भाटों में और जनता में जगदेव का नाम बहुत प्रसिद्ध है।

---

(२) जगमाल मालावत

(१) मारवाड़ र ज्य को स्थापित करने वाले राठोड़ राव सीहोजी की आठवीं पीढ़ी में राव सलखोजी बड़े प्रतापी क्षत्रिय हुए। उनके पुत्र राव मल्लीनाथजी हुए जो अपनी वीरता और धर्मनिष्ठा के कारण राजस्थान में देवता की तरह पूजे जाते हैं। जोधपुर राज्य की प्राचीन राजधानी मंडोर में राव मल्लीनाथजी की विशाल मूर्ति अब भी विद्यमान है। इन्हीं राव मल्लीनाथजी के पीछे जोधपुर राज्य का दक्षिण-पश्चिमी भूभाग 'मालाणी' कहलाया जो मारवाड़ राज्य की सीमा पर स्थित है और जिसका मुख्य नगर बाड़मेर है।

त्यौहार के अवसर पर गाया जाने वाला 'घुड़लो' गीत है। कहते हैं कि सं० १५४८ विक्रमी चैत्र कृ० १ शुक्रवार के दिन मारवाड़ के गाँव कोसाणों (पीपाड़ के पास) की बहुत सी क्षत्रिय कन्याएँ बस्ती से बाहर तालाब पर गौरी की पूजा के लिए गई थीं। उनमें से १४० को अजमेर का मुसलमान सूबेदार मल्लूखाँ पकड़ ले गया। यह खबर पाते ही मारवाड़ के राव सातलजी राठौड़ ने चढ़ाई की और उन कन्याओं को लौटा लाये। साथ में मुसलमान अमीर उमरावों की कई कन्याएँ भी ले आए जिनमें एक घुड़लाखाँ सेनापति की कन्या भी थी। इस युद्ध में घुड़लाखाँ का सिर रावजी के सेनापति सारंगजी खीची के तीरों से विंध गया था। इस छिदे हुए सिर को खीची सरदार ने प्रतिकार के रूप में उन तीजणियों को भेंट किया। आज भी इस घटना के स्मारक-स्वरूप गणगौर त्यौहार के दिनों में सन्ध्या के समय कुमारी कन्याएँ अनेक छिद्रवाला घड़ा सिर पर लेकर और उसमें दीपक रखकर कुटुम्बियों के घरों में घूमती हैं। चैत्र शु० ३ को इस घुड़ले का सिर तलवार से छेदा जाता है, क्योंकि इसी दिन घुड़लाखाँ का शिरच्छेद हुआ था।

---

(३) वीरमदे सोनगरा

'नवकोटा' मारवाड़ के राज्य में जालोर का परगना प्राचीन काल से वीरभूमि की तरह राजस्थान में प्रतिष्ठित रहा है।

दुर्ग के पूर्व की ओर एक मील पर अर्वली पर्वतमाला से

निकलने वाली शूकरी नामक बरसाती नदी बहती है। जालोर परगने के अन्तर्गत इस नदी द्वारा सींची हुई ३६० गाँवों की उर्वरा भूमि पड़ती है। पहले यह किला पँवार राजपूतों के अधिकार में था। परन्तु १३ वीं शताब्दि में चौहान राव कीर्त्तिपाल ने उसे पँवारों से छीन लिया। तबसे कई शताब्दियों तक चौहानों की एक शाखा सोनगरा—राजपूतों के अधिकार में यह दुर्ग रहा। इन्हीं सोनगरों के राव कान्हड़दे के राजत्वकाल में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने इस किले पर आक्रमण किया। अलाउद्दीन जैसे प्रबल शत्रु के विरुद्ध चौहानों ने १२ वर्ष तक इसकी वीरता के साथ रक्षा की और अन्त में आपस के वैमनस्य के कारण यह किला विक्रम संवत १३६८ वैसाख शु० ५ बुधवार के दिन अलाउद्दीन के हाथ में चला गया।

विक्रमी सं० १३३६ से १३५४ के बीच में जालोर में रावल सामन्तसिंह राज्य करता था। उसके कान्हड़दे और मालदेव नामक दो पुत्र हुए। पिता के बाद ज्येष्ठ कुमार कान्हड़दे जालोर की राजगद्दी पर बैठा। इसी कान्हड़दे का परम प्रतापी वीरपुत्र वीरमदे हुआ।

---

(४) कह्वाट सरवहियो

(१) सरवहिया या संखरिया सोलंकी राजपूतों की १६ शाखाओं में से शाखा है (टाड)।

---

(६) जैतसी ऊदावत

जोधपुर राज्य के बसाने वाले राव जोधाजी राठोड़ राजस्थान में बड़े पराक्रमी राजा हो गये हैं। इनका जन्म सं० १४८४ के वैसाख में हुआ। संवत् १५१५ में इन्होंने जोधपुर नगर बसाया। राव जोधाजी की ७ रानियों से १५ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें सातलजी अपने पिता की मृत्यु होने पर संवत् १५४५ में जोधपुर की गद्दी पर बैठे। तीन वर्ष के बाद इनकी मृत्यु होगई और राव सूजाजी सिंहासनासीन हुए। इन्होंने २८ वर्ष तक राज्य किया।

राव जोधाजी के पुत्रों में सभी बड़े उत्साही और पराक्रमी वीर हुए। इन्होंने मारवाड़ राज्य को खूब विस्तृत किया और अच्छे २ नगर बसाये। कुंवर दूदाजी ने प्रसिद्ध नगर मेड़ता बसाया। इन्हींके वंशधर राठोड़ वीर जयमलने बड़ी वीरता के साथ चित्तौड़ की अकबर के विरुद्ध रक्षा की थी। कुंवर करमसिंह और रायपाल ने खींवसर, सांवतसिंह ने डाबरा और भारमल ने बिलाड़ा बसाया। कुंवर बीकाजी ने बीकानेर राज्य की स्थापना की। कुंवर बीदाजी ने बीदासर बसाया।

इस कहानी के प्रारम्भिक भाग में प्रस्तावना के रूप में राव सूजाजी से पहले के मारवाड़ के राजाओं का वृत्तान्त दिया हुआ है जो कहानी में विशेष महत्व नहीं रखता, परन्तु ऐतिहासिक विज्ञप्ति की तरह पाठकों को रुचिकर हो सकता है। अतएव उस अंश को यहां पर अविकल उद्धृत कर देते हैं—

राव जोधा भार्या हुलणी॰ जमनादे—पुत्र, जोगा १, भारमल २, कुम्भकन ३। जोधा भार्या दूजी हाडी जसमादे—पुत्र,नींवा १, सूजा २, सातल ३। तीजी राव जोधा भार्या भटियाणी—पुत्र, वरणवीर १, करमसी २, रायपाल ३। चोथी राणी राव जोधा भार्या सांखली नवरंगदे—पुत्र, बीका १, बीदा २। पांचमी राव जोधा भार्या देवड़ी सूरवदे—पुत्र, सावतसी १। राव जोधा भार्या छठी बाघेली मेघलदे पुत्र—सिवराज १। राव जोधा भार्या सातमी सोनगरी चांपां—पुत्र, दूदा १, वरसिंघ २। सू राव जोधैजीरे पाट सूजोजी बैठा। संवत् १५४५ राव जोधोजी देवगत हुवा ने सूजोजी पाट बैठा। संवत १५१६ चैत्र सुदि ६। वरसिंह १ दूदेजी मेड़ता वसायो। दूदैजी मेड़तै राज कीयो। पछै संवत् १५२२ मिती वैसाख सुदि ३ दूदासर खोदायो। करमसी रायपाल खीवसर वसायो। सिवराज घूनाड़ो वसायो। राव जोधा पुत्र सांवतसी तिण डांवरो वसायो। भारमल बोलाड़ो वसायो। संवत् १५४५ मिती वैसाख सुदि १ शनिवार बीकैजी बीकानेर वसाई। संवत १५४५ बीकै कोटरी नींव दोनी। पहिली जांगलू गांव रेहता, पछै संवत् १५६८ बीदै बीदासर वसायो। सातल वरस ३ पछै जोधाजी रै टीकै बैठो। पछै सूजोजी पाट बैठा। तिण सातल नडो घण ले छै। संवत् १५१७ चैत्र मांहि राव जोधैजी वरसिंह दूदाजी नै देसोटो दीयो। तिको देवड़ीजी समेता गांव गगडाणारै तलाव सेमकवालो छुडायो। तिण समै गगडांणा मांहि जैनमठ रावत ऊदो रहै।

॰ वंशीय क्षत्रियों की शाखा 'हुल'—उसकी कन्या।

तिण वरसिंघ दूदाने पणो मोहनव[1] दे कोटड़ी माहे राखिया । तिण समें लखमण गहलोत कूचोरे राज करै। तिणरै ऐराकण घोड़ियाँ तिको वरसी ने नरसिंघ सींधल जैतारण राज करै। तरै लखमण गहलोत बछेरा २ ऐराकी नरसिंघ सींदा सिंघलरे निजर मेलिया । तिके गगडांणा माहे होयने जाता था। तरै रावत ऊदै घोड़ा खोस[2] लीया। तिण ऊपरै लखमण गेहलोत ने सींदो सींधल चाढने आया। तरै वडी लडाई हुई। सींदो लखमण न्हाठा[3]। वरसिंघ दूदैजी हाथ दिखाया। पछै भैंसियां गगडांणारी ऊरी[4] थी तिके वेमणारी मंगी[5] म्हाहा[6] माहे पाणी देख बैस रही। तरै सारो साथ खोमणने[7] चढिया। तरै वरसिंघजी दूदोजी घोड़े चढिया वेमपे लाधी[8]। तिके लेने गगडांणे गया। तरै वरसिंघजी दूदैजी रावत ऊदाने कह्यो जे थे कहो तो वेमणा तीरै[9] वास अेक वसीने वसावां। तरै जोसी तेड़ने मोहरत पूछियो ने कह्यो, अठे आगे मांनधातारो वसायो मेड़तो छै, तिको मोटो सहिर थो। एकै दिन अलीतनै[10] संतायो तिणरा सरापसूं ऊजड़ हुवो छै, तिको वसावो। तिको वने गांव धोलेराव छे। तठे मेरां[11] रो थांणो रहे छै। तिको मेराने दाल[12] देताने रहता। इतरो सुण,मेरांसूं वनगाव कीनो,-थांरै पाडोस राव जोधाजीरा बेटा वरसिंघ ने दूदो थांहरो पाड़ोस वसे छै, थांहरा कांमने तयार छै। मेरां परमांण कीनों। मेड़तो वसियो। पछै मेर जोरावर देखिने वेसासिया[13]।

---

१ मुहब्बत, इज्जत। २ छीन लिया। ३ भाग गये। ४ निकली थी। ५ कीचड़,धनी। ६ दरख्तों। ७ खोजने। ८ पाई। ९ के पास। १० योगी को। ११ मारवाड़ की एक जंगली जाति। १२ कर, दातव्य। १३ विश्वास किया।

...क[1] करिनै मेरांनै मारिया। तिकै अठारै-वीसो मेर मारिया। तठै ...गोठ करी। तिणै समीयैरो कवित्त—

गगडांणो वासीयो लासां[2] घोड़ा सेवांरे।
घोलेराव विधुंस मेर वीसी अठांरे॥
आल[3] भयंकर आप घाव वैरयां सिर घतै[4]।
मोजावाद मचकोड[5] थाप[6] दूदो मेड़तै॥
लसमयो मांज घोड़ा लिया सींदो रिण भुय खेसियो[7]।
वैजल पाटंवरां आमरण ऊदो अरि आदेसियो॥
इतरो मेड़तारो समीयो[8]।

(७) पावूजी

(१) पावूजी राजस्थान के एक प्रसिद्ध राठौड़ वीर हो गये हैं जो अपनी वीरता और सात्विक आचरण के लिए इस देश की जनता में देवता की तरह पूजे जाते हैं। इन्होंने गायों और अनाश्रितों की रक्षा में अपने प्राण दिये थे और अनेक कठोर प्रतिज्ञाओं का पालन किया था। इनके वीरता के कार्य राजस्थान में "पावूजीरा परवाड़ा" नाम से चारण-भाट और ग्राम्य गायकों में प्रसिद्ध हैं और गांव-गांव में गाये जाते हैं। इनके नाम पर अनेक सार्वजनिक मेले लगते हैं। जगह-जगह पर इनके मन्दिर बने हुए हैं जहां इनकी पूजा होती

---

१ कपट। २ घोड़ोंकी पंक्ति। ३ युद्ध। ४ मारे। ५ नष्ट करके।
६ स्थापित करके। ७ भगादिया। ८ इतिहास।

होती है। ग्रामीण जनता में इनके प्रति अनन्य भक्ति देखी जाती है।

(२) पाबूजी के प्राणोत्सर्ग की कथा एक दूसरे रूप में भी प्रचलित है जो नीचे दी जाती है—

[पाबूजीरी वात बीजी]

नागोर कने जायल नाँव गाँव। तठे जींदराव खीची राज करै। देवलजी नाँव चारणी पण उठै रहै। सु अे देवलजी देवीरो अवतार। देवलजी पासे कालमी नाँव अेक घोड़ी हंती सु घणी फूटरी[1] अर देवतोक[2] हंती। सारी बात समझती। सु आ घोड़ी देवलजी पासे जींदराव माँगी पण देवलजी नै दीवी। तेसूँ जींदराव घणी रीस कीवी। दुख पायो। और देवलजीनूँ सँतावण लागो। ताहराँ देवलजी आपरा धण सरण लेयने पाबूजी पासे आय रह्या। तठे पाबूजी घोड़ीरो वखाण घणो साँभलियो। देवलजी पासे घोड़ी माँगी। ताहराँ देवलजी कही—घोड़ी थाँनूँ देसाँ पण म्हारे धणरी रुखाली थानूँ करणी पड़सी। ताहराँ पाबूजी बोल कियो। कही—थाँरै काम पड़ियाँ म्हे जूतो पण पहराँ नहीं। अो बोल कर घोड़ी लीवी।

तठे आ बात जींदराव साँभली जु चारणी घोड़ी पाबूजीनूँ दीवी। ताहराँ घणी रीस करी। देवलजीरो धण छै आवणनूँ घणी कोसीस करै पण पाबूजी थकाँ जोर काँई चालै नहीं।

तठे ऊमरकोटमें सोढा राज करै। इयाँरै अेक राजकँवरी। कँवरी पाबूजीरो घणो वखाण साँभलियो। ताहराँ विचारी—वर

---

१ सुन्दर। २ देव-प्रतीक।

मिलै तो पावूजी जिसो। तादरां कँवरी आपरी माँने कही—मनै परणावो तो पावूजीनूं हीज। इयै आपरे मांटीनूं कह्यो। तादरां सोढ़े आपरा आदमी सगाई करणनूं मेल्हिया। सू अै पावूजी कनै आया। ता'रां पावूजी कही—मैं म्हारो माथो देवलजीरे धणरी रुखाली खातर दियो छै सू कुण जाणे कद काम आऊँ। तेसूं हूं विवाह करूँ नहीं, थे कँवरीरो विवाह दूजी जायगां करो। तठै आदमी पाछा ऊमरकोट आया। समाचार सरब सोढ़ेनूं कह्या। तादरां सोढ़ी कह्यो—हूँ परणूं तो पावूजीनूं हीज। तठै सोढ़े आदमी भलै मेलिया। आदमियां जायनै पावूजीनूं हकीकत सरब कही अर सगाई करनै पाछा फिरिया।

पछै सोढ़ां सावो लिख मेल्हियो। कही—जान कर वेगा आवज्यो। तादरां पावूजी देवलजी पासै गया। कही—सोढ़ी हठ पकड़यो छै सू आज्ञा होय तो ऊमरकोट जाऊँ। तादरां देवलजी कही—राज, भलां ही पधारो, लारैसूं जींदराव धणनूं घेरसी तो काल्मी आपनूं कहसी, तठै थे एक खिणरी पण देर मती करीज्यो। इण भाँतसूं आज्ञा लेयनै पावूजी फिरिया अर जानरी तयारी करी। पछै जान चढ़ी सू ऊमरकोट दिन दोय में जाय पूगी। सोढ़ां घणी भगत कीवी अर भली भाँतसूं विवाह कियो। बींद अर बींदणी चँवरीमें बैठा। फेरा हुवण लगा। इतरामें पावूजीरी घोड़ी काल्मी हींस मार उठी, सू पावूजी तो झट हथलेवो छोड़नै चँवरी माँहे ऊभा हुवा अर तुरन्त
री पीठ आया।

फिर।

तठे सोढी कही—राज, म्हांमें चूक किसी सू इण भांतसूं हालिया। तठे पाबूजी बोलिया। कही—राज, चूक काईं नहीं, पण म्हां बोल दियो छै, आगे आ घोड़ी चारणां पासे हती सू जींदराव खीची मांगी पण चारणां नै दीवी अर घणां सरदारां मांगी पण नै दीवी, पछे मने दीवी अर कही—राज, घोड़ी थांनूं देवां छां सु म्हांरे कामरे खातर थांनूं माथो देणो पड़सी। जद में बोल कर घोड़ी चारणां पासे लीवी अर आज चारणां माथे संकट पड़ियो छै सु म्हे अबे ठहरां नहीं। इणरो कहने पाबूजी हालिया।

अठे पाबूजी ऊमरकोट परणणनूं गया ताहरां जींदराव खीची विचारी जू चारणांसूं बदलो लेवणरो मोको हणे' छै। ताहरां जींदराव जायलसूं निसरियो अर धांधलें आयो। देवलजीरो धण रोहीमें चरतो हतो सू घेरियो अर लेने हालिया। तठे गोरी देवलजी पास जायनै पुकारियो। कही जू जींदराव खीची धण सरब लियां जावे छै, ताहरां देवलजी पाबूजीनूं याद किया अर ऊमरकोट में कालमी हींस मारी। ताहरां पाबूजी ऊमरकोटसूं हाल-अर' कोलू आया अर जींदराव ऊपर चढिया। जींदराव धण लेयनै चालियो जावे छै। इतरामें पाबूजी औचक आयनै पड़िया अर धण सरब घेरनै पाछा फिरिया। पग

मिलै तो पाबूजी जिसो। तादरौ कँवरी आपरी माँनै कही—मनै परणावो तो पाबूजीनूं हीज। इयै आपरै मोटीनूं कही। तादरौ सोढै आपरा आदमी सगाई करणनूं मेल्हिया। सू अै पाबूजी कनै आया। ता'रौ पाबूजी कही—मैं म्हारो माथो देवलजीरै धणरी रुखाळी खातर दियो छै सू कुण जाणे कद काम आऊँ। तेसूं हूं विवाह करूं नहीं, थे कंवरीरो विवाह दूजी जायगा करो। तठै आदमी पाछा ऊमरकोट आया। समाचार सरब सोढैनूं कह्या। तादरौ सोढी कह्यो—हूं परणूं तो पाबूजीनूं हीज। तठै सोढै आदमी भळे[1] मेजिया। आदमियां जायनै पाबूजीनूं हकीकत सरब कही अर सगाई करनै पाछा फिरिया।

पछै सोढां सात्रो लिख मेल्हियो। कहो—जान कर वेगा आवज्यो। तादरौ पाबूजी देवलजी पासे गया। कही—सोढी हठ पकड़ियो छै सू आज्ञा होय तो ऊमरकोट जाऊँ। तादरौ देवलजी कही—राज, भलां ही पधारो, लारेसूं जींदराव धणनूं घेरसी तो काळमी आपनूं करसी, तठै थे एक खिणरी पण देर मती करीज्यो। इण भांतसूं आज्ञा लेयनै पाबूजी फिरिया अर जानरी तयारी करी। पछै जान चढी सू ऊमरकोट दिन दोय में जाय पूगी। सोढां घणी भगत कीवी अर भली भांतसूं विवाह कियो। बींद अर बींदणी चंवरीमें बैठा। फेरा हुवण लगा। इतरामें पाबूजीरी घोड़ी काळमी हींस मार उठी, सू पाबूजी तो झट हथलेवो छोडनै चंवरी मांहे ऊभा हुआ अर तुरन्त काळमीरी पीठ आया।

---

1 फिर।

(२)

हुवे मंगल़ धवल़ दमंगल़ वीर हक,
रँग तूठो कमध अंग रूठो ।
सघण वूठो कुसुम शोह जिण मोड़ सिर,
विखम उण मोड़ सिर लोह वूठो ॥[1]

(३)

करण भतियात चढियो मर्ला काल़मी,
निबाहण वयण भुज बाँधिया नेत ।
पँवारों सदन वर-माल़सूँ पूजियो,
खलाँ किरमाल़सूँ पूजियो खेत ॥[2]

१—इधर चारों ओर धवल मंगल (विवाहसम्बन्धी मंगल
हो रहे। उधर युद्ध में वीरों का कोलाहल और युद्ध सम्बन्धी मार
हो रहे हैं। राठौड़ वीर पाबू इधर विवाहमंडप में प्रेम से उल्लसित
उधर युद्ध में क्रोध से क्षुब्ध हुआ। विवाह के समय जिस मुकुट
सिर पर कुसुमों की सघन वर्षा हुई थी उसी मुकुट-शोभित शीश प
में लोहे की विषम वर्षा हुई।

२—पाबूजी अपना वचन प्रख्यात करने को मोड़ बाँधी कालि
चढ़े, वचन निबाहने के लिए, नेत्रों को रक्तलोहित किये हुए और
सन्नद्ध किये हुए। जो मस्तक पँवारों के घर में वरमाला से पू
वही रणक्षेत्र में शत्रुओं द्वारा तलवार से पूजा गया।

पाबूजी के विषय में अनेक गीत प्रसिद्ध हैं जिनमें से एकाध के कुछ अंश नीचे दिये जाते हैं—

(१) गीत पहलड़ो

नेह निज रीझरी बात चित्त ना धरी,
प्रेम गवरी-तणो नाँहि पायो ।
राजकँवरी जिका चढी चँवरी रही,
आप भँवरी-तणी पीठ आयो ॥[1]

(२) गीत दूजो

(१)

प्रथम नेह भीनो, महा क्रोध भीनो पछे,
लाभ चँवरी समर झोक लागे ।
राम-कँवरी वरी जेण धागे रसिक,
वरी घड़ कँवारी तेण धागे ॥[2]

१—गीत का अनुवाद—अपनी रीझ के स्नेह पर तनिक भी चित्त न दिया, गोरी (अपनी ब्याही हुई स्त्री) का प्रेम भी नहीं पाया । राजकुमारी चौंरी (विवाह-मंडप) में चढ़ी रही और स्वयं काली घोड़ी (कालिमी) की पीठ पर सवार होकर चल पड़ा ।

२—पाबूजी पहले तो प्रेम से सिंचित हुआ, बाद में महाक्रोध से । चौंरी (विवाह-मंडप) का लाभ समर के आक्रमणों में पाया । रसिकवाने जिस छुमकित वेष से राजकुमारी को वरा, उसी वेष से शत्रु की कुँवारी (अप्रतिहत) सेना का वरण किया (परास्त किया) ।

(२)

हुवे मंगल़ धवल़ दमंगल़ वीर हक,
रँग वूठो कलध अंग रूठो ।
सघण वूठो कुसुम घोह जिण मोड़ सिर,
विखम उण मोड़ सिर लोह वूठो ॥[१]

(३)

करण ख्रतियात चढियो भलां कालमी,
निबाहण वयण भुज बांधिया नेत ।
पँवारौं सदन घर-माल़सूँ पूजियो,
खलाँ किरमाल़सूँ पूजियो खेत ॥[२]

१—इधर चारों ओर धवल मंगल (विवाहसम्बन्धी मंगल
हो रहे। उधर युद्ध में वीरों का कोलाहल और युद्ध सम्बन्धी मा
हो रहे हैं। राठोड़ वीर पाबू इधर विवाहमंडप में प्रेम से उल्लसित
उधर युद्ध में क्रोध से क्षुब्ध हुआ। विवाह के समय जिस मुकुट
सिर पर कुसुमों की सघन वर्षा हुई थी उसी मुकुट-शोभित शीश
में लोहे की विखम वर्षा हुई।

२—पाबूजी अपना यश प्रख्यात करने को भोड़ घोड़ी कालि
चढ़े, वचन निबाहने के लिए, मित्रों को सम्मोहित किये हुए और
सन्नद्ध किये हुए। जो मस्तक पँवारों के घर में वरमाला से पू
वही रणक्षेत्र में शत्रुओं द्वारा तलवार से पूजा गया।

(४)

सूर वाहर चढे चारणाँ–सुरहरी,
इतै जस जितै गिरनार–आबू ।
मिहँड खल खीचियाँ–तणा दल विभाड़े,
पोढियो सेज रण–मोम पाबू ।[1]

१—चारणों की गायों की रक्षा के लिए शूरवीर पाबूजी रक्षार्थ चढ़े। उनका यश तब तक रहेगा जब तक आबू और गिरनार पर्वत अटल रहेंगे। दुष्ट खीची-क्षत्रियों के दल को नष्ट-भ्रष्ट करके वीर पाबू रणभूमिरूपी शय्या पर सदा के लिए सो गया।

(४)

सूर पाबू चढ़े चारणाँ–सुरह्याँ,
हो जस जिते गिरनार–आबू।
खिंडे खल खीचियाँ–तणा दल खिनाड़े,
पोढ़ियो सेज रण–भोम पाबू।[1]

१—चारणों की गायों की रक्षा के लिए शूरवीर पाबूजी रक्षार्थ चढ़े। उनका यश तब तक रहेगा जब तक आबू और गिरनार पर्वत अटल रहेंगे। दुष्ट खीची-क्षत्रियों के दल को नष्ट-भ्रष्ट करके वीर पाबू रणभूमिरूपी शय्या पर सदा के लिए सो गया।